# स्वावलंबन की ओर

## (कहानी संग्रह)

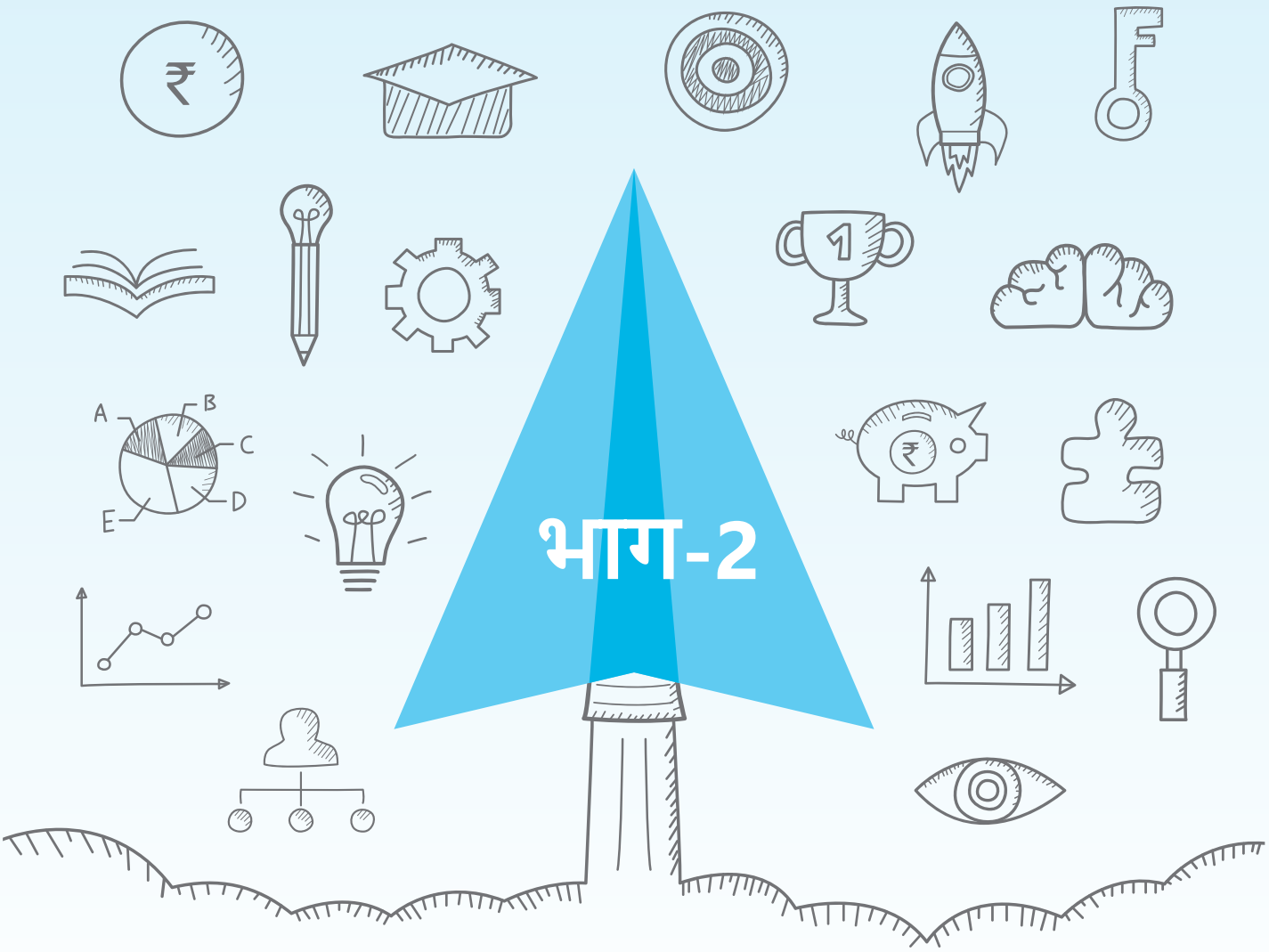


उद्यमी लभते सिद्धिम्
niesbud

**राष्ट्रीय उद्यमिता एवम लघु व्यवसाय विकास संस्थान**

(उद्यमिता एवम कौशल विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

# स्वावलम्बन की ओर – भाग 2

राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) द्वारा
आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के तहत प्रशिक्षण प्राप्त कर
उद्यम स्थापित करने वाले पचास (50) प्रतिभागियों के
उद्यमी बनने के सफर/संघर्ष का द्वितीय सस्करण।


परिकल्पना

**श्री राजेश अग्रवाल**

महानिदेशक, निसबड

सामाग्री संकलन एवम् लेखन

**डा0 पूनम सिन्हा**

निदेशक, निसबड

एवं

**श्री अरूण बहादुर चन्द**

मुख्य परामर्शदाता, निसबड

सहयोग

श्री यशपाल सिंह रावत

कार्यक्रम समन्वयक, निसबड



द्वितीय संस्करण–2019

उद्यमी लभते सिद्धिम्
niesbud

प्रकाशक:

**राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड)**

(कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय, भारत सरकार)

क्षेत्रीय कार्यालय: एन0एस0टी0आई परिसर, ग्रीन पार्क कालोनी, निरंजनपुर, देहरादून

फोन नं– 0135– 2629802, फैक्स नं– 0135–2629802

ईमेल– roniesbud@gmail.com वेबसाईट – niesbudro.org

डॉ० महेन्द्र नाथ पाण्डेय
Dr. Mahendra Nath Pandey

मंत्री
कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय
भारत सरकार
Minister
Ministry of Skill Development & Entrepreneurship
Government of India

दिनांक: 30 सितम्बर, 2019

## संदेश

मेरे लिए यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि हमारे राष्ट्रीय **उद्यमशीलता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निस्बड)** द्वारा समाज के सभी वर्गों के युवाओं में उद्यमशीलता और लघु व्यवसाय विकास के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए 'स्वावलंबन की ओर' नामक पत्रिका प्रकाशित करने की एक नई पहल की गई है और अब संस्थान द्वारा इस पत्रिका का **द्वितीय संस्करण** प्रकाशित किया जा रहा है।

यह और भी प्रसन्नता की बात है कि इस पत्रिका में संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त उद्यमी सोच वाले युवाओं की सफलता की गाथाएं संकलित की गई हैं। जैसा कि विदित है, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वर्ष 2024 तक भारत को 5 ट्रिलियन की अर्थ-व्यवस्था वाला देश बनाने का आह्वान किया है और इनके इस सपने को साकार करने में प्रशिक्षण प्राप्त युवा उद्यमियों की विशेष भूमिका रहेगी। इसलिए हमारे अन्य प्रशिक्षण संस्थानों के साथ-साथ निस्बड का दायित्व और भी बढ़ गया है। मैं समझता हूँ कि निस्बड द्वारा सफल युवा उद्यमियों की गाथाओं का यह संकलन देश के युवाओं में नई प्रेरणा का संचार करेगा और वे भारत को विश्व की कौशल राजधानी बनाने की दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

मैं इस शुभ अवसर पर **निस्बड** के महानिदेशक तथा अन्य सभी कर्मचारियों व अधिकारियों के साथ-साथ इस पत्रिका के प्रकाशक व संपादक-मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ और निस्बड की पत्रिका 'स्वावलम्बन की ओर' के द्वितीय संस्करण के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(डॉ0 महेन्द्र नाथ पाण्डेय)

Skill India

कमरा नं. ५१६, पंचम तल, 'ए' विंग श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली - ११०००१
Room No. 516 5th Floor, 'A' Wing, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-01 Tel.: 011-23465801 Fax : 011-23465825
निवास : फ्लैट न. 302, नर्मदा, डा. बी. डी. मार्ग, नई दिल्ली - 110001
Resi : Flat No. 302, Narmada Building, Dr. B.D. Marg, New Delhi-01 Tel. : 011-23714134, Fax : 011-23714135 Mob.: +91-9415023457

आर. के. सिंह
R. K. SINGH

सत्यमेव जयते

विद्युत एवं नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं
कौशल विकास और उद्यमशीलता राज्य मंत्री
भारत सरकार
Minister of State (Independent Charge)
for Power and New & Renewable Energy and
Minister of State in the Ministry of Skill Development
and Entrepreneurship
Government of India

# संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान देश में उद्यमिता विकास के लिए उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। संस्थान द्वारा प्रशिक्षित प्रतिभागी आज स्वरोजगार से जुड़कर स्वयं की आजीविका के साधन के साथ अन्य लोगों के रोजगार का साधन भी बने हैं। ऐसे पचास (50) प्रशिक्षणार्थियों की सफल गाथा के द्वितीय संस्करण 'स्वावलंबन की ओर भाग–2' के प्रकाशन पर मै संस्थान को बधाई देता हूँ।

भारत सरकार 'कौशल भारत कुशल भारत' के दृढ़ संकल्प के साथ माननीय प्रधानमंत्री जी के 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था के विजन को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध है। राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान सरकार के इस प्रयास को सार्थक करने के लिए कर्मठता से कार्य कर रहा है।

संस्थान का यह प्रयास भविष्य में भी अनवरत रूप से जारी रहे, ऐसी मैं कामना करता हूँ। मैं, पुनः संस्थान तथा संकलन में उल्लेखित सभी उद्यमियो को शुभकामनायें देता हूँ।

(आर. के. सिंह)

डॉ. के. पी. कृष्णन, आई ए एस
सचिव
*Dr. K. P. Krishnan*, IAS
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF SKILL DEVELOPMENT
AND ENTREPRENEURSHIP

# संदेश

कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय, भारत सरकार, कौशल विकास एवं उद्यमिता के माध्यम से देश में कार्य क्षेत्र और कार्यबल की वृद्धि के लिए निरंतर कार्यरत है और मुझे यह कहते हुए हर्ष होता है कि राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) मंत्रालय के अन्तर्गत उद्यमिता विकास के लिए सराहनीय कार्य करने वाले अग्रणी संस्थानों में से एक है। संस्थान द्वारा प्रशिक्षित युवाओं, महिलाओं और समाज के विभिन्न वर्गों से आने वाले लोगों द्वारा आज स्वयं की उद्यम स्थापना उन सभी के लिए प्रेरणा है जो भविष्य के प्रति आशंकित रहते हैं।

आज मुझे यह सन्देश लिखते हुए अति हर्ष हो रहा है कि राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) द्वारा "स्वावलंबन की ओर" भाग–2 पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है, मैं संस्थान को उनके प्रयास के लिए शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ और आशा करता हूँ कि देश के नागरिकों विशेषकर युवाओं, महिलाओं और समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को उद्यमी बनने हेतु तथा औरों को भी स्वरोजगार हेतु प्रोत्साहित कर निरंतर सफलता के पथ पर बढ़ाने के लिए यह सहायक होगी।

यह पुस्तक प्रशिक्षण और मार्गदर्शन से रोजगार से स्वरोजगार तक का सफर तय कराती है।

मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक उन युवाओं के लिए एक प्रेरणा होगी जो अपने जीवन को उद्यमिता के माध्यम से सुखद भविष्य की ओर अग्रसित करने का विचार रखते हैं। मैं पुनः संस्थान को शुभकामनाऐं देता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि उनका यह प्रयास भविष्य में भी जारी रहेगा।

(डॉ0 के0 पी0 कृष्णन)

कमरा नं. 524, पांचवा तल, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001

राजेश अग्रवाल आई ए एस
महानिदेशक

**Rajesh Aggarwal**, IAS
Director General

उद्यमी लभते सिद्धिम्
niesbud

## प्राक्कथन

राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) एक राष्ट्रीय संस्थान है, जो मुख्यतः प्रशिक्षण, अनुसंधान और परामर्श प्रदत्त कार्य करता है। संस्थान का मुख्य लक्ष्य समाज के आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े, वचितों, निर्वल वर्ग के साथ साथ युवाओं को प्रशिक्षण /परामर्श द्वारा स्वरोजगार/रोजगार से जोड़ना है, जो विकास की मुख्य धारा से परिस्थितिवश दूर है। भारत को एक स्वावलम्बी राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के लिये संस्थान कार्यरत है।

विगत वर्ष की भातिं इस वर्ष भी संस्थान कहानी संग्रह "स्वावलंबन की ओर" का द्वितीय संस्करण प्रकाशित कर रहा है। जिसमें विभिन्न परिवेश से आने वाले 50 युवाओं (पुरूष/महिला) की संघर्षरत सफलता गाथा है जिन्होने सीमित संसाधनों में संस्थान से प्राप्त मार्गदर्शन और प्रशिक्षण को आधार बनाकर अपने कौशल और परिश्रम से सफलता हासिल कर औरों के लिये मिसाल कायम की है। संस्थान का यह अनुकरणीय प्रयास संस्थान के लक्ष्यों को प्रदर्शित करता है। उक्त कहानी संग्रह के प्रकाशन पर मैं कार्यालय के सभी सहयोगियों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी यह प्रयास जारी रहेगा।

सभी के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ पुनः सभी को शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

राजेश अग्रवाल

(श्री राजेश अग्रवाल )
महानिदेशक, निसबड

# लेखकीय

भारत को वैश्विक औद्यौगिक केन्द्र के रुप में स्थापित करने के लिऐ सरकार द्वारा निरन्तर प्रयास किये जा रहे है। जिसके परिणाम स्वरुप आज भारत उद्यम संकुल क्षेत्र के तौर पर विश्वभर के निवेशकों के साथ साथ भारतीय युवाओं को लिऐ सुगम और सुखद भविष्यात्मक क्षेत्र के रुप में विकसित हो रहा है। संगठित प्रतिरूप पर आधारित आधुनिक औद्योगिक शुरूवात से लेकर आज तक भारत विश्व भर के लगभग सभी उत्पादों के लिए विनिर्माण की अपार संभावनाओं, उपभोक्ता और ग्राहकों की उपलब्धता से भरपूर क्षेत्र रहा है। जिस कारण यह स्वरोजगार-रोजगार की अपार सम्भावनाओं के रूप में स्वयं् को प्रदृष्टित करता है।

5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था के परिलक्षित लक्ष्य की दिशा में बढ़ रहे भारत का एक सच यह भी है कि संसाधनों की अनुउपलब्धता, आवश्यक जागरूकता और अवसर अभिज्ञान का बोध न होने के कारण आज युवा पीढ़ी का एक बड़ा हिस्सा असमंजस की स्थिति में आगे बढ़ रहा है। राष्ट्र की प्रगति को आर्थिक समृद्धि से अलग नही किया जा सकता है और आर्थिक समृद्धि को प्राप्त करने के लिये औद्योगिक विकास एक महत्वपूर्ण कारक है। आज के इस वैश्विक युग में तकनीक आधारित नवोत्कर्षों ने कौशल की परिभाषा को बदल कर रख दिया है। आज शैक्षिक योग्यता के साथ तकनीकी कौशल और उद्यमी विचारों की अधिक महत्ता है। सरकार के प्रयासों द्वारा हमारी शिक्षा व्यवस्था को उद्यमिता अभिप्रेरित पाठ्यक्रम के साथ साथ तकनीकी कौशलपरक बनांया जा रहा है।

राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय, भारत सरकार के अन्तर्गत स्वायत्त संस्थान के रूप में कार्य करने वाला एक राष्ट्रीय संस्थान है जो अनुसंधान, शोध एंव प्रशिक्षण के माध्यम से समाज के ऐसे वर्ग को जो कि परिस्थितिवश संसाधनों के अभाव में विकास की डगर से दूर अकुशल कर्मी के तौर पर अपना भविष्य तलाश रहे है ऐसे युवाओं को प्रशिक्षण के माध्यम से कुशल बनाकर अवसर को उपलब्धि में बदलने का हुनर सीखा कर इन्हें स्वालम्बी बनाने का कार्य करता है। प्रशिक्षण उपरान्त स्वरोजगार को अपनाकर उद्यम स्थापित करने वाले प्रशिक्षार्थियों के प्रयासों को ''स्वालम्बन की ओर'' के प्रकाशन के साथ विगत वर्ष प्रारंभ किया था। जिसका द्वितीय संस्करण ''स्वालम्बन की ओर'' भाग 2 के रुप में इस वर्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। इस पुस्तक में कुछ ऐसे ही उद्यमियों की कहानी का संकलन किया गया है, जिन्होंने निराशा, भविष्य के प्रति अस्पष्टता के भाव से बाहर निकल कर संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त कर न केवल स्वयं को अपितु अपने साथ अन्यों को भी रोजगार से जोड़कर सुखद वर्तमान और सुरक्षित कल प्रदान किया है। हमारा प्रयास है कि शून्य से

शिखर की ओर बढने वाले इन प्रशिक्षार्थियों के माध्यम से विशेषकर युवाओं को उद्यमिता से जोड़कर स्वरोजगार से जोड़ें और वैश्विक औधौगिक शक्ति के रुप में भारत को स्थापित करे।

पिछले वर्ष ''स्वालम्बन की ओर'' के प्रथम संस्करण को पाठको का असीम प्यार मिला जिसकी प्रेरणा से हम द्वितीय संस्करण ''स्वालम्बन की ओर'' भाग-2 प्रस्तुत कर रहे है। हमारा यह प्रयास सकारात्मकता, अवसर अभिज्ञान चयन, उपलब्ध अवसरों को सार्थक कर उपलब्धि में बदलने का है।

पुस्तक का लेखन एक यात्रा जैसा होता है, जिसमें संग्रह, शोध, डिजाईनिंग, लेखन, मुद्रण और प्रकाशन जैसे विविध आयाम होते है। यह माननीय मंत्री ( काबीना एंव राज्य ) महोदयों, सचिव महोदय का मार्गदर्शन और महानिदेशक महोदय का कुशल नेतृत्व का परिणाम है कि हम ''स्वालम्बन की ओर'' भाग-2 को स्वरुप प्रदान कर पाये। मैं माननीय मंत्री ( काबीना एंव राज्य ) महोदयों, सचिव महोदय और महानिदेशक महोदय का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। ''स्वालम्बन की ओर'' भाग-2 द्वितीय संस्करण को लिखने एवं संग्रह करने में सभी संस्थानिक सदस्यों का सराहनीय प्रयास रहा है विशेषकर अरुण बहादुर चन्द का विशेष सहयोग रहा है। मैं इस द्वितीय संस्करण के सफल प्रकाशन पर लेखन सहयोग हेतु यशपाल रावत के साथ सभी सहयोगियों का धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

एक बेहतर कल, उन्नत भारत की कामना के साथ सभी को प्रेरणा, संघर्ष एवं मार्गदर्शन से पूर्ण उद्यमी की सफल कहानी संग्रह ''स्वालम्बन की ओर'' भाग-2 को इस आशय से समर्पित करती हूँ कि यह आप सभी के भीतर नव्य उद्यमी विचारों को फलीभूत कर उन्हें यर्थात आकार देने में सहायक सिद्व होगी। इसी कामना के साथ पुनः सभी का आभार।

पी० सिन्हा

( डॉ0 पूनम सिन्हा )
निदेशक, निसबड
( मुख्य संकलनकर्ता एवं लेखिका )

# अनुक्रमणिका


| क्र. सं. | कहानी का नाम | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1 | उद्यमी की उड़ान | 1-2 |
| 2 | हिम्मत से सफलता तक | 3-4 |
| 3 | लगन और मेहनत से पूरे हुऐ सपने | 5-6 |
| 4 | सफलता की ओर अग्रसर | 7-8 |
| 5 | उद्यमेन ही सिद्धंन्ति | 9-10 |
| 6 | चक्र से शिखर तक | 11-12 |
| 7 | उद्यमेन कौशलम् | 13-14 |
| 8 | स्वाद से पाई सफलता की राह | 15 |
| 9 | कौशल से कुशलता | 16-17 |
| 10 | तकनीकी ने दिलाई पहचान | 18-19 |
| 11 | रूप सज्जा-जीवन सज्जा | 20 |
| 12 | व्योमिनी | 21-22 |
| 13 | सुई-धागा-एक पहचान | 23-24 |
| 14 | श्रृंगार से सजाया जीवन | 25-26 |
| 15 | डिजिटल पथ पर | 27-28 |
| 16 | फैशन बना पैशन | 29-30 |
| 17 | हुनर से रोजगार | 31-32 |
| 18 | सशक्तता से समृद्धि | 33-34 |
| 19 | हुनर से उगता एक नाम : जमाल | 35-36 |
| 20 | छत्रक | 37 |
| 21 | कामयाबी की ओर बढ़ते कदम | 38-39 |
| 22 | रूप निखार | 40-41 |
| 23 | निखरता रूप: संवरता भविष्य | 42-43 |
| 24 | स्वाद बना पहचान | 44-45 |
| 25 | वसनदंना | 46-47 |

| क्र. सं. | कहानी का नाम | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 26 | परिधान से परिणाम तक | 48-49 |
| 27 | परिधान से पहचान | 50-51 |
| 28 | स्वाद से बनी पहचान: सुभद्रा | 52-53 |
| 29 | निखरती पहचान: ज्योति | 54-55 |
| 30 | सौन्दर्य संसार की जगमग ज्योति | 56-57 |
| 31 | हुनर से बनी पहचान | 58-59 |
| 32 | श्रृंगार से संवरता जीवन | 60-61 |
| 33 | कौशल से कामयाबी की ओर | 62 |
| 34 | विद्युत ने जगाई आस | 63 |
| 35 | संवरती नारी : निखरता कल | 64-66 |
| 36 | निर्भर से आत्मनिर्भर : रूसा | 67-68 |
| 37 | प्रशिक्षण से बनी पहचान | 69-70 |
| 38 | परिधाम | 71-72 |
| 39 | आकार लेता उद्यम : साकार होते सपने | 73-74 |
| 40 | एक कहानी मेरी : शालिनी | 75-76 |
| 41 | संघर्ष और सामर्थ्य का समागम | 77-78 |
| 42 | आसमां अभी बाकी है | 79 |
| 43 | पलायन पर प्रहार | 80-81 |
| 44 | फैशन ने दिलाई नई राह | 82-83 |
| 45 | परिश्रम राह पर बढ़ते कदम | 84-85 |
| 46 | शून्य से शिखर तक | 86-87 |
| 47 | निर्भरता से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम | 88-89 |
| 48 | भिक्षावृत्ति पर प्रहार : हिना | 90-91 |
| 49 | हुनर, हौसला और नाज़िया | 92-93 |
| 50 | धागों से बुने सपने | 94-95 |

# उद्यमी की उड़ान

''जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ,
मैं बपुरा बूडन डरा, रहा किनारे बैठ।''
– कबीर दास

अर्थात जो लोग प्रयत्न करते हैं, वे कुछ न कुछ वैसे पा लेते हैं जैसे कोई मेहनत करने वाला गोताखोर गहरे पानी में जाता है और कुछ लेकर आता है। लेकिन कुछ लोग बेचारे ऐसे भी होते हैं जो डूबने के भय से किनारे पर ही बैठे रह जाते हैं और कुछ नहीं पाते।

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | श्री विकास सोनी | लागत | 10 लाख रूपए |
| दूरभाष | 9716441838 | टर्न-ओवर | 2.5 से 3 करोड़ रूपए |
| कार्य | राधे कृष्णा एक्सपोर्ट महालक्ष्मी इन्टरनेशनल | | |

जीवन में सफलता पाने के लिऐ बहुत सारी बातें जरूरी हैं लेकिन सबसे महत्वपूर्ण होता है उसका आत्मविश्वास। जीवन में किसी मुकाम पर पहुँच चुके व्यक्तियों और कामयाब लोगों में आपको यह काबिलियत दिखाई देगी और वह है कि वे आत्मविश्वास से भरे होते हैं।

एक ऊँची उड़ान भरने वाले एवं ऊँची सोच रखने वाले श्री विकास सोनी ने अपने सपने जिन्हें उन्होंने दिल और दिमाग में सजोए हुए थे, उन्हें यर्थात रुप देने का बेड़ा उठाया। बचपन से ही कुछ नया करने की ललक ने उन्हें अपने पिता श्री राजाराम प्रसाद के पैतृक कार्य ( सुनार ) असली पत्थर व नग लगाकर चाँदी व ब्रास से आभूशण बनाने में सहयोग देकर कार्य करना प्रारंभ किया।

नए विचारों से अवगत होना तथा निरन्तर प्रगति और श्रेष्ठता के लिए प्रयासित रहना उनके सहज गुण थे। पिता को अपने बेटे पर गर्व था कि उनका बेटा जब उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है, तो वह अवश्य, भविष्य में कुछ बेहतर करेगा। श्री

राजाराम प्रसाद ने अपने बेटे के उज्जवल भविष्य के लिए उच्च तकनीकी शिक्षा दिलाने का विचार बना लिया। कई तकनीकी संस्थानों में प्रशिक्षण दिलाने के उद्देश्य से सम्पर्क भी किया।

अपने बेटे का भविष्य बनाने में प्रयासरत रहते हुए एक दिन राजाराम प्रसाद दुर्घटना के शिकार हो गये और उस दुर्घटना में अपना एक हाथ गंवा बैठे। ऐसे समय में भी विकास सोनी ने हिम्मत नहीं हारी एवं पिता के कारोबार को आगे बढ़ाने की ठान ली। इसी बीच उन्हें राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान ( निसबड ) के बारे में पता चला कि निसबड में अनेक प्रकार के कौशल उन्नयन एवं तकनीकी के उद्यमिता विकास कार्यक्रम नि:शुल्क अयोजित होते रहते हैं। यह जानकर उनका उत्साह और बढ़ गया। भगवान एक रास्ता बन्द करता है तो दूसरा खोल देता है। श्री राजाराम प्रसाद के साथ भी ऐसा ही हुआ। हाथ कट जाने की दुखद घटना के बाद पुत्र विकास को निसबड से प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर मिला जिससे उनका व्यापार शिखर पर पहुँच सके।

विकास ने जेम्स एवं ज्वेलरी का 3 माह का प्रशिक्षण प्राप्त किया इसके अतिरिक्त उद्यमिता के अनेक गुण जैसे नव-प्रवर्तन, नए-उत्पाद, उत्पादन की नई पद्धतियों, नए बाजार, विपणन की नयी नीतियां सीखी।

आज विकास अपने पिता श्री राजाराम प्रसाद के साथ जेम्स एवं ज्वेलरी उत्पादों को कई देशों में निर्यात कर रहे हैं। असली स्टोन एवं नगीना जो यह जयपुर से क्रय करते हैं उसे अपने कारखाने में अनेक मशीनों द्वारा ग्राइन्डर, पोलिशिंग मशीन, कटिंग इत्यादि द्वारा नए आयाम देकर सुन्दर, लुभावनी ज्वेलरी का उत्पादन करते हैं। इसकी मांग देश के विभिन्न प्रदेशों के अतिरिक्त विदेशों में भी जैसे: इथोपिया, मिलान, बारी, चिली इत्यादि में भी है। वर्ष 2017 में महालक्ष्मी इन्टरनेशनल इकाई ने इथोपिया में निर्यात किया है। पूर्व के वर्षों में विकास यूरोप के चिली, मिलान बारी इत्यादि देशों में 1.75 करोड़ का निर्यात कर चुके हैं।

विकास की इकाई राधेश्याम एक्सपोर्ट ने वर्ष 2017 में इथोपिया में 6 लाख का निर्यात किया। वे अपने व्यापार को आगे बढ़ाने में तत्पर रहते हैं। यूरोप, अफ्रीका में असली पत्थरों की ज्वेलरी जो ब्रास पर तैयार की जा रही है जिसकी अत्यधिक माँग है।

विकास अपनी सफलता का श्रेय निसबड को ही देते हैं। आज उनका टर्नओवर 3 करोड़ वार्षिक पहुँच चुका है तथा इसी वर्ष अपनी एक नयी इकाई से 6 लाख का निर्यात किया। विकास अब भी अपनी उड़ान की ओर अग्रसर हैं। वे सदैव नव प्रवर्त्तन -कारी, सृजनात्मक, विचारों के साथ ऊँची-ऊँची उड़ान भर सफलता के पथ पर अग्रसर हैं।

कहा जाता है कि एक सामान्य व्यक्ति के मन में और दिमाग में लगभग 60 हजार से ज्यादा विचार आते हैं जिनमें से कुछ सकारात्मक तो कुछ नकारात्मक भी होते हैं। महत्वपूर्ण यह है कि कौन व्यक्ति विचारों को यर्थात में प्रवर्तित करता है।

# हिम्मत से सफलता तक

"जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रस धार नहीं, वह ह्रदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।"

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | श्री माणिक नरूला | लागत | 13 लाख रूपए |
| पता/मो0 | देहरादून/9897273953 | टर्न-ओवर | 1 करोड़ रूपए |
| कार्य | नरूला बेकर्स | | |

बचपन से ही सेना के प्रति आकर्षक राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव, यही वह कारण था जो नन्हे माणिक को देश सेवा के लिए प्रेरित करता था। माणिक ने बचपन से ही देश पर मर मिटने वाले शहीदों के बारे में सुना था और उनके शवों पर तिरंगा लिपटा हुआ देख कर माणिक के मन में भी देष सेवा के प्रति जोश उमडने लगा था। कभी-कभी उनका मन भावनाओं से भर जाता था। यह देख उनको भी सेना में भर्ती होने की लालसा जागने लगी।

देश के 27वें राज्य उत्तराखण्ड को देव भूमि के साथ-साथ सेना में अग्रिण भूमिका निभाने वाले राज्य के तौर पर भी जाना जाता है। द्वितीय विश्वयुद्ध से लेकर ''ऑपरेशन विजय'' कारगिल युद्ध विजय तक उत्तराखण्ड के सैनिकों का विशेष योगदान रहा है। देश के हर नागरिक की तरह देहरादून के माणिक नरूला में भी राष्ट्र-भक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी थी। राष्ट्र सेना अकादमी (आई0एम0ए0) में लहराता तिरंगा, वर्दी में परेड करते जवान माणिक को अपनी ओर आकर्षित करते थे यही यह वह वजह थी जिसे माणिक ने भारतीय सेना में जाने का लक्ष्य बना लिया। स्नातक तक की शिक्षा एवं राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन0सी0सी0) का प्रमाण पत्र प्राप्त करने के उपरांत भी सेना में भर्ती होने के लिए रक्षा सेवा परीक्षा में 8 बार एस0एस0बी तक पहुँचने पर नाकाम होने के कारण माणिक टूट से गये। मानो जीवन में सब समाप्त हो गया हो। कहते हैं कि हर असफलता के पीछे कुछ न कुछ सफलता निहित रहती है जिसे व्यक्ति दृढ़ इच्छाशक्ति एवं

जुड़कर अनुभव के साथ-साथ अजीविका भी अर्जित की माणिक ने अपनी कठिन परिस्थिति में भी अपना धेर्य नहीं खोया और उद्यम के बारे में ना जानते हुए भी अपना व्यवसाय आगे बढ़ाया। समय के साथ-साथ माणिक ने अपने व्यवसाय से जुड़े लोगों को भी प्रोत्साहित किया कि कैसे कठिन परिस्थिति में भी वे हान न मानते हुए आगे बढ़ते गए।

सदैव से उद्यमी स्वभाव के माणिक ने बेकरी के माध्यम से उत्कृष्ट उत्पादों को ग्राहकों और उपभोक्ताओं तक पहुँचाना अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। बेकरी कार्य में अनुभव प्राप्त कर माणिक स्वयं के उद्यम की परिकल्पना को लेकर संस्थान ( निसबड ) के सम्पर्क में आए। जहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त कर पी0एम0ई0जी0पी0 योजनान्तर्गत रू0 1,30,0000/- तक के ऋण की स्वीकृति के पश्चात अस्तित्व में आया ''नरूला बेकर्स''। कम समय में ही अपनी कुशल कार्य-प्रणाली स्वादिष्ट एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादों( व्यजनों ) के जरिये नरूला बेकर्स से सफलता के पायदान चढ़ना शुरू किया। आज देहरादून के लगभग हर रिटेल स्टोर पर नरूला बेकर्स के उत्पाद नजर आते हैं। यही वजह है कि आज 12 कर्मचारियों के साथ काम करने वाले माणिक का टर्नओवर रू0 1,00,00,000/- करोड़ से अधिक है।

रौबदार चहरे पे घनी मूछों वाले सहज स्वभाव के मुस्कराते चहरे के साथ-साथ आत्म विश्वास से लबरेज माणिक कहते हैं कि जीवन सफल ही नहीं सार्थक होना चाहिए मेरा सदैव से लक्ष्य राष्ट्र सेवा रहा है और एक उद्यमी बनकर मैं अपने आप को अपने लक्ष्य के नजदीक पाता हूँ।

स्वाद की इस दुनिया में गुणवत्ता के साथ हर व्यक्ति का उसकी आर्थिक क्षमता के अनुसार उत्पाद को पहुँचाना ही हमारा लक्ष्य है।

अपनी असफलताओं को सफलता में प्रवर्तित करना ही जीवन है। सदैव सकारात्मक होकर, उद्यमी भाव से आगे बढ़ते रहें और देष एवं समाज के प्रति अपना योगदान देते रहें।

# लगन और मेहनत से पूरे हुए सपने

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | श्री दीपक सिंह | लागत | 15 लाख रूपए |
| पता/मो0 | देहरादून/8979593539 | टर्न-ओवर | 90 लाख रूपए |
| कार्य | जर्मन बेकर्स | | |

उत्तराखण्ड राज्य के डोईवाला, देहरादून के दीपक सिंह बोहरा ने होटल मैनेजमेन्ट की षिक्षा प्राप्त कर अपनी व्यवसायिक यात्रा की शुरूआत दिल्ली से की। शुरूवाती दिनों में दीपक ने कड़ी मेहनत की और इसी सर्मपण भाव से उन्होंने वहाँ की भागदौड़ एवं आपाधापी भरी जिंदगी में रहना सीख लिया। दिल्ली में दीपक ने कई बड़े होटलों में कार्य किया जिसमें होटल रैडिसन जैसा नाम भी शामिल है।

इतनी कड़ी मेहनत और संघर्ष के बावजूद दीपक अपने कैरियर के प्रति संतुष्ट नहीं थे क्योंकि स्वयं का उद्यम स्थापित करने का उन्होंने जो लक्ष्य बनाया था वह पूरा नहीं हो पा रहा था। अपना व्यवसाय शुरू करने की लालसा लेकर दीपक वापस देहरादून आ गये।

देहरादून वापस आने के पश्चात वे निसबड, संस्थान के संपर्क में आये और उन्हें संस्थान द्वारा पी0एम0ई0जी0पी योजना के बारे में बताया गया।

वर्ष 2012 में दीपक ने बेकरी प्रोडक्ट के लिए दूधली, डोईवाला, देहरादून में आवेदन किया तथा 2012 में ही दीपक का रू0 15,00,000/- का ऋण स्वीकृत हुआ। ऋण स्वीकृति के पश्चात दीपक ने अपना उद्यम स्थापित की जिससे German Baker. अस्तित्व में आया। वर्तमान में German Baker, 08 कर्मचारियों के साथ 90 लाख का वार्षिक टर्नओवर अर्जित कर रहा है।

आज दीपक ने इतनी बड़ी इकाई की स्थापना कर अपनी मेहनत को प्रमाणित कर दिया है तथा डोईवाला, भानियावाला, नेहरु कालोनी और बंजारावाला में आउटलेट अपनी इकाई को और आगे बढ़ा दिया है जिसका लाभांश लगभग 40 लाख रू0 प्रति वर्ष है।

# सफलता की ओर अग्रसर

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | मो0 आशुर | मासिक आय | 35000 रूपए |
| पता/मो0 | गाजियाबाद/9997330310 | टर्न-ओवर | 26 लाख रूपए |
| कार्य | पॉइजन वियर | | |

इंसान कभी भी सब कुछ सीख कर इस दुनिया में नहीं आता। वह यही इसी दुनिया में सबकुछ सीखता है, हाँ बस सीखने के माध्यम कई हो सकते हैं। कुछ अपनी शिक्षा, पारिवारिक स्थिति एवं जिम्मेदारी भी सिखा देती है और कुछ लोग अपने तौर तरीकों से सीखते हैं तो कुछों को इस दुनिया का भूगोल एवं इतिहास सिखा देती है। जरूरत होती है तो बस एक जज्बे की जो कुछ भी सीखना चाहते हो तथा कुछ ऐसा कर गुजरने की चाह रखते हो जिससे आपका और आपके परिवार एवं राष्ट्र का कल्याण हो सके। ऐसी ही कुछ कहानी है मो0 आशुर की जो एक होनहार एवं महत्वकांक्षी व्यक्ति हैं।

मो0 आशुर के पिता का देहांत उनके बाल्यकाल में ही हो गया था चूँकि वे एक गरीब परिवार में पढ़े-लिखे दो भाई, दो बहनों में दूसरे नम्बर के मो0 आशुर का बचपन कुछ अच्छा नहीं रहा, यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि पति की मृत्यु के पश्चात चार बच्चों का लालन-पालन पढ़ाई-लिखाई का सम्पूर्ण बोझ उनकी माँ के कंधो पर आ गया। पति की मृत्यु के पश्चात उनकी माँ ने काफी संघर्ष किया और अपने क्षेत्र के आस-पास की फैक्टरियों में ताकिया सिलाई का काम करने लगी उनके साथ उनका बड़ा बेटा भी परिवार की गरीबी मिटाने के लिए माँ का हाथ बटाने लगा।

मो0 आशुर को बचपन से ही अपने परिवार की गरीबी का अहसास तो था ही किन्तु उसकी अवसरवादी सोच ने इस संकट की घड़ी में बड़े भाई को माँ का हाथ बटाते देख व्यवसाय के अवसर खोजना आरम्भ कर दिया साथ ही अपनी माता से घर पर सिलाई कार्य सीखकर धनार्जन का साधन बनाया। अब उसे इस कौशल में और अधिक निखार लाना था जिसके लिए उसे

कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता थी इसी बीच उनके एक मित्र जो कि निसबड में किसी न किसी कार्य से आते-जाते रहते थे। जब उन्हें पता लगा कि निसबड संस्थान में फैशन डिजाईनिंग का कोर्स होना है तो उन्होंने मो0 आशुर की रूचि को देखते हुए निसबड कार्यक्रम समन्वयक से बात की व कार्यक्रम समन्वयक ने मो0 आशुर को फोन द्वारा इस विषय में बताया। निसबड में आकर उसने अपना प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु आवेदन कर इस 3 माह का पाठ्यक्रम पूर्ण करने के उपरान्त उद्यमिता विकास कार्यक्रम में उद्यमिता गुण, उद्यमी की भूमिका एवं कार्य आदि का ज्ञान प्राप्त किया।

जिससे उसके हुनर में और निखार आया। कुछ कर गुजरने का जज्बा लिये मौ0 आशुर अपना खुद का व्यवसाय करना चाहते थे और वह साथ ही घर की माली हालत भी उनसे छिपी नहीं थी। हिम्मत बांधकर बड़े भाई व मम्मी से बात की। दोनों ने उसे प्रोत्साहित किया। दोनों के प्रोत्साहन से उसमें एक नई ऊर्जा का संचार हुआ और वह अपने लक्ष्य में लग गया जिससे एक नई राह की शुरूआत हुई। शुरूआत में उसने बाजारों व सड़क किनारे दुकान लगाकर कपड़े बेचने वालों से सम्पर्क किया। माल लाने, बेचने, उनकी जरूरत का माल बनाने व पैसे उधार करने आदि के बारे में पता किया व उन्हें अपनी बातों से प्रभावित किया। बातों से प्रभावित करने वाले मौ0 आशुर संघर्ष करते हुए अपने भाई एवं रिश्तेदारों की सहायता से 35 हजार लगाकर अपने ही घर कपड़ा लाकर सिलाई करने लगा और बाजार व सड़क किनारे दुकान लगाकर कपड़े बेचने वालों की जरूरत के हिसाब से कपड़े सिलने लगा। इस कार्य में उसका हुनर इतना बढ़ने लगा कि वह भिन्न-भिन्न डिजाईन के कपड़े बनाता जो ग्राहकों को बहुत पसंद आते। सामान की माँग बढ़ने के कारण उसने कुशल कारीगरों की तलाश शुरू कर दी। उसकी योग्यता ने वार्शिक टर्न ओवर 26 लाख तक पहुचा दिया। जोकि आज भी निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रयासरत है।

आज उनके पास 8 सिलाई कारीगर कार्य करते हैं और वह अपने खुद के डिजाईन किये हुए कपड़ों को बाजार में बहुत ही जल्द लाने वाले हैं। वे अपनी सफलता का श्रेय संस्थान एवं अपने बड़े भाई एवं माता जी के मार्ग दर्शन को देते हैं जोकि अपनी मेहनत के बल पर निरन्तर प्रगति और श्रेष्ठता के पथ पर अग्रसर हैं।

मौ0 आशुर की इसी मेहनत, जिम्मेदारियों की अहमियत एवं कर्तव्यनिष्ठा ने आज कई और लोगों को रोजगार दिया हुआ हैं।

# उद्यमेन ही सिद्धंन्ति

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | अरूण वर्मा | लागत | 4.50 लाख रूपए |
| पता/मो0 | देहरादून/9219185328 | टर्न-ओवर | 25 लाख रूपए |
| कार्य | जैविक उत्पादों का उत्पादन | | |

हमारे द्वारा किये गये प्रयासों की पराकाष्ठता ही हमारी उपलब्धियों को प्रदर्शित करती है। कुछ ऐसा ही वृतांत है देहरादून के अरूण वर्मा का जिन्होंने अपने प्रयासों, मजबूत इच्छाशक्ति, कार्य के प्रति समर्पण भाव से सफलता के सोपानों को प्राप्त किया।

देहरादून के रहने वाले श्री विजय वर्मा के घर सन् 1975 में पुत्र हुआ। जिसका नाम रखा गया अरूण। परिवार की उम्मीदों के सूरज ''अरूण''बचपन से ही कर्मठ स्वभाव के थे।हर कार्य को पूर्णता की तरफ ले जाना उनका ध्येय बचपन से ही रहा ।स्नातक की शिक्षा प्राप्त कर अरूण ने प्रोद्यौगिक क्रांति की महत्ता को जान कर कम्प्यूटर डिप्लोमा प्राप्त कर कम्प्यूटर संस्थान में प्रशिक्षक के रूप में अपने व्यवसायिक जीवन प्रारम्भ किया।

इसी बीच अरूण ने कुछ कम्प्यूटर के साथ स्वयं का शैक्षणिक संस्थान भी चलाना आरम्भ किया। इस दौरान इनका विवाह रेनू के साथ हो गया। गृह-संगिनी ( पत्नी ) रेनू ने परिवार से लेकर व्यवसाय तक पति का पूरा सहयोग किया, जिस कारण कम्प्यूटर संस्थान का विस्तार व ब्यूटी पार्लर का कार्य भी घर से प्रारम्भ किया। अरूण द्वारा सन् 2013 मे संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त किया गया था, जिसका क्रियान्वयन उन्होनें अपने उद्यम स्थापना मे किया।

ब्यूटी पार्लर में ग्राहकों की बड़ती संख्या और जैविक उत्पादों की मांग को देखकर उन्होंने स्वयं जैविक खाद और सौन्दर्य उत्पादों के उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया। संस्थान के सहयोग से 2017 में खादी एवम् ग्रामोद्योग बोर्ड से पीएमईजीपी योजना के अर्न्तगत 4.50 लाख रूपये का ऋण प्राप्त कर जैविक उत्पादों का उत्पादन कार्य आरम्भ किया।अपने तीन वर्षों के शोध तथा संस्थान के मार्गदर्शन से सभी अनिवार्य प्रमाण पत्रों को प्राप्त कर विक्रय शुरू किया।

उत्पादों की गुणवता में उन्होंने कोई कमी नहीं आने दी, इसलिए उनके उत्पादों को उपभोक्ताओं

द्वारा काफी सराहा गया। देश ही नही विदेश से भी उत्पादों की मांग आने लगी।

वर्तमान में मलेशिया में उत्पादों को निर्यात कर वह अन्य देशों तक भी अपने व्यापार को बढ़ाने के लिये अनवरत रूप से प्रयासरत हैं। इसके साथ-साथ अरूण वर्मा ने अपने उत्पादों के माध्यम से कई बेरोजगार युवाओं को व्यवसाय से जोड़ा और उन्हें भी इस व्यवसाय के लिए प्रोत्साहित किया ताकि वह अपनी जीविका चला पाए और अपने इस व्यवसाय को आगे बढ़ाकर अन्य बेरोजगार युवकों को भी रोजगार से जोडें। अपने बीते समय की कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य के साथ काम करके आज अरूण वर्मा अपने 5 कर्मचारियों और 25 लाख टर्नओवर के साथ रूपये 55,000.00 मासिक आय अर्जित कर सफलता के पथ पर अग्रसित हैं।

# चक्र से शिखर तक

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | बादल सिंह रावत | लागत | 2 लाख रूपए |
| पता/मो0 | देहरादून/7334000777 | टर्न-ओवर | 24 लाख रूपए |
| कार्य | माहेश्वरी टायर सर्विस | | |

विकास के इस पथ पर, जिसमें भारत निर्माण को सफल करने के प्रयास में हर भारतीय अग्रसर है, जिस पर दौड़ पैरों से नही पहियों से हो रही है। दिन रात चलते शहर में चलती अनगिनत गाड़ियां और उनको चलाते पहिये टायर एक बड़े उद्योग के रूप में विकसित है।

अपने सपनों को सकार करने के लिये बादल सिंह रावत ने अपनी सफलता की यात्रा इन्हीं पहियों से नापनी शुरू की।

देश के 27 वें राज्य उत्तराखण्ड़ जो विश्वभर में देवभूमि के नाम से जाना पहचाना जाता है। मसूरी, ऋषिकेश और हरिद्वार के मध्य स्थित इसकी राजधानी देहरादून लाखों युवाओं के सपनों का शहर है। ऐसे ही एक युवा बादल सिंह रावत है।

बचपन से ही रचनात्मक बादल किताबी कम व्यवहारिक ज्ञान को ज्यादा तवज्जो देते थे। सड़कों पर दौड़ते ऊँची-ऊँची गाड़ियों को सरपट दौड़ाते टायर उनकी रोचकता को और बढ़ा देते हैं। अपनी शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात

आजीविका और सपनों के लिये उन्होनें टायर निर्माता एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में काम किया जहाँ-जहाँ उन्होनें पाँच वर्ष तक टायर निर्माण की हर बारीकी को जाना।

टायर निर्माण की तकनीक सीखने के बाद बादल ने विपणन ;डंतामजपदहद्ध के गुर सीखने के लिये गुजरात स्थित एक कम्पनी में मार्केटिंग का कार्य भी किया लगभग डेढ़ वर्ष कार्य करने के बाद भी कम्पनी के उच्च अधिकारी का रवैया उनके प्रति निराशाजनक ही रहा जिससे परेशान होकर बादल ने नौकरी छोड़ अपना उद्यम स्थापित करने का मन बनाया।

अपने घर देहरादून वापस आकर बादल निसबड़, संस्थान के सम्पर्क में आये जहाँ उन्होंने उद्यम स्थापना हेतु विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्राप्त की और उन्होंने च्डम्ळच्में टायर निर्माण हेतु ऋण आवेदन किया। जहाँ से उन्हें रू0 8,00,000 का ऋण मिला, कुल रू0 8,80,000 के निवेश के साथ अस्तित्व में आया माहेश्वरी टायर सर्विस।

आज बादल न केवल स्वयं की आजीविका अर्जित कर रहे हैं बल्कि 03 स्थाई व 05 अस्थाई लोगों के रोजगार के साधन भी बने हैं।

बादल बताते हैं कि स्वयं की इच्छा और निसबड़, संस्थान के मार्गदर्शन ने उनके कौशल को उद्यमी पहचान दिलाई है। बादल कहते हैं कि जीवन के हर पल से हम सीखते हैं और इसी सीख को यदि हम समय से लागू कर लेते हैं तो हमारे सपने साकार होकर आकार लेने लगते हैं। जो स्वयं को विश्वास देते हैं, साथ ही ओरों के लिए भी प्रेरणा बन जाते हैं।

# उद्यमेन कौशलम्

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | कौशल सिंह रावत | लागत | 11.75 लाख रूपए |
| पता/मो0 | चमोली | टर्न-ओवर | 18 लाख रूपए |
| कार्य | कौशल डेयरी | | |

कौशल के माध्यम से कुशल भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए समाज के सभी वर्ग विशेषकर युवा वर्ग प्रतिबद्व होकर अपना योगदान दे रहा है। उत्तराखण्ड के कौशल सिंह रावत, जिला-चमोली, कण्डारी, कोट, गैरसेंण ने कौशल को न केवल आजीविका का आधार बनाया बल्कि अन्य लोगों को भी कौशल प्रदान कर स्वरोजगार देकर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए।

कौशल सिंह रावत की शिक्षा दिल्ली विश्वविद्यालय से वर्ष 1983 में पूरी हुई स्नातक करने के पश्चात कौशल सिंह रावत ने स्वरोजगार की दिशा में कदम बढाकर स्वयं का फर्नीचर उद्योग स्थापित किया जिसमे कौशल सिंह रावत की लागत लगभग 11 लाख रुपये थी। दिल्ली की भाग दौड़ व प्रदूषण के कारण उन्होंने देहरादून में अपना मकान बनाया। यह सोचकर कि में अपने गढ़वाल की तरफ अपना स्वरोजगार स्थापित करूं। इसके लिए क्या

तैयारी करनी होगी और कैसा स्वरोजगार करना है इसको लेकर वह असंमजस की स्थिति में थे। उसी दौरान उन्होंने निसबड से ग्रीन स्कील डेवलपमेंट पर आधारित दिनांक 13 नवम्बर 2018 से 18 जनवरी 2019 तक प्रशिक्षण प्राप्त किया। और समय-समय पर निसबड के मुख्य परामर्शदाता से अपना सम्पर्क बनाए रखा।

प्रशिक्षण के बाद कौशल सिंह रावत ने तुनवाला, देहरादून में अपना डेयरी फार्म स्थापित किया और अपने क्षेत्र के युवाओं को अपने रोजगार से जोड़ा, ताकि उन्हें भी रोजगार मिल सके। जिसके लिए कौशल सिंह रावत ने लगभग 11 लाख का निवेश कर टिन शेड बनाया व 5 गायें खरीदी, जिनसे प्रतिदिन करीब 80 लीटर दूध प्राप्त होता था। जिसकी कीमत रु0 4 हजार आठ सौ प्रतिदिन होती थी व वार्षिक लागत कुल 18 लाख थी कुल 11 लाख की प्रारम्भिक लागत से तैयार डेयरी फार्म आज कई युवाओं की आशा का केन्द्र है।

वर्तमान में चार कर्मचारियों के साथ कार्य करने वाले कौशल सिंह रावत का सोलर प्लांट लगाने का सपना भी है कि में अपने पैतृक गांव कण्डारी कोट, गैरसेंण, चमोली में सोलर प्लांट लगाऊँ और गांव के युवाओं को रोजगार से जोड़ सकूँ कौशल सिंह रावत ने समृद्ध भारत व समृद्ध उत्तराखण्ड को साकार करने की मुहिम में अपना योगदान दिया है। दिल्ली से लेकर अपने पैतृक गांव का सफर कौशल सिंह रावत ने अपनी मेहनत व निसबड के सहयोग से अपने क्षेत्र के युवावों को उद्यमिता हेतु न केवल प्रेरित करने का कार्य कर रहे हैं बल्कि पलायन की समस्या से जुझ रहे उत्तराखण्ड के लिए एक मिसाल के तौर पर खुद को प्रस्तुत भी किया है।

सशक्त भारत की परिकल्पना को गांव की समृद्धि के बिना नहीं किया जा सकता अपने जन्मभूमि को अपनी कर्मभूमि बनाकर स्वावलम्बी भारत की दिशा में कौशल सिंह रावत एक मजबूत हस्ताक्षर के रूप में उभर कर राष्ट्रीय निर्माण में अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

# स्वाद से पाई सफलता की राह

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | शेफाली वर्मा | लागत | 25 लाख रूपए |
| पता/मो0 | गाजियाबाद, उ0प्र0 | टर्न-ओवर | 42 लाख रूपए |
| कार्य | फॉर्म फ्रेश मसाले | | |

वैश्विक प्रतिस्पर्धा के इस युग में कार्यकाल के तौर पर महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। आज महिलाएँ हर क्षेत्र में अपने कार्यकौशल का लोहा मनवा चुकी हैं।

भारत में महिलाओं की स्थिति बीते समय से ज्यादा बेहतर नजर आती है। महिलाएँ अपने घरों से निकलकर राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी का निर्वहन मजबूती से कर रही है। वैज्ञानिक, औद्योगिक, राजनैतिक, खेल आदि सभी क्षेत्रों में महिलाओं ने अपना मुकाम बनाया है।

कुछ ऐसी ही महिलाओं की तरह गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश की रहने वाली शेफाली वर्मा भी हैं जिन्होनें आजिविका के लिये घर का आंगन तो लांघा पर खाने के स्वाद को छोड़ा नहीं। अपनी रसोई को अपनी प्रयोगशाला के तौर पर अपनाकर न केवल घरवालों को स्वादिष्ट पाक-पकवान खिलाए बल्कि मसालों को अपनी आजिविका का साधन बनाने का निश्चय किया। अपने सपनों को आकार देने की उधेड़बुन के बीच वह संस्थान के सम्पर्क में आई। संस्थान के मार्गदर्शन से उन्होंने मसाला उद्योग के लिए प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत 25 लाख के ऋण हेतु आवेदन किया। शेफाली के प्रयासों और संस्थान के मार्गदर्शन का फल ''फार्म फ्रेश मसाले'' के रूप में सामने आया।

अर्न्तराज्यीय व्यापार को अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार बनाने के लिए शेफाली आज भी पूर्ण ऊर्जा के साथ एकाग्र भाव से कार्य कर रही है। आठ कर्मचारियों के साथ काम करने वाली शेफाली 70 हजार रूपये से अधिक मासिक मुनाफे पर कार्य कर भावी उद्यमियों के लिए प्रेरणा है।

# कौशल से कुशलता

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | परवेज अख्तर | लागत | 1.50 लाख रूपए |
| पता/मो0 | उधम सिंह नगर | टर्न-ओवर | 12 लाख रूपए |
| कार्य | नाज़ मोबाइल वर्ल्ड | | |

श्री अब्दुल अली जो कि शारिरिक रूप से स्वस्थ नहीं होने के कारण पारिवारिक भरण-पोषण करने में असर्मथ से महसूस कर रहे थे। पारिवारिक परिस्थिति प्रतिकूल चल रही थी। कहने को तो श्री अब्दुल अली जी के दो बेटे हैं परन्तु आज के प्रतिस्पर्धा के इस दौर में वे दोनों भी अपनी शिक्षा और भविष्य को लेकर चिंतित थे जिस कारण वे अपनी क्षमता के अनुसार परिवार का सहयोग तो कर रहे थे परन्तु एक परिवार को संभालने लायक खर्च नहीं जुटा पा रहे थे। बड़े

बेटे की पढ़ाई के प्रति रूचि को देखते हुए पूरा परिवार उसका सहयोग करने लगा और सबके सहयोग से उसने पी0एच0डी0 की डिग्री हासिल की तथा इसी क्षेत्र में वह निरंतर प्रयासरत रहा और अपने भविष्य को संजोने के लिऐ आगे बढ़ता चला गया।

वर्ष 2008 में अर्थ-शास्त्र से स्नातकोत्तर करने वाले आजाद नगर, गदरपुर, उद्यम सिंह नगर निवासी परवेज़ अख्तर सन् 2009 ने अपने सपनों पर विराम लगाते हुए कहीं से भारतीय उद्यमिता संस्थान वर्तमान में निसबड के बारे में सुना और फिर से अपने सपनों में पंख लगाते हुए कुछ नई उम्मीद लिए देहरादून चले आए।

सन् 2009 में भारतीय उद्यमिता संस्थान वर्तमान जो कि सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक संस्थान है। वहाँ पर परवेज़ ने क्लस्टर डेवलपमेंट एक्जिक्यूटीव के पद पर लगभग तीन वर्षों तक कार्य किया। परन्तु मन में हमेशा से ही कुछ अपना व्यवसाय करने की लगन लिए परवेज़ ने अपना फैसला लिया और

संस्थान की नौकरी छोड़कर चले गये गदरपुर, अपने जन्म भूमि।

वर्ष 2013 में परवेज़ ने रू0 1,50,000 के निवेश से अपना मोबाइल रिपेयरिंग का कार्य शुरू किया जो अस्तित्व में आया ''नाज़ मोबाइल वर्ल्ड''। आज ''नाज़ मोबाइल वर्ल्ड'' का वार्षिक टर्न-ओवर लगभग रू0 12,00,000 है तथा आज वह रू0 45000-50000 लाभांश प्राप्त कर रहा है।

आज परवेज़ अपने इस व्यवसाय से बहुत खुश है और वह एक सफल उद्यमी बन चुका है। और आज ''नाज़ मोबाइल रिपेयरिंग सेन्टर'' अपने आप में एक जाना माना नाम है और उनकी बहुत अच्छी छवि बन चुकी है।

# तकनीकी ने दिलाई सफलता

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | विकास रमोला | लागत | 3.50 लाख रूपए |
| पता/मो0 | देहरादून | टर्न-ओवर | 20 लाख रूपए |
| कार्य | वी0आर0 कम्यूनिकेशन | | |

तकनीकी के इस दौर में कल्पनाएँ स्वत: आकार ले रही हैं। असम्भव शब्द मानो अपनी सर्थकता खो चुका है।

डिजिटल क्रांति के इस दौर में महज सुविधाएँ ही नहीं बढ़ी हैं बल्कि स्वरोजगार एवं रोजगार के क्षेत्रों का विस्तार भी हुआ है। इस क्षेत्र से जुड़कर स्वयं को स्वरोजगार एवं अन्य युवाओं को रोजगार प्रदान करने वाले विकास रमोला ने स्वयं की पहचान बनाई है।

सैनिक पिता के पुत्र तथा दो भाईयों में छोटे होने के नाते प्यार के साथ-साथ अनुशासनात्मक परिवेश परिवार से मिला, पिता का तबादला सीमावर्ती क्षेत्रों में होने के कारण विकास ने अपने गृहनगर देहरादून से ही शिक्षा ग्रहण करने के बाद रोजगार की तलाश में शहर दर शहर का सफर शुरू किया। विकास को कुछ नया करने की इच्छा हुई जिसके लिए उसने कई शौक्षणिक और टैक्निकल संस्थानों के चक्कर लगाए पर असफलता ही हाथ लगी। इस बीच विकास की माता जी का स्वस्थ ठीक न रहने के कारण उसे

वापस घर आना पड़ा, पिता और भाई दोनों फौज में रहकर देश सेवा में व्यस्त थे, ऐसे में परिवार का सारा दायित्व विकास के कन्धों पर आ गया।

विकास के पास होटल से संबंधित कार्य करने का अनुभव तो था पर होटल निर्माण के लिये निवेश हेतु न कोई पूंजी ना कोई पूर्व योजना थी, ऐसी स्थिति में विकास कार्य योजना के लिए संस्थान के संम्पर्क में आये जहॉ बाजार सर्वेक्षण के बाद उन्होंने मोबाइल रिपेयरिंग और सैल्स का कार्य करना प्रारम्भ किया फिर अस्तित्व में आया वी0आर0 कम्युनिकेशन।

विकास रमोला हर्षित होते हुए बताते हैं कि आज वह दो कर्मचारियों के साथ 20 लाख वार्षिक टर्नओवर का कार्य कर रहे हैं। हमें जो कार्य करना है उसके लिये पूर्व योजना और मार्गदर्शन को आधार बना कर हम सफलता के प्रतिशत को बढ़ा सकते हैं।

# रूप सज्जा-जीवन सज्जा

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | पूनम जोशी | मासिक आय | 30 हजार रूपए |
| पता/मो0 | कोटद्वार | टर्न-ओवर | 10 लाख रूपए |
| कार्य | ब्यूटीशियन | | |

रूप सज्जा, श्रृंगार न केवल व्यक्तित्व को आकर्षक बनाती है अपितु स्वरोजगार एवं रोजगार का एक विस्तृत पटल भी है, इसी सम्भावना को सकार रूप दिया है,कोटद्वार में रहने वाली पूनम जोशी ने एम0ए0 तक शिक्षा ग्रहण करने के बाद अपने हुनर को स्वरोजगार में बदलने की चाह रखने वाली पूनम , पहले तो केवल शौक के आधार पर ब्यूटीशियन का कार्य करती थी , किन्तु घर वालों के सहयोग एवं संस्थान से मिले मार्गदर्शक के आधार पर उन्होंने ब्यूटीशियन का कार्य आजीविका संर्वधन हेतु प्रारम्भ करने का मन बना लिया था ।

पूनम ने संस्थान के विषय में जानकारी अपने क्षैत्र में चल रहे प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त की, जिसके उपरान्त संस्थान के सहयोग से उन्होने च्डम्ळच्योजना के तहत 5,50,000 लाख रू0 के ऋण हेतु आवेदन किया। ऋण स्वीकृत के पश्चात् उन्होंने अपना एक पार्लर शुरू किया, जिसमें ब्यूटीशियन के कार्यों साथ - साथ मेहंदी और ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण देना आरम्भ किया आज वर्तमान में अपने कौशल के आधार पर पूनम ने न केवल अपनी आर्थिक, समाजिक प्रतिष्ठा को बढ़ाया है हांलाकि 5 अन्यों के रोजगार का साधन बनी है। अपने कार्य से सन्तुष्ट पूनम महिला सशक्तिकरण का एक जीवन्त उदाहरण है। जो स्वयं तो अच्छा कार्य कर रही है साथ ही साथ अन्यों को प्रेरणा प्रदान कर रही है।

# व्योमिनी

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | प्राची कौशिक | मासिक आय | 30 हजार रूपए |
| पता/मो0 | सुल्तानपुर मिर्जा, दिल्ली | टर्न-ओवर | 10 लाख रूपए |
| कार्य | व्योमिनी सोशल इन्टरप्राइजेज | | |

भारतीय समाज में नारी को सृजन का प्रतीक माना गया है। समाज से लेकर परिवार के विकास में महिलाओं की अग्रिणी भूमिका सदैव से ही रही है। मौजूदा परिवेश में कुल कार्यबल में महिलाओं की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। इसके साथ-साथ ग्रामीण एवं आर्थिक व समाजिक रूप से निर्बल वर्गो में महिलाओं की स्थिति आज भी चिंताजनक है इस परिवेश की महिलाएं आज भी शिक्षा, स्वास्थ, स्वच्छता जैसी समान्य आवश्यताओं के लिए संर्घष करती नजर आती है। महिलाओं की इस पीड़ा को एक महिला होकर बेहतर तरीके से महसूस किया जा सकता है।

32वें वर्ष जब एक किशोरी अपने निजी जीवन के लिए सपने बुनती है। प्राची ने महिलाओं के नित्यकर्म ( मासिक धर्म ) के संक्रमण से होने वाले सम्भावित रोगों से रोकथाम के लिए एक बायोडिग्रेडेबल सेनेटरी नैपकिन का उत्पादन रक्षक नाम से विशेषकर अति पिछडे, वंचित परिवेश में जीवन यापन कर रही महिलाओं के लिए किया।

उन्होंने व्योमिनी सोशल इन्टरप्राइसेस् की स्थापना कर गरीब, पिछडी, निशक्त, और वंचित महिलाओं के स्वास्थ शिक्षा एवमं स्वालाम्बन के संवर्धन के लिए काम करना प्रारम्भ किया। आज वर्तमान में अपने उद्यम के द्वारा प्राची लाखों महिलाओं को स्वास्थ्य एंव स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के साथ पांच सौ से अधिक महिलाओं को हस्तशिल्प एवं अन्य क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्रदान कर उन्हें

आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त कर रही हैं। उनके द्वारा सेनेटरी नैपकिन, सेनेटरी नेपकिन वैन्डिंग मशीन, आटोमैटिक सेनेटरी नैपकिन डिस्पोजल मशीन और सेनेटरी नैपकिन निर्माण में आवश्यक कच्चे सामान का उत्पादन किया जाता है।

प्राची कहती हैं कि उन्होने अपने उद्यम की स्थापना का उद्देश्य केवल आर्थिक लाभ के लिए ही नहीं किया है बल्कि सामाजिक सारोकार से जुड़े स्वच्छ भारत मिशन, ''मेक इन इंडिया'' ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' एंव महिला सशक्तिकरण जैसे कार्यक्रमों को भी सार्थकता के साथ सहयोग कर समाज में महिलाओं की स्थिति को सुदृढ़ करना भी है।

# सुई धागा-एक पहचान

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | अलका रानी | मासिक आय | 6-7 हजार रूपए |
| पता/मो0 | डोईवाला, देहरादून | टर्न-ओवर | |
| कार्य | सिलाई कार्य | | |

राष्ट्र निर्माण की पहली इकाई श्रमिकों को माना जाता है। जो हो रहे विकास की अधारभूत संरचना को आकार देने में महत्वपूर्ण योगदान देता है हो रहे इस बदलाव के बीच श्रमिकों की स्थिति को मजबूती प्रदान करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। उत्तराखण्ड के जिले देहरादून में श्रम विभाग और संस्थान के संयुक्त प्रयासों से श्रमिकों की आश्रित महिलाओं के लिए कौशल परक उद्यमिता विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभाग करने वाली अलका ने अपने कौशल और मार्गदर्शन से अपनी एक नई पहचान बनाई।

अपने बारे में बताते हुए अलका रानी कहती है मेरा जन्म उत्तराखण्ड राज्य, देहरादून जिले के मारखम ग्रान्ट, ग्राम- कुड़कावाला में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ, मेरे पिता ने ड्राईवर की नौकरी करके हमारा पालन-पोषण एवं पढ़ाई-लिखाई करवाई। मेरी माता एक गृहणी थी जिनकी अकस्मात मृत्यु हो जाने के बाद हम 6 भाई बहनों की जिम्मेदारी मेरे ऊपर आ गई। मेरी प्राथमिक क्षेत्र के ही एक सरकारी स्कूल से हुई। पारिवारिक स्थिति खराब होने के कारण मेरी शादी कम उम्र ही उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर में कर दी गई। परन्तु नियती को शायद कुछ और ही मंजूर था।

मेरी शादी के 1 साल बाद ही एक दुर्घटना में मेरे पति की भी मृत्यु हो गई। अपनी एक माह की बच्ची के साथ में एकदम अकेली हो गई और ससुराल वालों ने भी अपने साथ रखने से मना कर दिया। जिसके चलते में अपने मायके में वापस आ गई। मेरी पूरी दुनिया बिखर चुकी थी। मजदूरी कर में अपना गुजर बसर करने लगी। किसी परिचित द्वारा हमारे गांव में संस्थान द्वारा आयोजित किये जाने वाले प्रशिक्षण के बारे में पता चला। मैंने सिलाई का दो माह का प्रशिक्षण बहुत मन लगाकर पूर्ण किया जिसके बाद मुझे

प्रमाण पत्र भी प्राप्त हुआ प्रशिक्षण के दौरान मुझे सिलाई मशीन प्रदान की गई उसके द्वारा मैंने घर से ही सिलाई का कार्य आरम्भ किया ।

आज मुझे सिलाई का कार्य करते हुए 1 वर्ष पूर्ण हो चुका है और मैं अपने पैरों पर खड़ी हो चुकी हूँ, अब में अपना और अपनी बेटी का लालन पालन ठीक से कर रही हूँ और लगभग 6-7 हजार प्रतिमाह भी अर्जित कर रही हूँ।

मैं संस्थान का धन्यवाद करना चाहती हूँ जिसकी वजह से मैं अपनी जिन्दगी दौबारा से प्रारम्भ कर पाई। मैं अन्य सभी से भी कहना चाहती हूँ कि जो लोग अपने जीवन में आगे बढ़ना चाहते हैं वह संस्थान के साथ जुड़कर विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रमों के द्वारा कौशल प्राप्त करके अपने जीवन में आगे बढ़ें।

# श्रृंगार से सजाया जीवन

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | कंचन | लागत | 50 हजार रूपए |
| पता/मो0 | डोईवाला, देहरादून | टर्न-ओवर | |
| कार्य | शालुम ब्यूटी पॉर्लर | | |

श्रृंगार करना हर मनुष्य की प्रवृत्ति है, विशेषकर महिलाओं के भीतर यह रचनात्मक गुण पुरूषों की अपेक्षा अधिक पाया जाता है। हम समाज के किसी भी आर्थिक वर्ग से सम्बन्धित हों पर यह प्राकृतिक गुण हमारे भीतर भी रहता है।

आंतरिक सज्जा के साथ ब्राह्य रूप सज्जा केवल आकर्षण मात्र नहीं है, यह हमारे व्यक्तित्व निखार का एक पहलू भी है, इसी कारण रूप सज्जा आज एक व्यापक उद्योग के तौर पर पनप कर सुखद भविष्य के लिए आकर्षित करता नजर आता है।

डोईवाला, देहरादून की रहने वाली कंचन ने भी रूप सज्जा को व्यवसायिक तौर पर अपनाकर न केवल अपनी आय सृजित की अपितु अन्य 3 लोगों के आजीविका संवर्धन का माध्यम बनी।

गरीब परिवार में जन्मी कंचन के पिता फास्ट फूड का ठेला लगाकर कमाई गयी दैनिक आय से परिवार का गुजर बसर करते थे। अपनी इसी आय से उन्होंने अपने 4 बच्चों की शिक्षा-दीक्षा और भरण पोषण किया। 12वीं तक की शिक्षा प्राप्त करने वाली कंचन बचपन से रचनात्मक प्रवृत्ति की थी। कभी अपनी बहिन के बालों के विविध तरीके से गुंथना कभी घरेलू उत्पादों से माँ के चेहरे पर परीक्षण करना। उसका यह शौक ही था कि वो तीज त्यौहारों पर घरवालों के साथ अपने पड़ोसियों को तैयार करती, मेहंदी आदि लगाती। उसके इस कार्य के प्रति झुकाव को

देखते हुये उसके परिचित ने उसे उनके क्षेत्र में संस्थान द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण की जानकारी दी।

बैहद खुश मन से कंचन ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में अपना पंजीकरण करवाकर प्रशिक्षकों द्वारा दिये गये कौशल और उद्यमी ज्ञान को न केवल सीखा बल्कि प्रशिक्षण के उपरान्त संस्थान के मार्गदर्शन और रू0 50,000.00 की धनराशि अपने घर वालों से लेकर अपना ब्यूटी पार्लर ''शालूम ब्यूटी पार्लर'' के नाम से शुरू किया।

प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त कौशल उद्यम स्थापना, संचालन, सम्प्रेषण कौशल के आधार पर अपना उद्यम चलाना प्रारम्भ किया।

आज कंचन 15 से 18 हजार की मासिक आय के साथ 3 अन्य लोगों के रोजगार का साधन है।
कंचन कहती है कि हमें अपने प्रयासों मे कभी भी कमी नहीं आनी देनी चाहिये क्योंकि हमारी सफलता, असफलता हमारे द्वारा किये गये प्रयासों पर निर्भर होती है।

# डिजिटल पथ पर

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | जोगेन्द्र सिंह | मासिक आय | 50 हजार रूपए |
| पता/मो0 | शेखुवाला, देहरादून | टर्न-ओवर | 7.50 लाख रूपए |
| कार्य | शाकुम्बरी मोबाइल रिपेरिंग | | |

उत्तराखण्ड अपने तीर्थस्थलों के लिए देवभूमि के नाम से जाना पहचाना जाता है। यहाँ की प्राकृतिक सौन्दर्य जितना मनमोहक है, उतना ही जटिल जीवन है। यहाँ निवास करने वाले लोगों, अनुसूचित जनजाति के लोग ऐसे ही दुर्गम क्षेत्रों में निवास कर अपना जीविकोपार्जन करते हैं।

आज तकनीक के इस युग में ये लोग भी विकास की मुख्यधारा से जुड़कर राष्ट्र निर्माण में अपनी सहभागिता प्रदान कर रहे हैं।

उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून के सीमान्त प्रखंड विकासनगर के शेखुवाला कस्बे में रहने वाले जोगेन्द्र सिंह ने संचार क्रांति के इस युग में मोबाइल रिपेयरिंग के कार्य को चुनकर न केवल अपनी आजीविका के साधन को बढ़ाया है बल्कि अन्य युवाओं को भी स्वरोजगार हेतु प्रेरित किया है।

जोगेन्द्र के पिता जय सिंह मजदूरी का काम करते थे, अपनी सीमित दैनिक आय में भी उन्होंने अपने 03 बच्चों को शिक्षित करने में कोई कमी नहीं

रखी। बड़े होने के नाते जोगेन्द्र ने जिम्मेदारियों को अपने ऊपर लेते हुए बी0ए0 तक की शिक्षा प्राप्त कर नौकरी के लिए जगह-जगह आवेदन किया। किन्तु अंर्तमन से सदैव स्वयं का व्यवसाय शुरू करने की भावना जागृत होती रहती थी।

सन् 2016 में संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त कर जोगेन्द्र की इच्छाओं को आकार मिलने लगा। उसने प्रशिक्षण से प्राप्त जानकारी और मार्गदर्शन के आधार पर फोटो स्टेट, लैमिनेशन का कार्य के साथ मोबाइल रिपेयरिंग का कार्य शुरूवाती 50000 रूपये के निवेश से प्रारम्भ किया।

आज जोगेन्द्र अपने क्षेत्र का एक चिर परिचित नाम है। कुशल उद्यमी की तरह अपने कार्य को बढ़ाते हुए अन्य 02 लोगों को भी रोजगार दे रहे हैं।

जोगेन्द्र बताते हैं कि सभी व्ययों के बाद वह मासिक 15000 रू0 कमा रहे हैं जिससे वह खुश तो है पर सन्तुष्ट नहीं है। 50000 से प्रारम्भ उद्यम ने अपना आकार बढ़ा लिया है, जिसे और भी अधिक बढ़ा कर जोगेन्द्र रोजगार के अवसरों को बढ़ाने के साथ-साथ अन्य युवाओं को भी स्वरोजगार हेतु प्रेरित करना चाहते हैं।

# फैशन बना पैशन

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | गीता | लागत | 3 लाख रूपए |
| पता/मो0 | लखनऊ, उ0प्र0 | टर्न-ओवर | 9.60 लाख रूपए |
| कार्य | सीड प्रशिक्षण केन्द्र | | |

कौशल के माध्यम से कुशल भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए समाज के सभी वर्ग विशेषकर युवा वर्ग प्रतिबद्व होकर अपना योगदान दे रहा है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के गाँव माती की रहने वाली गीता ने कौशल को न केवल आजीविका का आधार बनाया बल्कि अन्य लोगों को भी कौशल प्रदान कर स्वरोजगार एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए हैं।

शिक्षक रामलाल जी के यहां जन्मी गीता चार बहिनों में तीसरी बहन होने के कारण जिम्मेदारियों से ज्यादा लाड़ दुलार माता पिता और बहनों से गीता को मिला। परिवार से मिली शिक्षा एवं संस्कार से सदैव दूसरों के लिए समर्पित भाव से कार्य करने की भावना बचपन से ही गीता को लोकहित के कार्य के लिये प्रेरित करती रहती थी। शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त गीता के मन में अपने गाँव के लिये कुछ करने की भावना हिलोरे मारने लगी पर इसकी शुरूआत कहॉ से और कैसे करनी है यह स्पष्ट नही हो पा रहा था। इसी उधेड़बुन के बीच सन 2015 में गीता ने निसबड, संस्थान द्वारा आयोजित फैशन डिजाईनिंग पर आधारित उद्यमिता विकास कार्यक्रम में भाग लिया। जहां उसने सिलाई कौशल के साथ-साथ उद्यम स्थापना, वित्तीय प्रबन्धन एवं उपलब्ध अवसरों की जानकारी प्राप्त की।

गीता के जीवन में समय ने करवट लेते हुए मुश्किल दिनों से उसका आमना -सामना करवाया। बहनों की शादी और पिताजी की मृत्यु के बाद परिवार की जिम्मेदारी गीता के कन्धों पर आ गई। इस मुश्किल समय से उभरते हुए गीता ने

अपने गाँव में सीड़ नाम से कौशल प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की। कुल तीन लाख की प्रारम्भिक लागत से तैयार केन्द्र आज कई युवाओं की आशा का केन्द्र है। जहां पर सिलाई कार्य के साथ प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

वर्तमान में पाँच कर्मचारियों के साथ कार्य करने वाली गीता ने डिजीटल भारत को साकार करने की मुहिम में कम्प्यूटर साक्षरता हेतु कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना भी की है। तीस हज़ार रूपये मासिक कमा कर गीता अपने परिवार का बेहतर भरण पोषण करने के साथ क्षेत्र के युवावों को उद्यमिता हेतु प्रेरित करने का कार्य भी कर रही है।

''सशक्त नारी सशक्त भारत'' की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में गीता एक मजबूत हस्ताक्षर के रूप मे उभर कर राष्ट्रीय निर्माण में अपना सहयोग प्रदान कर रही है।

# हुनर से रोजगार

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | नवाब अली | लागत | 1 लाख रूपए |
| पता/मो0 | देहरादून, उत्तराखण्ड | टर्न-ओवर | 9 लाख रूपए |
| कार्य | शीट मैटल फैब्रिकेशन एण्ड वैल्डिंग | | |

विकसित होते भारत में आधारभूत संरचना हो रहे विकास का प्रतीक है। इस निर्माण प्रर्किया में स्वरोजगार एवं रोजगार के व्यापक अवसर उपलब्ध है। इन अवसरों को उपलब्धि में बदल कर कईयों ने अपने जीवन को सफलता के पद पर अग्रसर किया है। इन्ही में से एक नाम उत्तराखण्ड राज्य की राजधानी देहरादून में रहने वाले नवाब अली का है।

अपने सफर को अपनी जुबान से बयाँ करते हुए बताते हैं कि मेरे पिता का नाम श्री दीन मौहम्मद है मेरी माता का नाम स्व0 श्रीमती जरीना खातून है। मेरे परिवार में 9 लोग हैं। मैं उत्तराखण्ड राज्य के देहरादून जिले के एक छोटे के कस्बे मारखम ग्रान्ट, कुड़कावाला, डोईवाला का रहने वाला हूँ। मेरे पिताजी का कोई नियमित रोजगार न होने के कारण हम सभी भाई बहनों का भरण पोषण व पढ़ाई ठीक से नहीं हो पाई। अपने भाई बहनों में

मैं सबसे बड़ा होने के कारण परिवार की जिम्मेदारी मेरे ऊपर ही आ गई और मैं अपने पिताजी के साथ रहकर लोगों के खेतों में दैनिक मजदूरी करके पूरे परिवार के लालन-पालन में मद्द करने लगा। परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब होने के कारण ही में अपनी पढ़ाई केवल 8 वीं कक्षा तक ही कर पाया। इस प्रकार हमारे परिवार की गुजर बसर हो रही थी और मेरा जीवन चल रहा था।

इस दौरान स्थानीय समाचार पत्रों के माध्यम से शीट फैबरीकेशन के प्रशिक्षण के बारे में पता चला प्रशिक्षण में पंजीकरण करवाकर मैंने उद्यम स्थापना, व्यक्तित्व निर्माण, सम्प्रेषण कौशल वित्तीय प्रबन्धन के साथ फैबरीकेशन के कार्य में पूर्ण कर निपुणता प्राप्त की। प्रशिक्षण के बाद हमें निर्माण कार्य स्थल पर भी ले जाया जाता था। जहां पर हम कार्य करने लगे थे जिससे हमारी कुछ आमदनी भी होने लगी उसके साथ ही साथ काम करने का विश्वास भी बढ़ने लगा था। मैं इस दौरान अपने आप में दिन प्रतिदिन बहुत बदलाव महसूस कर रहा था।

प्रशिक्षण प्राप्त कर मैं अब अपना व्यवसाय प्रारम्भ करने के लिए पूर्ण रुप से तैयार था। अब मैं तकनीकी रुप से एवं मानसिक रुप दोनों से एकदम तैयार था। और वो दिन भी आ ही गया जो मेरे जीवन को बदलने के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। मैंने बैंक से एक लाख रुपये का ऋण लेकर अपनी एक वर्कशाप स्टार फैबरिकेशन वर्क्स के नाम से बंजारावाला, देहरादून में खोलकर काम करना शुरु किया और बहुत ही कम समय में तेजी से कार्य आगे बढ़ने लगा जिससे मेरी आमदनी बढ़ने लगी। शुरु में मैं एक हैल्पर लेकर कार्य करता था परन्तु आज मेरे पास मेरे साथ ही प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले 3 और लोग भी कार्य करते हैं। अब मेरी मासिक आमदनी लगभग 25 से 30 हजार रुपये महीना है।

नवाब के हौंसलों ने कौशल के पंखो से सफलता की उड़ान को पाया। स्वयं की इच्छाशक्ति उपयुक्त मार्ग दर्शन एवं समय पर लिये गये निर्णयों ने न केवल रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये अपितु सम्भावित उद्यमियों के लिये एक दिशा भी प्रदान की है।

# सशक्तता से समृद्धि

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | दीपिका बंगारी | मासिक आय | 30 हजार रूपए |
| पता/मो0 | देहरादून, उत्तराखण्ड | टर्न-ओवर | 8 लाख रूपए |
| कार्य | माँ लक्ष्मी प्रशिक्षण केन्द्र | | |

आज भारत तेजी से लैंगिक समानता की दिशा में बढ़ रहे देशों में अग्रिणी नजर आ रहा है। यह महिलाओं को समान अधिकार के साथ समान अवसर की उपलब्धता के कारण कार्यबल में उनका प्रतिभाग निरन्तर बढ़ रहा है। आज महिलाएँ घर की रसोई से लेकर अंतरिक्ष अभियान तक अपनी भूमिका को बेमिसाल ढंग से निभा रही है। प्रौद्योगिक से औद्योगिक हर क्षेत्र में महिलाएँ नेतृत्व कर विकास की गति बढ़ा कर राष्ट्र निर्माण में सहयोग प्रदान कर रही हैं। यह कहानी एक ऐसी प्रतिस्पर्धी स्वभाव की महिला की है, जिसने अपनी नौकरी त्याग कर सहज जीवन का परित्याग कर, उद्यमी बनने के अमृदु पथ पर चलना स्वीकार किया।

शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी पर बसे देश के 27वें राज्य की राजधानी देहरादून में जन्मी दीपिका के पिता सरकारी सेवा में सेवारत थे। उन्होने अपनी शिक्षा दीक्षा देहरादून से प्राप्त की सन् 2008 में एम0बी0ए की शिक्षा ग्रहण करने के बाद दीपिका ने रिटेल प्रशिक्षक के रूप में विभिन्न प्रतिष्ठित प्रतिष्ठानों/संस्थानों में कार्य किया।

''कौशल भारत, कुशल भारत'' की संकल्पना से प्रभावित होकर दीपिका ने हर व्यक्ति विशेषकर आर्थिक रूप से निर्बल वर्ग के लिए काम करने का मन बनाया। उद्यम स्थापना के लिए प्रयासरत 2018 में संस्थान के सम्पर्क में आकर प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें अपनी हर दुविधा का हल नजर आया। सम्पूर्ण व्यवहारिक ज्ञान के साथ उद्यम स्थापना, संचालन से सम्बन्धित ज्ञान अर्जित कर उन्होंने संस्थान के सहयोग और मार्गदर्शन से पी0एम0ई0जी0पी0 योजना के तहत व्यवसायिक प्रशिक्षण केन्द्र हेतु ऋण आवेदन किया रू0 300000 स्वीकृति के पश्चात ''माँ लक्ष्मी व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र अस्तित्व में आया''।

आज प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के अन्तर्गत पंजीकृत केन्द्र न केवल दीपिका को लक्ष्य की तरफ बढ़ा रहा है, बल्कि युवाओं, महिलाओं और जरूरतमंद हर वर्ग के लिए कौशल प्राप्त कर बेहतर जीवन का साधन भी है।

25 से 30 हजार रूपये की आय और 4 लोगों को अजीविका प्रदान करने वाली दीपिका कहती है कि केवल आय अर्जित करना उनका लक्ष्य नहीं है, अपितु वह इससे अधिक आय नौकरी कर अर्जित कर सकती थी। असल में जब कोई प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वाभिमान और कौशल के साथ बेहतर जीवन की तरफ बढ़ता है तो उसके चेहरे पर खिलने वाली, उसकी सफलता बयाँ करने वाली मुस्कान ही मेरा लक्ष्य है।

हमें क्या मिला इससे ज्यादा यह सोचना की हम क्या दे सकते हैं सही मायनों में इसी को जीवन कहते हैं।

# हुनर से उगता एक नाम : जमाल

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | मो0 अरषद जमाल | मासिक आय | 40 हजार रूपए |
| पता/मो0 | दरभंगा, बिहार | टर्न-ओवर | 9.50 लाख रूपए |
| कार्य | जमाल एण्ड फैशन | | |

एक कहावत है कि ''मन के हारे हार है और मन के जीते जीत'' यह कहानी उस व्यक्ति की है जिसने डर को पीछे छोड़ अपने कदम उज्जवल भविष्य की ओर बढ़ाकर अपने सपनों को हकीकत में बदला है। अगर सही सपनों के साथ, सही दिशा में कदम बढ़ाया जाता है तो निश्चय ही उस राह पर सफलता हमारा इन्तजार करती है। राह में अगर हताशा जरा सा भी हमारे मन में घर कर जाती है तो हमें राह बदलने के लिए मजबूर कर देती है। इन्ही कुछ सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ रहे थे मौ0 अरशद, जिनकी सही सोच उन्हें आगे बढ़ने में मदद कर रही थी।

मो0 अरशद जमाल के पिता लहरिया सराय, दरभंगा ( बिहार ) में जनरल स्टोर की दुकान चलाते थे। थोड़ी बहुत खेती बाड़ी थी उसी से अपने चार बच्चों का भरण-पोशण करते थे। मो0 अरशद जमाल चार भाई-बहनों में सबसे बड़े थे और बड़े होने के नाते परिवार की आर्थिक स्थिति के बारे में उन्हें सबसे अधिक पता था। दुकान एवं खेती करके घर का खर्च चल रहा था। परन्तु हालात ने ऐसी करवट बदली कि उनकी स्थिति पूर्व की भाँति न रही। उनके पिता ने अपने बच्चों को योग्य बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। परिवार की आर्थिक स्थिति को देखते हुए अरशद दिल्ली ( नोएडा ) में अपने रिश्तेदार के यहाँ आए और नौकरी कर पिताजी का हाथ बटाँने में मदद् करने की सोची।

नोएडा में आने के बाद कुछ दिन इधर-उधर नौकरी की तलाश करने में लग गये। 2-3 नामीगिरामी कम्पनियों में नौकरी भी की। नौकरी के दौरान ही अरशद को निसबड, नोएडा संस्थान के बारे में अपने किसी दोस्त से पता चला। संस्थान में आकर उसने अपना प्रवेश उद्यमिता विकास कार्यक्रम में करा लिया। उस

समय अरशद नोएडा में किसी कम्पनी में फील्ड की नौकरी किया करते थे और नौकरी से समय निकाल कर 3 माह का प्रशिक्षण पूर्ण करने के उपरान्त ''उद्यमिता विकास कार्यक्रम'' में भाग लेकर उद्यमिता एवं उद्यमी के गुण, उद्यमी की भूमिका एवं कार्य का ज्ञान प्राप्त किया।

अब तक उसके हुनर में और निखार आ चुका था। अपने स्वरोजगार स्थापित करके भविश्य को उज्जवल बनाने की उत्सुकता को लिए मौ0 अरशद अब एक नई राह चुनने जा रहे थे। उन्हें उद्यमी की भूमिका एवं गुण, कारगार ढंग से निभाने हेतु उद्यमिता प्रशिक्षण, कौशल का ज्ञान, वित्तीय सहायता इत्यादि की आवश्यकता थी। परन्तु मन ही मन एक भय भी सता रहा था कि नौकरी भी छुट गई और अगर अपना काम भी सही तरीके से नही चल पाया तो मेरे परिवार का क्या होगा इन्हीं विचारों ने उसके स्वयं के उद्यम लगाने के सपने टूटते जा रहे थे। कुछ समय पश्चात् अरशद का विवाह हो जाने से घर की जिम्मेदारी और बढ़ गयी। समय कटता जा रहा था।

नौकरी करके बचाये लगभग 40 हजार रूपये से दिल्ली के होलसेल मार्केट से सामान खरीदा और अपने गाँव बिहार आकर ''जमाल एण्ड फैशन'' नाम से दुकान खोल दी।

धीरे धीरे ''जमाल एण्ड फैशन'' एक जाना माना नाम बन गया। 40 हजार वाली इस इकाई का वार्षिक टर्नओवर रू0 7 लाख बन चुका है। उनकी इस इकाई में आज 02 कर्मचारी कार्यरत है जिनका कहना है कि आज वह जो अपना काम कर रहे हैं वह केवल उनके मालिक मौ0 अरशद की वजह से हैं जिन्होंने उनके हुनर को पहचाना और आगे बढ़ाया।

इसका श्रेय अरशद अपनी मेहनत, लगन के साथ-साथ संस्थान को भी देते हैं जिसकी सहायता से आज इस मुकाम पर पहुँच कर अरशद प्रगति की ओर अग्रसर हैं।

# छत्रक

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | बबीता सिंह | मासिक आय | 60-70 हजार रूपए |
| पता/मो0 | ऋषिकेश/9084044868 | टर्न-ओवर | 9.50 लाख रूपए |
| कार्य | मशरूम स्पान | | |

मैं बबीता सिंह श्यामपुर ऋषिकेश, उत्तराखण्ड से हूँ। मैने जीव विज्ञान से स्नातक किया है। शादी के 17 साल बीत चुके थे परन्तु मेरे मन में हमेशा रहता था कि मैं कुछ ऐसा अनोखा और खास काम करूं, जो मेरे लिए आय का एक साधन बन सके और साथ ही साथ दूसरे लोगों को भी नौकरी दे सकूं तथा आस-पास रहने वाली महिलाओं को भी कुछ काम सिखा सकूं जोकि उनके लिए भी आय का साधन साबित हो।

पति आई0टी0आई क्षेत्र में अपना स्वयं का उद्यम स्थापित कर कार्य कर रहे हैं, ऐसे में उनको देख मैं भी कुछ अलग सा प्रारम्भ करना चाहती थी।

किसी प्रशिक्षण के सन्दर्भ में मेरा निसबड, संस्थान में जाना हुआ, जहाँ प्रशिक्षण के दौरान स्वरोजगार स्थापित करने के लिए पूर्ण जानकारी प्रदान की गई थी। ऐसे मैं निसबड, संस्थान के सम्पर्क में आकर मैने मशरूम स्पांन का प्रशिक्षण प्राप्त कर खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड से PMEGP योजनान्तर्गत 3.5 लाख का ऋण हेतु आवेदन किया, जो कि स्वीकृत हो गया है।

आज मैं अपने चार ( 04 ) कर्मचारियों के साथ प्रति माह 70 से 80 हजार का कारोबार करने के साथ-साथ मशरूम स्पांन का प्रशिक्षण भी अन्यों को प्रदान कर रही हूँ। साथ ही साथ स्वरोजगार हेतु प्रेरित भी कर रही हूँ।

परिस्थितियॉ कैसी भी हो हम अपने मनोरथ से सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अपने सपने को पंख मिल जाते हैं, जब आप हौसले के साथ शुरूआत करते हैं।

# कामयाबी की ओर बढ़ते कदम

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | दीक्षा रावत | मासिक आय | 10-15 हजार रूपए |
| पता/मो0 | डोईवाला, देहरादून | टर्न-ओवर | 4.00 लाख रूपए |
| कार्य | ब्यूटी पार्लर | | |

मेरा नाम दीक्षा रावत है। मेरा जन्म उत्तराखण्ड राज्य, पौड़ी जिले के खिरसू ग्राम में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ, मेरे पिता ने एक छोटी सी नौकरी करके हमारा पालन-पोषण एवं पढ़ाई-लिखाई कराई। मेरी माता एक गृहणी हैं तथा हम दो बहनें व एक छोटा भाई है। मेरी प्राथमिक शिक्षा खिरसू के ही एक सरकारी स्कूल से हुई और उसके पश्चात मेरे पिताजी रोजी रोटी की तलाश करते हुए देहरादून जिले के डोईवाला में आकर रहने लगे। आगे ग्रेजुएशन एवं उसके बाद पोस्ट ग्रेजुएशन की पढ़ाई मैनें यहीं पूरी की। जब में ग्रेजुएशन प्रथम वर्ष में ही थी तो एक दुर्घटना में मेरे पिताजी की अकस्मात मृत्यु हो गई जिसके कारण हमारा परिवार एकदम टूट गया। मेरी माता जी के सामने परिवार को चलाने की बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो गई।

जीवन के इस मुश्किल समय में वर्तमान और आने वाला भविष्य अंधकारमय नजर आने लगा। निराशा के इस दौर में किसी परिचित द्वारा ब्यूटीशियन पर आधारित प्रशिक्षण की जानकारी मिली यहीं से अपनी पहचान बनाकर अपनी जिन्दगी को बदलने का रास्ता नजर आने

लगा। हमें ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण बहुत ही अच्छे ढंग से कराया जा रहा था वो भी बिल्कुल नि:शुल्क। मैनें इस प्रशिक्षण में प्रवेश लिया तथा प्रशिक्षण पूर्ण किया। इस कार्यक्रम में मैनें ब्यूटीशियन के अलावा और भी बहुत कुछ सीखा जैसे कि जीवन में कभी हार नहीं माननी चाहिए, अपना उद्यम कैसे प्रारम्भ करें तथा उसे आगे कैसे बढ़ायें, पैसे का लेनदेन व खर्चों का हिसाब किताब रखना, ग्राहक से कैसे बात करनी है आदि-आदि। इस कोर्स में सभी ने बहुत सहयोग

किया तथा हम सभी ने बहुत कुछ सीखा व अपना आत्मविश्वास बढ़ाया।

इस कोर्स को पूरा करने के बाद मैंने अपने घर पर ही एक पार्लर खोला तथा अपने ही साथ में ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली 2 लड़कियों को साथ में लेकर अपना काम शूरु

कर दिया है।इस पार्लर ने मेरी अधूरी पहचान को पूरा किया। अब में इस पार्लर से प्रतिमाह 10 से 15 हजार रुपये कमा लेती हूँ जिससे मैं अपने घर को चलाने में मद्द भी कर पाती हूँ।

समान परिस्थिति में कोई निखर जाता है और कोई बिखर जाता है। हमारी सफलता और असफलता को हमारे द्वारा किये गये रणनीतिगत प्रयास हमारी मजबूत इच्छाशक्ति परिभाषित करते है। अपने मनोबल और प्राप्त किये गये मार्गदर्शन के आधार पर हम प्रतिकूल समय को भी अनुकूल बनाकर स्वयं और दूसरों को बेहतर जीवन का आधार दे सकते हैं।

# रूप निखार

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | मोना शर्मा | लागत | 2 लाख रूपए |
| पता/मो0 | डोईवाला, देहरादून | टर्न-ओवर | 3.00 लाख रूपए |
| कार्य | ब्यूटी पार्लर | | |

स्वावलम्बन की डगर पर चलने वाली मोना शर्मा, ग्वालियर में अपने पिताजी श्री वासुदेव शर्मा के सानिध्य एवं लाड-प्यार में बड़ी हुई। उन्होंने अपनी पुत्री को हाई स्कूल तक की शिक्षा ग्वालियर के एक प्रतिष्ठित विद्यालय से दिलायी थी। उसका स्वप्न था आत्मनिर्भर होना इसे पूर्ण करने के लिए उसे तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त करने की आवश्यकता थी परन्तु पिता की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न होने के कारण किसी तकनीकीय विद्यालय में प्रवेश पाना सम्भव नहीं था। परन्तु पिता प्रयासरत तो थे, इसी बीच मोना का विवाह खोड़ा, नोएडा ( उ0प्र0 ) निवासी श्री मुकेश शर्मा के साथ सम्पन्न हुआ, पति एक फैक्ट्री में कार्यरत थे।

पत्नी की इच्छा का जब मुकेश को पता चला कि वह परिवार की आय बढ़ाने के लिए नव प्रवर्तन कार्य करना चाहती है। राश्ट्रीय उद्यमिता एवं लद्यु व्यवसाय विकास संस्थान ( निसबड ), नोएडा ( उ0प्र0 ), खोड़ा के समीप होने के कारण मुकेश को निसबड में होने वाली प्रशिक्षण कार्यक्रमों का ज्ञान पूर्व से था अपितु मोना ( पत्नी ) के साथ निसबड जाकर वहाँ चलाए जाने वाले कौशल उन्नयन कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त की, अब मोना के समक्ष उसका लक्ष्य था अब इन्होंने निसबड से मार्गदर्शन प्राप्त करना था एवं कौशल उन्नयन का प्रशिक्षण प्राप्त करना था इन्होंने ब्यूटीशियन एवं गारमेंट मेकिंग का प्रशिक्षण प्राप्त किया। कौशल का ज्ञान प्राप्त करने के उपरान्त इन्हें अपना उद्यम स्थापित करना था, इसे

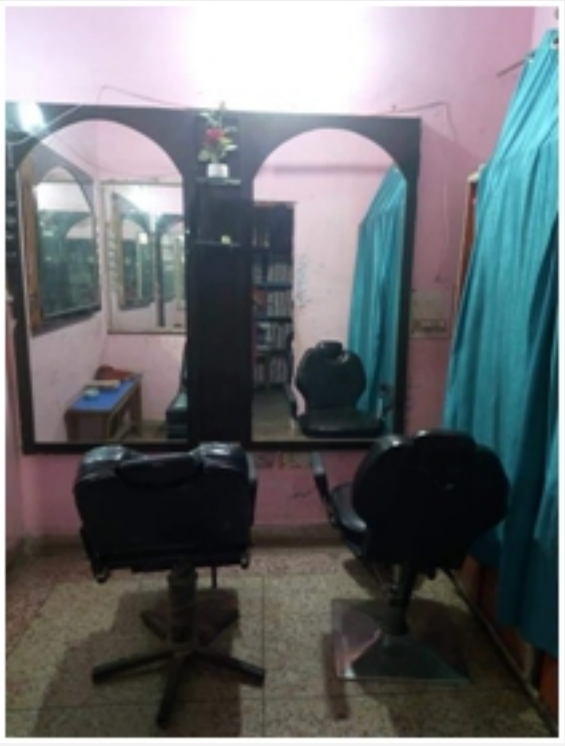

आयोजित एवं प्रबंधन करने के लिए जोखिम को स्वीकार करना था, तभी इन्हें ज्ञात हुआ कि निसबड ( EDP ) उद्यमिता विकास कार्यक्रम, नये उद्यमी जो अपना उद्यम स्थापित करने जा रहे हैं उनके लिए कार्यक्रम आयोजित करने जा रहा है। तदुपरांत प्रवेश प्राप्त किया और उद्यमिता के गुणों की जानकारी प्राप्त की, अभिनव विचार एवं सेवाओं को अग्रसारित करने के गुण संसाधनों में काम आने वाली वस्तुओं एवं सेवाओं को आयोजित कर विपणन सम्बन्धी कार्य का ज्ञान प्राप्त किया।

वर्ष 2015 में पति के सहयोग से 2 लाख रूपये लागकर रूप निखार पार्लर की स्थापना की, चूँकि निरंतर इसी क्रम में प्रगति की राह पर चलना उद्देश्य था, साथ ही ट्रेनिंग सेंटर स्थापित करने का प्रयास करने के साथ एक कॉस्मेटिक की दुकान का भी शुभारम्भ किया।

इस समय मोना शर्मा के अपने दो ब्यूटी पार्लर, ट्रेनिंग सेंटर, ब्यूटीशियन एवं सिलाई केन्द्र के अतिरिक्त एक कॉस्मेटिक की दुकान से लगभग 3 लाख से 3.5 लाख शुद्ध वार्षिक आय है।

निसबड द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन एवं अपने कौशल के आधार पर आज मोना शर्मा स्वावलम्बन की डगर पर अग्रसारित है और निरंतर प्रगति एवं श्रेष्ठता सम्बन्धित कार्यों में प्रयासरत रहती है, सभी के लिए यह प्रेरणा श्रोत है जो स्वावलम्बी बनकर जीना चाहते हैं।

# निखरता रूप , संवरता भविष्य

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | प्रतिभा सिंह | मासिक आय | 15.20 हजार रूपए |
| पता/मो0 | दिल्ली | टर्न-ओवर | 3.00 लाख रूपए |
| कार्य | ब्यूटी पार्लर | | |

आशावादी मनुष्य कठिनाईयों में अवसर खोजता है प्रतिभा सिंह ने भी अपने बुरे समय, गरीबी में भी अवसर खोज स्वावलम्बी बनकर दिखा दिया।

प्रतिभा का पालन पोषण एक गरीब परिवार में हुआ, बचपन में ही उसे अपने परिवार की गरीबी का अहसास तो था, परन्तु उसकी आशावादी सोच ने इस संकट की घड़ी में व्यवसाय के अवसर खोजना आरम्भ किया अपनी माता से घर पर ही सिलाई का कार्य सीखा था शुरूआत के दिनों में धन अर्जन का साधन बनाया। उसी कार्य को ही पड़ोसियों के कपड़े सिलाई करके धन अर्जित कर अपने परिवार की माली हालात में सुधार किया। अब उसे इस कौशल व्यवसाय में श्रेश्ठता लानी थी इसलिए वह इसके श्रेष्ठता के प्रयास में लग गयी उसे कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता थी इसी बीच उसका विवाह श्री नीलेश चौहान के साथ हुआ।

नीलेश ने अपनी पत्नी की सिलाई कौशल देखकर बहुत सराहा। एक दिन समाचार पत्र में ब्यूटीशियन का कौशल उन्नयन कार्यक्रम के बारे में पढ़ा तब निसबड संस्थान में आकर प्रतिभा का प्रवेश कराया। 3 माह का पाठ्यक्रम पूर्ण करने के उपरान्त उद्यमिता विकास कार्यक्रम में भाग लेकर उद्यमिता गुण, उद्यमी की भूमिका एवं कार्य का ज्ञान प्राप्त किया। अब प्रतिभा सिंह की प्रतिभा में चार चांद लग चुके थे। अपने पति एवं रिश्तेदारों की सहायता से 1.5 लाख लगाकर अपने ही क्षेत्र जी.डी. कालोनी, मूयर विहार फेस-3 में एक ब्यूटीपार्लर शुरू किया। प्रतिभा

का दृढ़ विश्वास और उनकी योग्यता ने वार्षिक टर्न ओवर 2.5 से 3 लाख तक पहुँचा दिया। प्रतिभा आज भी निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रयासरत रहती है।

प्रतिभा को अपनी पुरानी रूचि सिलाई जोकि अपने माता के घर से सीखी थी उसे भी धनार्जन के रूप में नया आयाम देना था कतिपय फैशन डिजाईनिंग का भी 3 माह का कोर्स करके अपने कौशल में श्रेश्ठता एवं योग्यता ग्रहण की। सिलाई से अतिरिक्त आय 5 हजार होने लगी। प्रतिभा एक बुटीक खोलने का भी स्वप्न देख रही है जिसे शीघ्रतिशीघ्र साकार करने का लक्ष्य है। प्रतिभा सिंह इस सफलता का श्रेय निसबड एवं अपने पति के मार्ग दर्शन को देती है। वह आशावादी सोच के साथ निरन्तर प्रगति और श्रेष्ठता के पथ पर निरंतर अग्रसर है।

# स्वाद बना पहचान

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | धन सिंह | लागत | 2 लाख रूपए |
| पता/मो0 | रूद्रप्रयाग/8171363052 | टर्न-ओवर | 10 लाख रूपए |
| कार्य | हिमालयन जूस सेन्टर | | |

कौशल के माध्यम से कुशल भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए समाज के सभी वर्ग विशेषकर युवा वर्ग प्रतिबद्व होकर अपना योगदान दे रहा है। उत्तराखण्ड के जिला रूद्रप्रयाग खण्ड विकास उखीमठ मनसूना ने कौशल को न केवल आजीविका का आधार बनाया बल्कि अन्य लोगों को भी कौशल प्रदान कर स्वरोजगार एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए।

परिवार से मिले संस्कार एवं शिक्षा से सदैव दूसरों के लिए समर्पित भाव से कार्य करने की भावना बचपन से ही धनसिंह को लोकहित के कार्य के लिए प्रेरित करते रहते थे। शिक्षा ग्रहण करते ही वर्ष 2007-08 में राजकीय पूर्व माध्यमिक विद्याालय, जलई, रूद्रप्रयाग से फल एंव सब्जी संरक्षण की शिक्षा प्रथम स्थान में प्राप्त कि जिसके उपरान्त धनसिंह के मन में अपने गॉव एवं क्षेत्र के लिये कुछ करने की भावना उत्पन्न होने लगी पर इसकी शुरूआत कहाँ से और कैसे करनी है यह स्पष्ट नही हो पा रहा था। इसी उधेड़बुन के बीच सन 2018 में धनसिंह ने निसबड़, संस्थान द्वारा आयोजित खाद्य प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग पर आधारित उद्यमिता कौशल विकास कार्यक्रम में भाग लिया। जहां उसने फल प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग पर कौशल के साथ-साथ उद्यम स्थापना एवं उद्यमिता की प्ररेणा, वित्तीय प्रबंधन, बाजार सर्वेक्षण एवं समस्त विभागों से उद्यम स्थापित करने हेतु योजनाओं में उपलब्ध अवसरों की जानकारी प्राप्त की।

धन सिंह के जीवन में समय ने करवट ली और

मुश्किल दिनों से उसका आमना -सामना करवाया। बहनों की शादी और पिताजी की मृत्यु के बाद परिवार की जिम्मेदारी धनसिंह के कन्धों पर आ गई । इस मुश्किल समय से उभरते हुए धनसिंह ने अपने गाँव में फल एवं सब्जी संरक्षण् नाम से कौशल प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की। कुल दो लाख की प्रारम्भिक लागत से तैयार केन्द्र आज कई युवाओं की आशा का केन्द्र है। जहां पर फल एंव सब्जी संरक्षण कार्य के साथ प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

वर्तमान में चार कर्मचारियों के साथ कार्य करने वाले धन सिंह ने डिजीटल भारत को साकार करने की मुहिम में अपना योगदान दिया है। पैंतीस हज़ार रूपये मासिक कमा कर धनसिंह ने अपने परिवार का बेहतर भरण पोषण करने के साथ क्षेत्र के युवावों को उद्यमिता हेतु प्रेरित करने का कार्य भी कर रहे हैं।

सशक्त भारत की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में धन सिंह एक मजबूत हस्ताक्षर के रूप में उभर कर राष्ट्र निर्माण में अपना सहयोग प्रदान कर रहे है।

# वसनंदना

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | वन्दना शर्मा | लागत | 8 लाख रूपए |
| पता/मो0 | देहरादून | टर्न-ओवर | 14 लाख रूपए |
| कार्य | वंदना बुटीक | | |

सुन्दर दिखना एक मानवीय गुण है और हमारे परिधान सौन्दर्य के साथ हमारी संस्कृति का भी प्रतीक माने जाते है। यही कारण है कि विविध संस्कृति और सभ्यता वाले भारत मे वस्त्र एक व्यापक उद्योग के रूप में विकसित है। भारत के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व में वस्त्र उद्योग करोड़ों लोगों की आय का साधन है।

भारत को त्यौहारों का देश कहा जाता है। हर त्यौहार पर परिधानों ( वस्त्रों ) का विशेष महत्व रहता है, और यही महत्व वस्त्र उद्योग को सिंचित करने का कार्य करता है।

विकसित इस उद्योग को अपनी आजीविका के साधन के तौर पर अपनाकर वंदना ने न केवल अपने आपको सशक्त किया, बल्कि अन्य को भी आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाया है।

मूल रूप से उत्तराखण्ड के बागेश्वर की रहने वाली वंदना के पिता सेना में थे जिस कारण उनकी शिक्षा भारत के विभिन्न राज्यों से हुई। बचपन से ही कपड़ों के प्रति उनका आकर्षण एवं उन्हें नये रूप देना उनका शौक था, इसी कारण स्नातक की शिक्षा उन्होंने फैशन डिजाईनिंग में सन् 2002 में पूर्ण की। इसके बाद

वंदना ने विभिन्न संस्थानों में प्रशिक्षक के रूप में कार्य किया। सन् 2005 में विवाह के उपरान्त देहरादून में स्थायी तौर पर निवास करने के कारण उन्होंने देहरादून को ही अपनी कर्मभूमि बनाकर प्रशिक्षक के कार्य को सतत् रूप से जारी रखा।

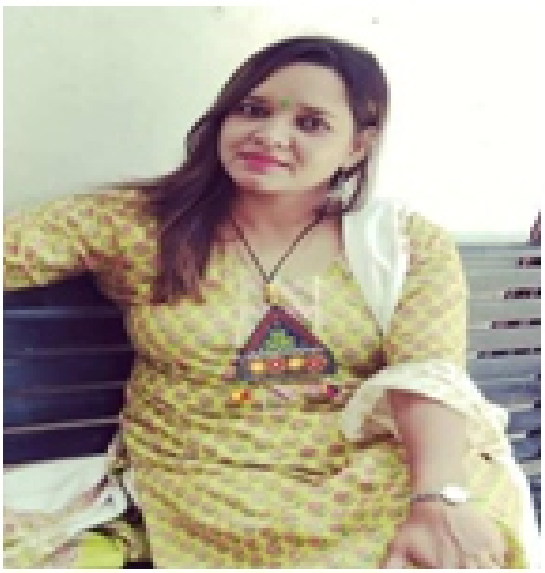

अपने कौशल को अपने नाम से पहचान दिलाने की लालसा ने स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया। उद्यम स्थापना की परिकल्पना को यथार्थ रूप देने से वह निसबड, संस्थान के सम्पर्क में आई।

संस्थान ने पीएमईजीपी योजना के अंर्तगत उन्हें उनको आवेदन करने में सहयोग किया, जिस कारण वर्श 2017 में रू. 8 लाख के ऋण की स्वीकृति होने के उपरांत ''वंदना बुटीक'' अस्तित्व में आया।

आज वन्दना बुटिक अपने आकर्षक परिधानों के साथ प्लास्टिक उत्पादों को प्रयोग से हटाने के लिये पर्यावरण अनुकूल उत्पादों को भी बनाने का कार्य बुटीक के अर्न्तगत किया जाता है।
आज वन्दना अपने उत्पादों से अपनी उत्कृष्ट पहचान बनाने के साथ-साथ 6 अन्य लोगों के आजीविका का साधन भी है।

# परिधान से परिणाम तक

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | अंजना | मासिक आय | 10-15 हजार रूपए |
| पता/मो0 | डोईवाला, देहरादून | टर्न-ओवर | 2.20 लाख रूपए |
| कार्य | फैशन डिजाइनिंग | | |

उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून के समीप डोईवाला ब्लाक निवासी अंजना का जीवन समाज के लिए किसी प्रेरणा से कम नहीं है। विषम परिस्थियों को भी अपने मनोबल से अपने और समाज के अनुकूल किया जा सकता है। ये पक्तियाँ अंजना के जीवन को भली-भांति चरितार्थ करती हं।

अंजना का जीवन आर्थिक तंगी के कारण सामाजिक रूप से भी कमजोर था। दो पुत्रियों की पढ़ाई-लिखाई और परिवार की पूरी जिम्मेदारी पति की दैनिक आय पर निर्भर थी। मजदूरी का कार्य करने वाले अंजना के पति को नियमित रूप से काम न मिलने के कारण स्थिति और भी प्रतिकूल थी। ऐसे में बच्चों की शिक्षा परिवार खर्च एक चुनौती बन कर संकटग्रस्त भविष्य की तरफ जीवन को मोड़ रही थी। एक महिला के लिए घर से बाहर निकल कर काम करना किसी भी चुनौती से कम नहीं था। इसके बावजूद अंजना ने हालात से मुकाबला करते हुये ना केवल सामाजिक बंदिशों को तोड़ा, बल्कि खुद सफलता के मुकाम को छूने के साथ आज कई महिलाओं को रोजगार भी दे रही हैं।

प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच अंजना के जीवन में एक उम्मीद के तौर पर संस्थान द्वारा श्रमिकों की आश्रित महिलाओं के लिए चलाया जा रहा प्रशिक्षण कार्यक्रम सामने आया। कौशल परक प्रशिक्षण प्राप्त कर अंजना ने संस्थान के सहयोग से सिलाई कार्य घर से ही आरम्भ किया। जिससे वह अपनी मेहनत और संस्थान के मार्गदर्शन से एक स्थायी रूप प्रदान कर सकी।

आज अंजना 10,000 से 15,000 प्रतिमाह कमा कर अपनी पारिवारिक आय में एक महत्वपूर्ण स्तम्भ बन कर अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के साथ अन्य महिलाओं को भी प्रशिक्षित कर अपने जीवन को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त कर रही हैं।

अंजना उन महिलाओं के लिए एक प्रेरणा हैं जो अभावों को अपनी नियती मान कर कष्टपूर्ण जीवन जी कर खुद को और देश को कमजोर कर रही हैं। अपने संबल और सकारात्मक मार्ग-दर्शन से न केवल अपने जीवन को बेहतर किया जा सकता है बल्कि औरों को भी रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जा सकते हैं। अंजना महिलाओं को आर्थिक के साथ-साथ सामाजिक स्तर पर सशक्त होने के लिए प्रेरित करती रहती है।

# परिधान से पहचान

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | अंजुम | मासिक आय | 10-15 हजार रूपए |
| पता/मो0 | गाजियाबाद | टर्न-ओवर | 3 लाख रूपए |
| कार्य | फैशन डिजाइनिंग | | |

कुछ लोग अपनी नाकामयाबी और दूसरों की कामयाबी का ठीकरा किस्मत पर फोड़ देते हैं। मेरा मानना है कि किस्मत महज एक संयोग है, सकारात्मक सोच, मानसिक सतर्कता, दृढ़ संकल्प, समर्पण और गुजरते हुए मौकों एवं सकारात्मक सोच रखते हुए मानसिक सर्तकता के साथ गुजरते हुए मौकों को हासिल कर पूर्ण समर्पण और दृढ़ संकल्प के साथ अगर कोई कार्य किया जाए तो सफलता निश्चित ही होगी। चूँकि और किस्मत कभी खराब नहीं हो सकती इसके बावजूद यदि ऐसा होता है तो इसका मतलब है कि आपने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं दिया।ऐसा ही कुछ घटित हुआ हरियाणा की अंजुम के साथ दृढ़वादी अंजुम का जन्म हरियाणा के यमुना नगर जिले में एक निम्नवर्गीय परिवार में हुआ था।

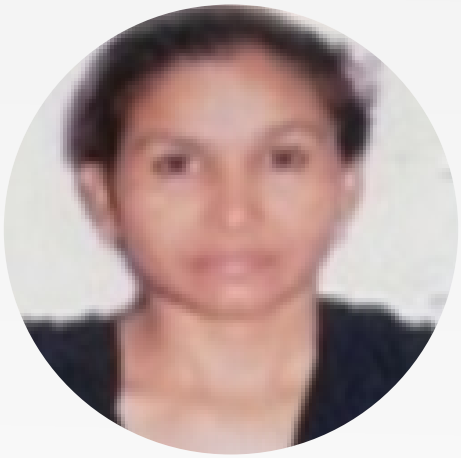

अंजुम को बचपन से ही पढ़ाई-लिखाई में बहुत रूचि थी उसका सपना था कि वह पढ़-लिखकर नौकरी करे और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में मदद कर एक अच्छा जीवन यापन करे, जब भी वह अपने गाँव और समाज की शिक्षित महिलाओं को नौकरी पर जाते हुए देखती थी उस समय उसका भी मन नौकरी/काम पर जाने को करता था। किंतु परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न होने के कारण उसका वह सपना पूर्ण न हो सका। वह सिर्फ 8वीं कक्षा तक ही पढ़ सकी। इसी बीच अंजुम का निकाह खोड़ा, नोएडा (उ0प्र0) निवासी श्री अफजल अहमद के साथ सम्पन्न हुआ। पति घरों की पुताई का कार्य करते थे। पति की आय इतनी नहीं थी कि घर का खर्च पूरा हो सके। समय बीतता गया और परिवार में तीन संतान हुई, जिसमें 2 बेटे और एक बेटी का जन्म हुआ। परिवार बढ़ा, खर्चे बढ़े किन्तु आय नहीं बढ़ी। स्कूल में तीनों बच्चों का दाखिला कराया। परिवार की आर्थिक हालत बद से बदतर और दयनीय हो गयी। बच्चों के स्कूल का खर्च उठा

पाना असंभव सा होने के कारण बच्चों का नाम स्कूल से कटवा लिया।

अंजुम सोच रही थी कि मैं आर्थिक अभाव में नहीं पढ़ पाई किन्तु अपने बच्चों के साथ ऐसा नहीं होने दूंगी। उसने दृढ़ निश्चय किया कि वह किसी भी सूरत में अपने बच्चों के साथ ऐसा नहीं होने देगी। बच्चों को अच्छी शिक्षा देगी ताकि उसके बच्चों को भी ऐसे दिन न देखने पड़ें। वह अच्छी तरह से जानती थी कि शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिससे इंसान स्वयं को और अपने समाज को बेहतर बना सकता है। इंसान की जैसी सोच और नीयत होती है उस तरह ही घटनाएँ उस इंसान के साथ घटित होती हैं। ( सकारात्मक हो या नकारात्मक )। जब तक अंजुम अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति एवं उनके भविष्य के प्रति चिंतित होकर परेशान होती और नकारात्मकता का शिकार होती एससे पहले ही उसने आशा की एक किरण देखी जो उसके सपनों को हकीकत में बदल सकती थी।

इस बीच उन्हें राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान ( निसबड ), नोएडा ( उ0प्र0 ), के बारे में जानकारी मिली और पता चला कि निसबड में अनेक कौशल परक एवं उन्नयन के तकनीकी एवं उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम नि:शुल्क होते हैं। अंजुम का घर निसबड संस्थान के निकट होने के कारण उसने सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम में दाखिला लिया।

घरेलू खर्च से कुछ रूपये बचाकर उसने वर्ष 2015 में रू0 3000/- की एक सिलाई मशीन खरीदी और निसबड से प्राप्त कौशल का उपयोग कर घर में ही आस-पास के लोगों के कपड़े सिलने लगी। शुरूआत में अंजुम की आय रू0 6-8 हजार प्रतिमाह होती पर समय के साथ-साथ काम बढ़ने लगा, हुनर में निखार आने लगा तथा काम के साथ-साथ उसका मनोबल भी बढ़ने लगा जो अंजुम के लिए भी बहुत जरूरी था।

निसबड द्वारा दिए गए मार्गदर्शन एवं अपने कौशल के आधार पर आज अंजुम 15 से 20 हजार रूपये प्रतिमाह कमाती है और अंजुम ने अपने साथ औरों को भी रोजगार दिया हुआ है। इसके साथ-साथ अंजुम के बच्चों की शिक्षा जिस अभाव में छूट गई थी वह आज फिर से शुरू हो चुकी है। इसका सम्पूर्ण श्रेय अंजुम निसबड संस्थान को देती है। और भविष्य में और कुशलता के स्वप्न देखती है।

एक बहुत ही महत्वपूर्ण कविता के दो पंक्ति जो ''सोहन लाल द्विवेदी'' द्वारा रचित हैं:-

''लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती कोशिष करने वालों की हार नहीं होती''

यह तभी मुमकिन हो सकता है जब व्यक्ति सकारात्मक सोच रखे साथ ही कड़ी मेहनत और कर्म पर विश्वास रखे।

# स्वाद से बनी पहचान

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | जगवीर सिंह | लागत | 2 लाख रूपए |
| पता/मो0 | देहरादून/7467848017 | टर्न-ओवर | 5 लाख रूपए |
| कार्य | सुभद्रा ग्रामोद्योग | | |

रौबीला व हंसमुख चेहरा और उस पर सफेद सघन घनी घुमाऊदार मूछें, ढीला-ढाला सफेद कुरता पजामा पहने मदमस्त चाल के साथ हाथ में अचार-चटनी के डब्बों से भरा थैला लिये एक 60 साल का व्यक्ति अक्सर बाजार में दिखाई देता है। ''बाबा जी राम-राम'' की आवाज पर किसी दुकान पर रूक कर अचार-चटनी से भरा थैला दुकान में देकर कुछ पैसे लेकर दुआ सलाम करता हुआ आगे बढ़ जाता है। यह बात हो रही है मूलरूप से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मुज्जफरनगर के रहने वाले जगवीर सिंह की, जिन्होंने अपने जीवन का अधिकतम समय उत्तराखण्ड के देहरादून में बिताया।

उत्तर प्रदेश के मुज्जफरनगर के रहने वाले जगवीर सिंह का विवाह सुभद्रा देवी के साथ हुआ। गांव में जमीन जायदाद भी थी लेकिन बेहतर भविष्य की चाह को लेकर उन्होंने गाँव की अपनी जमीन का कुछ हिस्सा अपने भाई को देकर जीविकोपार्जन के लिए दिल्ली चले गए वहां उन्होंने परचून की दुकान खोली जिसे उन्होंने अपनी मेहनत और कुशल व्यवहार से बेहतर स्थिति में ला खड़ी की। उनका व्यवसाय ठीक चल रहा था पर नियति को कुछ और ही मंजूर था। समय के साथ-साथ उनका स्वास्थ खराब होने लगा जिस कारण दिल्ली की दुकान अपने भाई को देकर वह घर लौट आए। अपने अनुभव स्वरूप घर पर ही आचार, जेम जैली, मुरब्बा बनाने का कार्य शुरू किया जिसे उन्होंने आस पास के घरों पर बेचना शुरू किया। कम आय, दो पुत्रियों और परिवार की जिम्मेदारियों ने उनको एक बार फिर घर से बाहर उम्मीदों की तलाश में भेजना शुरू किया।

जीवन के उतार-चढ़ाव और संघर्षों

के बीच आज से 20 वर्ष पूर्व सुखद भविष्य की तलाश में जगवीर सिंह देहरादून आये थे। अपने सहयोगी की सहयता और स्वयं के निवेश से किराये पर दुकान लेकर परचून के कार्य से काम करना प्रारंभ किया। जब तक कार्य को गति मिल पाती दुकान के मालिक द्वारा दुकान बेच दी गयी। जिससे उन्हें दुकान बीच में ही खाली करनी पड़ी।

जगवीर घर पर अचार बनाने का काम करने लगे पर जीविकोपार्जन के लिये उन्होंने किराये पर 2 वर्ष के अनुबन्ध पर खाने का होटल/ढाबा खोला। ढाबे पर आने वाले लोगों को खाने के साथ अचार और चटनी का स्वाद भाने लगा। सब कुछ ठीक चल रहा था पर फिर एक बार जगबीर सिंह को संघर्ष का सामना करना पड़ा। 2 वर्ष पूर्ण होने पर अनुबन्ध को आगे न बढ़ाते हुए दुकान मालिक ने उन्हें दुकान खाली करने को कहा। जमा-जमाया कारोबार एक बार फिर बिखर गया।

मौजूदा परिस्थितियों ने जगवीर सिंह को तोड़ कर रख दिया। पर दो पुत्रियों के भविष्य को लेकर उन्होंने फिर से शुरूआत की इस बार व्यवसाय की जगह नौकरी की तलाश शुरू की। कुछ समय बाद निजी संस्थान तथा निसबड, संस्थान मे कार्यालय सहायक का कार्य करना प्रारंभ किया। इसी बीच दोनों पुत्रियों का विवाह भी हो गया। संस्थान के कर्मचारियों एवं अन्य परिचितों के लिए अचार बनाने का कार्य अनवरत रूप से चलता रहा।

संस्थान की निदेशक डा0 पूनम सिन्हा के मार्गदर्शन पर जगवीर सिंह ने अपने इस शौक को अपनी आजिविका के मुख्य साधन के तौर पर लेते हुए दुगनी ऊर्जा से कार्य करना प्रारम्भ किया।

संस्थान के मार्गदर्शन और स्वयं की मेहनत से 2017 में उन्होंने अपने कार्य को सुभद्रा ग्रामोद्योग नाम से पंजीकृत कराया। संस्थान के सहयोग से अपने कार्य के लिऐ आवश्यक लाइसेंस प्राप्त कर आज वह कई प्रतिष्ठित ( प्रतिष्ठानों ) के लिये खाद्य पदार्थों को बनाने के साथ-साथ हाथ से बुने वस्त्रों का विक्रय भी करते हैं। 2017 में अपनी इकाई स्थापित करने के बाद संस्थान के सहयोग से उन्होंने मुद्रा योजना के तहत 2 लाख का ऋण प्राप्त कर अपने कार्य को बढ़ाकर पूरे मन और दुगनी ऊर्जा के साथ काम करना शुरू किया। अपनी मेहनत और कुशल व्यवहार से उन्होंने कम समय में ऋण की अदायगी कर बैंक में लिमिट भी बनवा ली है।

2 कर्मचारी के साथ मासिक 40,000 की आय करने वाले जगवीर सिंह मंद मुस्कान चेहरे पर लिए कहते हैं कि उतार चढ़ाव जीवन का हिस्सा है किन्तु जीवन नहीं है। सही मार्गदर्शन और आपकी इच्छाशक्ति जीवन के किसी भी आयाम को किसी भी परिस्थिति में आपका सफलता से साक्षात्कार करा ही देती है। सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ते रहिए।

# निखरती पहचान : ज्योति

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | ज्योति | मासिक आय | 15-20 हजार रूपए |
| पता/मो0 | नोएडा, गौतम बुद्ध नगर | टर्न-ओवर | 4.80 लाख रूपए |
| कार्य | ब्यूटी पॉर्लर | | |

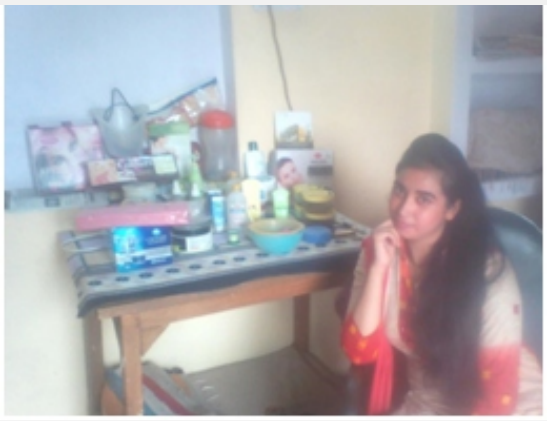

मजबूत इरादों और इच्छाशक्ति से हम सफलता के उस मुकाम पर पहुँच सकते हैं जहां हमारी उम्र से हमारी योग्यता को नहीं मापा जा सकता है।

देश की राजधानी दिल्ली के समीप सेक्टर-66 नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश की रहने वाली ज्योति ने 20 वर्ष की आयु में उद्यम स्थापित कर न केवल अपनी आजीविका अर्जित की बल्कि औरों के रोजगार का साधन बन कर उद्यम की महत्ता को चित्रार्थ किया है।

ज्योति का जन्म एक सामान्य से मध्यम- वर्गीय परिवार में हुआ। आर्थिक परिस्थिति इतनी सुदृढ़ नहीं थी कि बच्चों की हर ख्वाईश को माता-पिता पूरा कर सकें। नन्हीं ज्योति पर इसका गहरा असर हुआ उसने घर से मॉगने से ज्यादा परिवार की आय कैसे बढ़े इस विशय पर कार्य करना आरम्भ किया

अपनी इच्छाओं को योजनाबद्ध कर उन्हें वास्तविक स्वरूप प्रदान करने के लिए निसबड संस्थान से प्रशिक्षण एवं परामर्श प्राप्त किया जिससे उसे प्रशिक्षण के विभिन्न सत्र उसे जीवन के विविध आयामों की तरह लगे जिस कारण सफलता के पथ पर अग्रेसित होकर उपलब्धियों के शिखर पर पहुँचा जा सके।

प्रशिक्षण के पश्चात् ज्योति ने निजी क्षेत्र में नौकरी कर अपने व्यवसायिक जीवन शुरू किया। लक्ष्य पर सधा हुआ मन नौकरी की प्रतिबद्धता से चंचल हो गया। जिस कारण नौकरी का परित्याग कर उसने स्वयं के उद्यम स्थापित करने की पहल की। संस्थान के मार्ग-दर्शन एवं परिवारिक सहयोग से ज्योति ने अपने घर के समीप ही एक ब्यूटी पार्लर स्थापित किया। जिसका कौशल वो प्रशिक्षण से प्राप्त कर चुकी थी।

20 वर्षीय ज्योति ने अपने कौशल और उद्यमी गुणों से सफलता के पायदान चढ़ना आरम्भ किया। आज तीन वर्षों के बाद ज्योति अपने पार्लर का विस्तार करना चाहती है। वर्तमान में 15 से 20 हजार रूपये की मासिक आय के साथ अन्य कर्मचारियों को भी रोजगार देकर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त कर रही है।

# सौन्दर्य संसार की जगमग ज्योति

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | ज्योति राजपूत | लागत | 1.5 लाख रूपए |
| पता/मो0 | मथुरा | टर्न-ओवर | 4-5 लाख रूपए |
| कार्य | एन्जिल प्रोफेशनल ब्यूटी पॉर्लर | | |

श्रीमती ज्योति राजपूत एक गरीब परिवार में पली-बढ़ी, पिता एक ड्राईवर के साथ-साथ मोटर का तकनीकी ज्ञान भी रखते थे । पिता ने ज्योति को उच्च शिक्षा दिलवाई और अपने बच्चों का सदैव हौंसला बढ़ाकर उन्नति की ओर अग्रसर किया। ज्योति ने B.Sc की शिक्षा अपने पैतृक शहर मथुरा से प्राप्त की। पिता द्वारा मिले उद्देश्य का अनुसरण करके ज्योति के हौंसले बुलन्द रहे। उच्च शिखर तक पहुँचने वाले स्वप्न दृष्टया गुण विद्यमान रखने वाली ज्योति कभी भी मुश्किलों से नहीं घबराई उसने हमेशा समस्याओं का हल निकालने की कोशिष की।

आज ज्योति का अपना हँसता-खेलता परिवार है। पति श्री श्याम सुन्दर एक प्राईवेट संस्थान में नौकरी करते हैं। ज्योति को कुछ नया करने की ललक परेशान किये हुए थी पति से संकोचवश कह नहीं पा रही थी। घर की माली हालात सुधारने के लिए प्रयासरत रहना अपेक्षित था। हिम्मत बाँधकर पति से परामर्श करने के पश्चात एक ब्यूटी पार्लर प्रारम्भ करने की अनुमति प्राप्त की। अब उसे शुरू करने की चुनौती भी थी। समाचार पत्र के माध्यम से राष्ट्रीय उद्यमिता एवं

लद्यु व्यवसाय विकास संस्थान ( निसबड ), नोएडा में होने वाले प्रशिक्षण की जानकारी प्राप्त की तदुपरान्त निसबड आकर विस्तृत जानकारी प्राप्त की और 3 माह का ब्यूटीशियन के कार्यक्रम से प्रशिक्षण भी प्राप्त किया, साथ ही उद्यमिता विकास कार्यक्रम से प्रशिक्षण प्राप्त कर उद्यमी बनने के गुण सीखकर उद्यमिता की विशेषताओं का ज्ञान भी प्राप्त किया। साथ ही इन गुणों को सफलतापूर्वक अपने आप में विकसित करना था। अतः अपने कार्य को सृजनात्मक एवं नवप्रवर्तनकारी बनाना था इसके

ध्यान में रखते हुए ज्योति ने मेहंदी लगाने एवं अनके आकर्षक डिजाइन एवं नेल ( नाखून ) पर की जाने वाली कला इत्यादि कलाओं का प्रशिक्षण भी लिया ताकि वह शादी-उत्सव में अपनी कला से लाभ प्राप्त कर सके।

समय था ब्यूटी पार्लर खोलने का जोखिम उठाने जैसा कार्य करना, पति के सहयोग से 1.5 लाख रूपये लागत लगाकर, वृन्दावन गेट, गोविन्द नगर, मथुरा ( उ0प्र0 ) में एन्जिल प्रोफेशनल ब्यूटी पार्लर का शुभारम्भ। पार्लर पर कार्य करने के अतिरिक्त उत्सवों एवं शादी में जाकर दुल्हन श्रृंगार इत्यादि कार्य से भी धन अर्जित होने लगा। आज ज्योति का दृढ़ आत्मविश्वास और योग्यता उसका लगन और लक्ष्य प्राप्त करने में सहायक हुआ। उनकी लग्न, मेहनत एवं दृढ़ आत्मविश्वास ने उन्हें पूरे मथुरा शहर में प्रसिद्धी दिलाई है।

आज वर्तमान समय में ज्योति की इकाई का टर्नओवर लगभग 4 से 5 लाख रूपये है। उसकी इकाई में 2 कर्मचारी कार्यरत हैं। ज्योति सफल उद्यमी बनने का पूर्ण श्रेय निसबड को देती है। निसबड से ही गुण एवं कौशल के अतिरिक्त नवप्रवर्तनकारी, सृजनात्मक कार्य करने की सोच, पहल करने वाली योग्यता, आत्मविश्वास को दृढ़ बनाना, लक्ष्य निर्धारण जैसे गुण विकसित किए जिस कारण आज वह सफलता की बुलन्दी को छू रही है।

# हुनर से बनी पहचान

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | शशि प्रभा | लागत | 2 लाख रूपए |
| पता/मो0 | गाजियाबाद | टर्न-ओवर | 4.5-5 लाख रूपए |
| कार्य | फर्स्ट लुक ब्यूटी पॉर्लर | | |

अंतर और अक्षर का नजारा जिंदगी,
अवसर और अक्सर का नजारा जिंदगी।।

कहते हैं कि हर मनुष्य के जीवन में उतार चढ़ाव आते रहते हैं। हर इन्सान गिरता और उठता है। बस जो गिर के संभल गया वही आसमान चढ़ गया। बस जरूरत होती है थोड़ी सी मेहनत और हौंसले की। समय और अवसर हर व्यक्ति को अपने जीवन में एक न एक बार जरूर मिलता है बस हम उसको पहचान नहीं पाते। जो व्यक्ति मौजूदा अवसर को पहचान जाता है वह कामयाबी की ओर अपना पहला कदम बढ़ा देता है।

ऐसी ही कुछ कहानी श्रीमती शशि प्रभा की है।

श्रीमती शशि प्रभा, प्रतापगढ़ ( उ0प्र0 ) के एक मध्यमवर्गीय परिवार में पली-बढ़ी पढ़ाई में दिलचस्पी रखने के बावजूद शशि 12वीं कक्षा तक ही पढ़ पाई। आधुनिक सोच, उच्च विचार, आजाद पंछी की तरह उड़ने व अपनी अलग पहचान और अस्तित्व बनाने वाली शशि का विवाह गाजीपुर ( उ0प्र0 ) निवासी श्री नवीन श्रीवास्तव से बड़े-बुजुर्गों के आर्शीवाद से सम्पन्न हुआ। शशि के पति खोड़ा कालोनी, गाजियाबाद में रहते एवं उनका Security Agency का व्यवसाय था। विवाह पश्चात शशि भी पति के साथ खोड़ा कालोनी आ गयी। पति की इनकम अच्छी थी एवं गृहस्थ जीवन सुखी गुजर रहा था। इसी बीच शशि ने एक बेटी व एक बेटे को जन्म दिया। पति के ऑफिस व बच्चों के स्कूल जाने पर शशि घर पर अकेली बैठे-बैठे बोर हो जाती थी। पहले से ही शशि अपनी अलग पहचान और अस्तित्व बनाना चाहती थी। आम महिलाओं की तरह स्वयं को रसोईघर तक ही सीमित नहीं रखना चाहती थी, महिला मंडली में बैठना, टी.वी. देखना, अखबार पढ़ना इत्यादि

उसे समय की बर्बादी लगती थी। शशि को कुछ नया करने की कसक परेशान किये हुए थी, शशि का हँसता-खेलता परिवार था एवं आर्थिक स्थिति भी अच्छी थी इसीलिए पति से संकोचवश कह नहीं पा रही थी किन्तु जब पति को उसकी इच्छा का पता चला तो उन्होंने उसके लिए हामी भर दी।

शशि को स्कूल में पढ़ाई के समय से ही सजने-संवरने का भी शौक था, शशि ने पूर्व में ब्यूटीशियन का कोर्स किसी प्राईवेट संस्थान से किया था। ठीक से प्रशिक्षण प्राप्त न कर पाने, ज्ञान अर्जित न कर पाने के कारण उसके अन्दर आत्मविश्वास की कमी थी। इसी बीच एक दिन राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान ( निसबड ), नोएडा द्वारा नि:शुल्क ब्यूटीशियन कौशल उन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए समाचार पत्रिका में विज्ञापन दिया गया। समाचार पत्रिका पढ़ निसबड, संस्थान में आकर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। 3 माह का पाठ्यक्रम पूर्ण करने के उपरान्त उद्यमिता विकास कार्यक्रम में भाग लेकर उद्यमी के गुण, उद्यमी की भूमिका एवं कार्य का ज्ञान प्राप्त किया। अब बारी थी अपने अन्दर छिपे एक उद्यमी को बाहर निकालने की। अपने पति की सहायता से 2 लाख रूपये लगाकर अपने ही क्षेत्र में फर्स्ट लुक ब्यूटीपार्लर प्रारम्भ किया। शुरूआत में उसे काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। कभी 50रूपये, कभी 100 रूपये कभी 200 रूपये प्रतिदिन की कमाई ने शशि का आत्मविश्वास डगमगा गया। कमाई बढ़ाने के लिए शशि ने आधूनिक तरीके यानि ळववहसम के माध्यम से अपने पार्लर का प्रचार-प्रसार किया। प्रचार-प्रसार से शशि को इतना लाभ हुआ कि आज शशि के पास 2 अन्य कर्मी भी कार्यरत है दृढ़ विश्वास और उनकी योग्यता ने वार्षिक टर्न ओवर 4.5 से 5 लाख तक पहुँचा दिया। वह आज भी निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रयासरत रहती हैं।

वास्तव में अगर देखा जाए तो शशि ने अपने अवसर को पहचान कर एक नये जीवन की शुरूआत की और शशि आज जो आजाद पंछी की तरह उड़ान भर रही है उसके लिए वह निसबड संस्थान का शुक्रिया अदा करती हैं जिसने उसे इस मुकाम पर तक पहुँचाया है।

# श्रृंगार से संवरता जीवन

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | सोनू गोयल | लागत | 2.5 लाख रूपए |
| पता/मो0 | उज्जैन | टर्न-ओवर | 4 लाख रूपए |
| कार्य | ब्यूटी केयर ब्यूटी पॉर्लर | | |

मनुष्य सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है माना जाता है कि उसमें आत्मशक्ति के अलावा श्रृंगार के माध्यम से रूप निखारने की कला इस क्षेत्र से इस धरा पर मुनि वशिष्ठ बनाते हैं।

सुन्दरता एक गुण है जिसे और अधिक निखारने का सौन्दर्य प्रसाधन एक साधन मात्र ही नहीं एक व्यापक व्यवसाय के रूप में फलीभूत हो रहा है।

महाकाल के धाम उज्जैन की रहने वाली सोनू गोयल का बचपन माता-पिता के सानिध्य में दुलार से बीता। उन्होंने अपनी पुत्री को हाई स्कूल तक की शिक्षा एक प्रतिष्ठित विद्यालय से दिलवायी थी। हर माँ-बाप की तरह ही सोनू के माता-पिता का स्वप्न भी था कि वह अपने पैरों पर खड़ी हो किन्तु सोनू के पिता अपने इस स्वप्न को पूर्ण होता नहीं देख पाये और इस संसार से चल बसे। सोनू को अपने पिता का स्वप्न पूर्ण करने के लिए तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त करने की आवश्यकता थी परन्तु पिता की मृत्यु के पश्चात आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न होने के कारण किसी तकनीकी विद्यालय में प्रवेश पाना सम्भव नहीं था। सोनू को बचपन से ही सजने-संवरने का

शौक था और उसने इसी क्षेत्र में अपना कैरियर बनाने की ठान ली तथा इसके लिए उसने निकट की ब्यूटी पार्लर चलाने वाली एक महिला के साथ थोड़ा बहुत काम सीखा। किन्तु वह इससे संतुष्ट नहीं थी उसे तो अपनी प्रतिभा को और निखारना था। वह परिवार की आय बढ़ाने के लिए नव प्रवर्तन कार्य करना चाहती है। तब एक दिन राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान ( निसबड ) के द्वारा अनुसूचित जाति के प्रतिभागियों के लिए नि:शुल्क प्रशिक्षण के लिए

समाचार पत्र में विज्ञापन निकला देखा।

सोनू गोयल को जैसे पंख ही लग गये वह प्रशिक्षण स्थल उज्जैन गयी और अपना नाम लिखवा दिया। उसने हेयर स्टाइल का प्रशिक्षण प्राप्त किया। कौशल का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् उन्हें अपना उद्यम स्थापित करना था, जिसे आयोजित एवं प्रबंधन करने के लिए जोखिम को स्वीकार करना था, परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण। कार्यक्रम के दौरान उसे लोन लेने के विषय में अवगत कराया गया। जिसके सहयोग से 2.5 लाख रूपये की प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार कर प्लेटफार्म में प्रेषित कर बैंक द्वारा ऋण के लिए जिसे स्वीकृत किया गया।

पिछले 5-6 माह पूर्व ऋण की सहायता से 2.5 लाख रूपये लागकर ब्यूटी केयर पार्लर की स्थापना की, चूँकि निरंतर इसी क्रम में प्रगति की राह पर चलना जिसका उद्देश्य था, साथ ही ट्रेनिंग सेंटर स्थापित करने का प्रयास करते हुए जोखिम उठाया गया।

निसबड द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन एवं अपने कौशल के आधार पर आज सोनू गोयल स्वावलम्बन की डगर पर अग्रेसित है और निरंतर प्रगति एवं श्रेष्ठता सम्बन्धित कार्यों में प्रयासरत रहती है, सबके लिए यह एक प्रेरणा है जो भी स्वावलम्बी बनकर जीना चाहते हैं।

# कौशल से कामयाबी की ओर

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | राजेन्द्र सिंह | मासिक आय | 15 हजार रूपए |
| पता/मो0 | सभावाला, देहरादून | टर्न-ओवर | 5.50 लाख रूपए |
| कार्य | इलैक्ट्रीकल फिटिंग एवं रिपेरिंग | | |

आज के इस युग में बिजली के बिना जीवन की कल्पना करना बेहद कठिन है। आज बिजली ( इलैक्ट्रिसिटी ) ना केवल भौतिक सुविधा का साधन मात्र है बल्कि स्वरोजगार/रोजगार में एक व्यापकरूप में भी विकसित हुई है।

उत्तराखण्ड के जनपद देहरादून के विकास नगर क्षेत्र के सभावाला कस्बे में रहने वाले प्रेम सिंह के यहां जन्मे राजेन्द्र सिंह ने इलैक्ट्रिकल फिटिंग एवं रिपेयरिंग कार्य को अपनाकर मजदूर पिता के कंधों से परिवार की जिम्मेदारियों को अपने ऊपर लेते हुए अन्यों को भी रोजगार दिलाया।

राजेन्द्र ने एम0ए0 तक की शिक्षा प्राप्त कर भविष्य की उम्मीदों को तलाशना शुरू किया लेकिन क्या करें ,कैसे करें यह स्पष्ट नहीं हो पा रहा था। राजेन्द्र ने नजदीक के औद्योगिक क्षेत्र की एक निजी कम्पनी में कार्य करना प्रारम्भ किया। पर उसका मन कभी भी नौकरी पर नहीं रहा। इसी उधेड़बुन के बीच दैनिक समाचार पत्र के माध्यम से संस्थान द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम की जानकारी प्राप्त हुई। प्रशिक्षण में पंजीकरण कर उसने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के दौरान स्वरोजगार की महत्ता, उद्यम प्रबन्धन की जानकारी के साथ इलैक्ट्रॉनिक विषय का ज्ञान, कौशल प्राप्त कर अपना रिपेयरिंग और फिटिंग का कार्य आरम्भ किया।

आज राजेन्द्र रू0 15000 मासिक आय अर्जित करने के साथ एक अन्य व्यक्ति की आजीविका का माध्यम भी है। राजेन्द्र कहते हैं कम निवेश से अपने कौशल और रणनीतिगत फैसलों से उद्यम स्थापित कर आगे बढ़ा जा सकता है।

# विद्युत ने जगाई आस

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | राजेन्द्र सिंह चौहान | मासिक आय | 50 हजार रूपए |
| पता/मो0 | ऋषिकेश, देहरादून | टर्न-ओवर | 6 लाख रूपए |
| कार्य | इलैक्ट्रीकल फिटिंग एवं रिपेरिंग | | |

संत नगरी और कुंभ नगरी के मध्य एक गॉव में खदरी खड़ग राज्य गठन के बाद नगरों के विस्तारीकरण के साथ गॉवों में उद्योगों के नए अवसर प्राप्त हुए हैं और इन्हीं अवसरों को उपलब्धी में बदलने की दस्तान है खदरी खड़ग के राजेन्द्र सिंह चौहान।

डिजिटल युग में मशीनों पर निर्भरता सभी की बड़ी है, जिसके चलते उपकरणों का उपयोग हमारे दैनिक जीवन में बढ़ा है। जिससे इस क्षेत्र में सम्भावनाएँ बढ़ी है। राजेन्द्र का मन भी विद्युतीकरण की तरफ शुरू से ही आकर्शित था, जिस कारण वह इस क्षेत्र में अपना भविश्य तलाशने लगे।

6 बहनों के इकलौते भाई होने के कारण परिवार के प्रति जिम्मेदारियों के निर्वहन के कारण उत्साह को कम कर दिया, जिसके चलते पारिवारिक आय की वृद्धि के लिए उन्होंने एक निजि कम्पनी में कार्य करना प्रारम्भ किया। जहाँ उन्होंने लगभग 2 वर्शो तक कार्य किया। समय के साथ-साथ नहीं बढ़ने के कारण मन और भी चंचल हो गया। राजेन्द्र ने तय किया कि वह अपना स्वयं का ही कारोबार शुरू करेंगे।

राजेन्द्र ने फैसला तो कर लिया पर शुरूआत कहाँ से कैसे की जाएँ इस उधेड़बुन ने उनको विचलित कर दिया। दैनिक समाचार पत्र के माध्यम से उन्होंने निसबड़ द्वारा आयोजित किये जा रहे, कार्यक्रम की जानकारी प्राप्त की इलैक्ट्रिकल्स पर आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम में पंजीकरण के उन्होंने इलैक्ट्रिल्स की बारीकियॉ सीखने के साथ-साथ च्डम्ळच के तहत रू0 50000 का ऋण लेकर अपना इलैक्ट्रिकल्स रिपेयरिंग का कार्य शुरू किया।

आज अपने 2 कर्मचारियों के साथ राजेन्द्र अपने कार्य को बढ़ाने में लगे हैं। वह कहते हैं कि प्रयासों की सफलता इस बात पर निर्भर है कि हम किस दिशा में बढ़ रहे हैं। सम्भावनाओं से सफलता के लिये अवसरों का चयन कर सही दिशा की ओर निरन्तर बढ़ते रहें।

# संवरती नारी : निखरता कल

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | श्रीमती नीतू पाण्डेय | मासिक आय | 6हजार रूपए |
| पता/मो0 | गाजियाबाद | टर्न-ओवर | 2.5 लाख रूपए |
| कार्य | अराधना ब्यूटी पॉर्लर | | |

ऐसा कोई भी नहीं जिसकी जिंदगी में चुनौतियाँ व संघर्ष न रहा हो, यह समय जब बच्चा पैदा होता है तभी से शुरू हो जाता है जैसे- चलना, बोलना, गिरना, फिर गिर कर संभलना आदि जब बड़ा हो जाता है तब बढ़ाई, नौकरी, व्यवसाय आदि करते हुए जीविकोपार्जन हेतु संघर्ष।

पंछी भी जब किसी डाल में बैठता है और हवा जोर जोर से चलती है जिससे वह डाल हिलने लगती है तब भी वह पंछी डरता नहीं है क्योंकि उसे अपने पँखों पर पूरा भरोसा होता है वैसा ही हर मनुष्य के साथ होता है। अगर मनुष्य को अपने आप पर भरोसा हो तो वह जिन्दगी के किसी भी मुकाम तक पहुँच सकता है।

किसी भी कार्य को करने के लिए हर मनुष्य में कुछ न कुछ जिज्ञासा का होना बहुत जरूरी होता है।

नीतू के पिता भी अपने पैतृक गाँव गोरखपुर ( उ0प्र0 ) में रहते थे किन्तु गाँव में आय के साधन न होने के कारण दिल्ली स्थित शास्त्री नगर आ गये। फटे-पुराने नोट बदलने का कार्य करने लगे और उससे जो कमीशन मिलता परिवार का खर्च चलाते रहा था। माता-पिता, और 4 बच्चों का हँसता-खेलता परिवार। दो बहिनों को माता-पिता के आर्शीवाद से डोली में बिठाकर विदा किया। माता-पिता की मृत्यु के पश्चात घर की जिम्मेदारी नीतू के पिता के ऊपर आ गयी।

कहते हैं कि जब तक जीवन है तब तक संघर्ष है, जिन्दगी हमेशा आसानी से नहीं गुजरती, हर दिन कोई न कोई नई चुनौती आती रहती है कोई न

कोई संघर्ष जिन्दगी में आता रहता है और आता रहेगा इसी विचारधारा के साथ नीतू और उसके परिवार ने आगे बढ़ने का निर्णय लिया। इस बदलते परिवेश में समय ने भी करवट ली।

अब चुनौती थी बहिनों की शादी की बड़े होते बच्चों की शिक्षा पूर्ण कराने की। ऐसे में हजारों की भीड़ में भी अकेला महसूस करने वाले परिवार की दिल की धड़कने थमने लगी, ऐसा लग रहा था कि मानो दिमाग ने काम करना बंद कर दिया हो। लेकिन इतनी बड़ी जिम्मेदारी आने के बाद भी आमदनी वहीं की वहीं स्थिर रही।

नीतू की माँ ने भी घर की दहलीज पार की और अपने पति के साथ कंधे से कंधा मिलाने का निर्णय लिया। फिर उनहोंने शादी में दुल्हन का लाल दुपट्टा व मंदिर में भगवान की मूर्ति पर ओढ़ाने वाली लाल चुनरी बनाने का कार्य घर पर ही शुरू किया। धीरे धीरे मंदिरों व कपड़े की दुकानों में संपर्क शुरू किया। परिवार की हालात में कुछ सुधार होना शुरू हुआ। चार बहिनों की शादी की। पिता ने भी अपने स्तर पर बच्चों का भविष्य संवारने के लिए जो कुछ भी उनसे बनता वह किया।

नीतू ने अपनी 12वीं तक शिक्षा सरकारी स्कूल के साथ-साथ माँ के इस कार्य में हाथ बंटाना शुरू कर दिया। जिन्दगी संघर्षपूर्ण चल रही थी परन्तु उनके हौसले बढ़ते चले जा रहे थे। माँ के कार्य के प्रति नीतू के मन में नवीनतम ख्याल आने लगे और व्यवसाय को नवीनतम व तकनीकी रूप देने के लिए सिलाई का कोर्स किया।

उसने आर्थिक स्थिति के कारण विवश होकर सिलाई का कोर्स अधूरा ही छोड़ दी। एक ऐसी कुरीति जिसमें दो अपरिपक्व लोगों को, जो आपस में बिलकुल अनजान हैं उन्हें जबरन जिन्दगी भर साथ रहने के लिए एक बंधन में बांध दिया जाता है, नीतू ने भी किशोरावस्था की दहलीज पर पैर रखे ही थे कि 16 वर्ष की उम्र में ही उसका विवाह खोड़ा निवासी उमा शंकर पाण्डेय के साथ सम्पन्न हुआ। पति निजी कम्पनी में कार्यरत थे। समय का चक्र अपने अनुसार चलता रहा। कुछ समय पश्चात उनके घर में नन्हें-नन्हें बच्चों की किलकारियाँ गूंजने लगी। समय बीतता गया जान-पहचान बढ़ने लगी एवं नीतू का दायरा भी बढ़ने लगा। बच्चे बड़े होने लगे, खर्चे बढ़ने लगे, महंगाई बढ़ी, परन्तु महंगाई के सामने आमदमी बौनी लगने लगी। नीतू घर पर ही अपने कपड़े सिलती और अपने मायके के दिन याद करती। कोई भी काम असंभव नहीं होता, थोड़ा कठिन जरूर हो सकता है। जिस कार्य को हम आसानी से नहीं कर सकते बस हम उसे असंभव कहने लगते हैं, यही असंभव शब्द जब हमारे दिमाग में बैठ जाता है तो हम फिर प्रयास करना बंद कर देते हैं। इससे उलट नीतू के मन में सिलाई सीखने और सिलाई कार्य में दक्षता प्राप्त करने की इच्छा अंकूरित होने लगी।

नीतू अपने मुहल्ले में ही सिलाई सीखने जाती। सिलाई सिखाने वाली मैडम ने ही नीतू को निसबड संस्थान में चलाए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम और क्रियाकलापों के विषय में बताया। नीतू को लगा जैसे बिन मांगे मुराद मिल गयी। संस्थान में आकर नीतू ने 3 माह सिलाई कढ़ाई एवं 3 माह का ब्यूटी पार्लर का प्रशिक्षण

प्राप्त किया। चूँकि नीतू पहले से ही अपनी माताजी के साथ उनके अनुभवानुसार व्यवसाय से जुड़ी थी तो उसे विपणन, खपत, बिक्री आदि का ज्ञान तो था ही और कोर्स के पश्चात नीतू के मन में आत्मविश्वास जाग गया। नीतू ने अपने क्षेत्र के एक स्कूल में 5 माह तक नौकरी करने के दौरान यह महसूस किया कि स्वयं का व्यवसाय से आमदनी में इजाफा किया जा सकता है।

उन्होने इसी सोच के साथ एक दुकान किराये पर ली, दुकान के लिए पार्लर कुर्सी एवं पर्दे खरीदे, सिलाई मशीन से पहले से घर पर मौजूद थी, अराधना ब्यूटी पार्लर के नाम से काम शुरू कर दिया। जितनी तेजी से समय का पहिया चलता रहा उतनी ही तेजी से नीतू ने भी तरक्की करनी शुरू कर दी। आज नीतू खोड़ा कालोनी एवं निकट सिंगला स्वीट, हसनपुर डिपो के पास दो दुकानें चलाती हैं व बच्चों को प्रशिक्षण देती भी है।

इसीलिए कहते है-

मंजिल मिल ही जायेगी भटकते-भटकते ही सही
गुमराह तो वो है, जो घर से निकले ही नही।

आज नीतू की स्थिति पहले से बेहतर है और निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रयासरत है। नीतू ने अपने साथ और लोगों को भी रोजगार दिया हुआ है और अच्छी खासी आमदनी प्राप्त कर रही है जिसका श्रेय नीतू अपने माँ-पिता और निसबड संस्थान को देती है।

# निर्भर से आत्मनिर्भर : रूसा

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | रूसा | लागत | 35 हजार रूपए |
| पता/मो0 | रामपुर, उत्तर प्रदेश | टर्न-ओवर | 80 हजार रूपए |
| कार्य | हाथ से कढ़ाई | | |

अक्षर आपने शहरों के भीड-भाड वाले इलाकों में मैले से कपडे पहने चेहरे पर हीनता का भाव लिये हाथ पसारे आपसे मदद की उम्मीद लिये एक महिला आपके आगे पीछे घूम कर आपको परेशान करती हुई नजर आती है। जेब से कुछ चन्द सिक्के निकाल कर हम उससे बच जाते हैं

या उस पर दया भाव दिखा कर ऐसा करते हैं। यह दृश्य भारत के हर छोटे बड़े शहरों, कश्बों और गाँव में नियमित रूप से देखने को मिलता है। जो भारत के विकास के मुख्य अवरोधक भिक्षा वृत्तिकों को दर्शाता है।

विकसित होते भारत के सच के साथ एक सच यह भी है कि समाज में भिक्षा वृत्ति एक अभिशाप बनकर समाज को आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से कमजोर कर रही है। इसके उन्मूलन के लिये सरकार द्वारा हर स्तर पर व्यापक कदम उठाये जा रहे हैं। संस्थान द्वारा भिक्षावृत्ति की रोकथाम के लिये रामपुर उत्तरप्रदेश में कुछ मानकर जीवन यापन करने वाले लोगों को चिन्हित कर कौशल परक उद्यमिता विकास कार्यक्रम में प्रतिभाग करने हेतु प्रेरित किया गया। रूसा उस प्रयास से निकला हुआ एक ऐसा नाम है जिसमें भिक्षावृत्ति को छोड़ अपने कौशल से सम्मानजनक जीवन की तरफ कदम बढ़ाया। बाल्यावस्था में अपनी माता पिता को खो देने के कारण रूसा का बचपन आभावों में बीता। होश सम्भालने से पहले उसने हाथ फैलाना सीख लिया वह एक ऐसी जिन्दगी जीने को मजबूर थी जिसकी कल्पना जेहन में ड़र और आँखों में आंसू लाने को काफी है। बिना भविश्य के, बिना लक्ष्य के जिन्दगी बढ़ नही कट रही थी। ऐसे समय में संस्थान द्वारा प्रशिक्षण हेतु चिन्हित

किए गए भिक्षु में से एक रूसा भी थी। प्रशिक्षण के दौरान हाथ से कढ़ाई कार्य सीखने के बाद संस्थान के सहयोग से उसने नजदीकी बुटीकों का कढ़ाई कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है। अपने शुरूआती कार्यों से वह 3500 रू0 मासिक आय अर्जित कर रही थी।

आज रूसा अपने हुनर से आय और स्वाभिमान अर्जित कर रही है। आज उसके पास जीने की वजह और आने वाले कल के लिए कुछ सपने भी हैं। जिन्हें हकीकत में बदलने के लिये रूसा धागों से अपनी राह बुन रही है।

# प्रशिक्षण से मिली पहचान

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | गुरमीत कौर | लागत | 60 हजार रूपए |
| पता/मो0 | डोईवाला, देहरादून | टर्न-ओवर | 2.40 लाख रूपए |
| कार्य | मनवीर बुटीक | | |

कौशल के माध्यम से कुशल भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए समाज के सभी वर्ग विशेशकर युवा वर्ग प्रतिबद्व होकर अपना योगदान दे रहा है। उत्तराखण्ड प्रदेश की राजधानी देहरादून मरखम ग्रान्ट डोईवाला, ने कौशल को न केवल आजीविका का आधार बनाया बल्कि अन्य लोगों को भी कौशल प्रदान कर स्वरोजगार एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध करा रही है। मैंने संस्थान निसबड देहरादून द्वारा 3 माह का माह मार्च 2019 से जून 2019 तक सिलाई कढाई का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

गुरमीत कौर के पति मजदूरी करते हैं। जिससे परिवार का पालन-पोषण ठीक-ठीक ढंग से नहीं हो पाने के कारण जिम्मेदारी गुरमीत कौर पर आ गई। 10 पास गुरमीत कौर ने अपने परिवार के साथ-साथ अपने गांव की गरीब महिलाओं के बारे में समर्पित भाव से कार्य करने की भावना व लोकहित के कार्य के लिए गुरमीत कौर का रूझान सिलाई-कढ़ाई में लगा। सन 2019 में गुरमीत कौर ने निसबड़, संस्थान द्वारा आयोजित सिलाई-कढ़ाई पर आधारित उद्यमिता कौशल विकास कार्यक्रम में भाग लिया। जहाँ उसने सिलाई-कढ़ाई पर कौशल के साथ-साथ उद्यम स्थापना एवमं उद्यमिता की प्ररेणा, वित्तीय प्रबंधन, बाजार सर्वेक्षण एवं समस्त विभागों की उद्यम स्थापित करने हेतु योजनाओं का उपलब्ध अवसरों की जानकारी प्राप्त की।

गुरमीत कौर ने अपने जीवन के कठिन समय में अपनी मेहनत योग्यता से अपने बुरे समय को परास्त किया। गुरमीत कौर ने अपने गाँव में मरखम ग्रान्ट डोईवाला, देहरादून में. मरवीर बुटीक्स के नाम से कौशल प्रशिक्षण केन्द्र की शुरू किया। कुल साठ हजार की प्रारम्भिक लागत से तैयार गुरमीत कौर ने महिलाओं को सिलाई कार्य के साथ-साथ प्रशिक्षण भी दिया।

वर्तमान में दो कर्मचारियों के साथ कार्य करने वाली प्रदीप कौर ने कौशल भारत के सपने को साकार करने की मुहिम में सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की है। दस हज़ार रूपये मासिक कमा कर गुरमीत कौर अपने परिवार का बेहतर भरण-पोषण करने के साथ-साथ क्षेत्र की महिलाओं को उद्यमिता हेतु प्रेरित करने का भी कार्य कर रही है।

सशक्त नारी सशक्त भारत की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में गुरमीत कौर एक सजग नागरिक की तरह राष्ट्रीय निर्माण में अपना सहयोग कर रही है।

# परिधान

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | प्रदीप कौर | लागत | 50 हजार रूपए |
| पता/मो0 | डोईवाला, देहरादून | टर्न-ओवर | 2.40 लाख रूपए |
| कार्य | हरमन सिलाई सेन्टर | | |

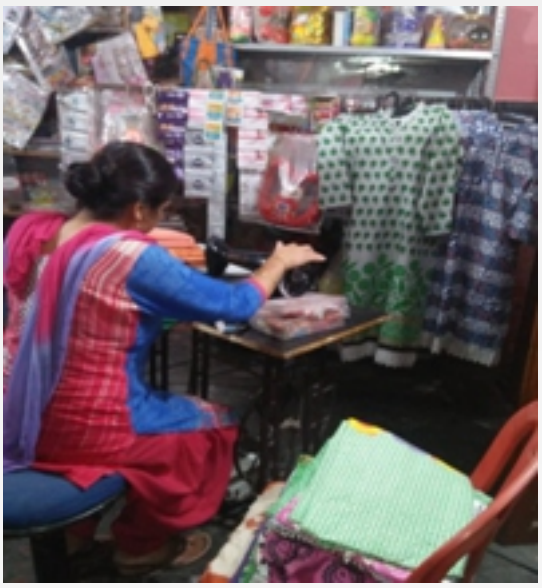

कौशल के माध्यम से कुशल भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए समाज के सभी वर्ग विशेशकर युवा वर्ग प्रतिबद्व होकर अपना योगदान दे रहा है। उत्तराखण्ड प्रदेश की राजधानी देहरादून बुल्लावाला, डोईवाला, ने कौशल को न केवल आजीविका का आधार बनाया बल्कि अन्य लोगों को भी कौशल प्रदान कर स्वरोजगार एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध करा रही है। मैंने संस्थान निसबड देहरादून द्वारा 3 माह का मार्च 2019 से जून 2019 तक सिलाई-कढ़ाई का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

परिवार से मिली शिक्षा स्नातक होते हुए भी प्रदीप कौर ने सदैव दूसरों के लिये समर्पित भाव से कार्य करने की भावना व लोकहित के कार्य के लिए प्रेरित किया करती थी। शिक्षा ग्रहण करते ही वर्श 2007-08 में प्रदीप कौर का रूझान सिलाई-कढ़ाई में लग गया जिसके उपरान्त प्रदीप कौर के मन में अपने गॉव एवं क्षेत्र के लिये कुछ करने की भावना उत्पन्न होने लगी पर इसकी शुरूआत कहाँ से और कैसे करनी है यह स्पश्ट नही हो पा रहा था। इसी उधेड़बुन के बीच सन 2019 में प्रदीप कौर ने संस्थान ( निसबड़ ) द्वारा आयोजित सिलाई-कढ़ाई पर आधारित उद्यमिता कौशल विकास कार्यक्रम में भाग लिया । जहां उसने सिलाई कढ़ाई पर कौशल के साथ-साथ उद्यम स्थापना एवं द्यमिता की प्ररेणा, वित्तीय प्रबंधन, बाजार सर्वेक्षण एवं समस्त विभागों की उद्यम स्थापित करने हेतु योजनाओं के उपलब्ध अवसरों की जानकारी प्राप्त की ।

प्रदीप कौर के जीवन में समय ने करवट लेते हुए मुश्किल दिनों से उसका आमना -सामना करवाया। इस मुश्किल समय में उनके पति जरनैल सिंह ने इनका साथ दिया। प्रदीप कौर ने

अपने गॉव में बुल्लावाला डोईवाला, देहरादून में हरमन सिलाई सेन्टर के नाम से कौशल प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की । कुल पचास हजार की प्रारम्भिक लागत से तैयार केन्द्र आज कई महिलाओं की आशा का केन्द्र है। जहां पर सिलाई कार्य के साथ प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

वर्तमान में दो कर्मचारियों के साथ कार्य करने वाली प्रदीप कौर ने कुशल भारत के निर्माण में सहयोग देते हुए सिलाई कढ़ाई प्रशिक्षण सेन्टर की स्थापना की है। आठ हज़ार रूपये मासिक आमदनी कर प्रदीप कौर अपने परिवार का बेहतर भरण पोशण करने के साथ क्षेत्र के युवावों को उद्यमिता हेतु प्रेरित करने का कार्य भी कर रही है।

सशक्त नारी सशक्त भारत की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में प्रदीप कौर एक मजबूत हस्ताक्षर के रूप में उभर कर राश्ट्रीय निर्माण में अपना सहयोग कर रही है।

# आकार लेता उद्यम : साकार होते सपने

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | रीता देवी | लागत | 70 हजार रूपए |
| पता/मो0 | डोईवाला, देहरादून | टर्न-ओवर | 2.40 लाख रूपए |
| कार्य | शिवराज सिलाई केन्द्र | | |

कौशल के माध्यम से कुशल भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए समाज के सभी वर्ग विषेशकर युवा वर्ग प्रतिबद्व होकर अपना योगदान दे रहा है। उत्तराखण्ड प्रदेश की राजधानी देहरादून बुल्लावाला, मारखम ग्रान्ट डोईवाला, ने संस्थान निसबड देहरादून द्वारा 3 माह का मार्च 2019 से जून 2019 तक सिलाई-कढाई का प्रशिक्षण प्राप्त किया। कौशल को न केवल आजीविका का आधार बनाया बल्कि अन्य लोगों को भी कौशल प्रदान कर स्वरोजगार एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध करा रही है।

परिवार से मिली शिक्षा और प्रशिक्षण के तहत् रीता देवी ने सदैव दूसरों के लिये समर्पित भाव व लोकहित के कार्य के लिये प्रेरित करती रहती थी। रीता देवी के पति राकेश कुमार ने भी प्रशिक्षण के दौरान रीता देवी को काफी प्रोत्साहन किया। रीता देवी की शिक्षा 10 पास होते हुए भी सिलाई-कढ़ाई में अपना रूझान लगाया। जिसके उपरान्त रीता देवी के मन में अपने गाँव एवं क्षेत्र की गरीब अप्रशिक्षित

महिलाओं के लिए कुछ करने की भावना उत्पन्न होने लगी। इसी उद्देश्य से सन् 2019 में रीता देवी ने निसबड, संस्थान द्वारा आयोजित सिलाई कढाई पर आधारित उद्यमिता कौशल विकास कार्यक्रम में भाग लिया। जहां उसने सिलाई-कढ़ाई पर कौशल के साथ-साथ उद्यम स्थापना एवमं उद्यमिता की प्ररेणा, वित्तीय प्रबंधन बाजार सर्वेक्षण एवं समस्त विभागों का उद्यम स्थापित करने हेतु योजनाओं के उपलब्ध अवसरों की जानकारी प्राप्त करना था।

रीता देवी के जीवन में कम शिक्षा होते हुए भी कठिन समय में धेर्य व साहस के साथ आगे बढना नहीं छोड़ा। रीता देवी ने अपने गॉव में बुल्लावाला मारखम ग्रान्ट डोईवाला, देहरादून में शिवराज सिलाई कार्नर कौशल प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की। कुल सत्तर हजार की प्रारम्भिक लागत से तैयार केन्द्र आज कई महिलाओं की आशा का केन्द्र है। जहां पर सिलाई कार्य के साथ प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

वर्तमान में तीन कर्मचारियों के साथ कार्य करने वाली रीता देवी ने कौशल भारत के सपने को साकार करने की मुहिम में सिलाई-कढाई प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की है। आठ हज़ार रूपये मासिक कमा कर रीता देवी अपने परिवार का बेहतर भरण पोशण करने के साथ क्षेत्र के युवावों को उद्यमिता हेतु प्रेरित करने का कार्य भी कर रही है।

सशक्त नारी सशक्त भारत की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में रीता देवी एक मजबूत हस्ताक्षर के रूप में उभर कर राश्ट्रीय निर्माण में अपना सहयोग प्रदान कर रही है।

# एक कहानी मेरी : शालिनी

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | शालिनी | लागत | 50 हजार रूपए |
| पता/मो0 | नजफगढ़, दिल्ली | टर्न-ओवर | 3 लाख रूपए |
| कार्य | शालिनी न्यू फैशन | | |

समाज की सबसे छोटी इकाई एक परिवार होता है। जो देष की दशा एवं दिशा को तय करता है। भारतीय परिवेश में परिवार की नीवं नारी को माना गया। ऐसे अनेकों उदाहरण हमारे समक्ष हैं। जब नारी ने परिवार से उठकर उद्यमी सोच के साथ समाज/देश के निर्माण में अपना प्रत्यक्ष योगदान दिया है।

यह कहानी शालिनी और उनके बुलन्द हौसलों की है, हममें से ज्यादातर लोग तो यही चाहते हैं कि कोई सरकारी नौकरी मिल जाए। ताकि ऑफिस के साथ साथ घर को पूरा वक्त दिया जा सके पर कुछ लोग भीड़ से अलग अपनी एक पहचान बनाना चाहते हैं। और शालिनी उन्ही में से एक हैं वह अपने जीवन का एक एक पल गरीबों महिलाओं के उत्थान में लगाता है 32 साल की उम्र में वह बिना थके गरीबों तथा मरीजों का खयाल रखती हैं और वह भी बिना कोई फीस लिए। यह सिलसिला 2005 से अब तक चलता आ रहा है। शालिनी ने अपने करियर में गरीबों की कोई भी काम या सहायता करने के लिए कोई फीस नहीं ली इतना ही नहीं शालिनी उत्तर प्रदेश के एक गॉव नजफगढ़ की पहली महिला साक्षर एवं नर्स भी है।

कुछ वर्श पूर्व शालिनी की एक सहेली ने बताया कि एक संस्थान है जिसका ऑफिस नोएडा सेक्टर 62 में है और बताया कि वहां विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण के बारे में जानकारी देकर उनको स्वयं का स्वरोजगार प्रदान करने में भी सहायता दी जाती है अपनी सहेली की बात मानकर शालिनी नोएडा के संस्थान में गई वहां उनकी मुलाकात कविता मैडम एवं पूजा मैडम से हुई उन्होंने उन्हें संस्थान में चल रही प्रशिक्षण प्राप्त करने की सलाह दी। जिसके फलस्वरूप शालिनी ने फैशन डिजाईनिंग में प्रशिक्षण प्राप्त किया और अपना काम शुरू किया। पहले तो शालिनी ने अपना काम घर से ही शुरू किया जिसमें उन्होंने सिलाई/कढ़ाई/रंगाई आदि का कार्य शुरू किया, जैसे-जैसे काम बढ़ने लगा तो शालिनी ने अपनी दुकान खोलनी चाही, दुकान खोलने के लिऐ पैसे कम होने के कारण शालिनी ने अपने

काम को अपने ही घर में एक कमरे में सिलाई/कढ़ाई/रंगाई का कार्य आरम्भ किया। जिसका नाम शालिनी न्यु फैशन के नाम से जाना जाता है आज शलिनी के साथ 5 महिलाएँ भी काम करती हैं और 15 से 20 महिलाएँ शालिनी के केन्द्र में सिलाई सीखने भी आती हैं । आज शालिनी की महीने में रु0 20,000 से रु0 30,000 तक प्रति माह की आमदनी है। शालिनी ने अपने स्वरोजगार का सारा श्रेय निसबड, संस्थान को दिया।

# संघर्ष और सामर्थ्य का समागम

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | गीता शर्मा | मासिक आय | 7-8 हजार रूपए |
| पता/मो0 | नोएडा, उत्तर प्रदेश | टर्न-ओवर | 90 हजार रूपए |
| कार्य | सिलाई कार्य | | |

अगर जिन्दगी में कुछ पाना हो तो अपने तरीके बदलने चाहिऐ, इरादे नहीं। कहा जाता है जीवन में संघर्ष किए बिना कुछ भी नहीं मिलता। ऐसी ही संघर्षशील गीता शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के बांदा जिले में एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। गीता के पिता का देहांत बचपन में ही हो गया था। परिवार का बोझ गीता की माताजी के कंधों पर आ गया। गीता को पढ़ाई का शौक था। घर में रूपए-पैसे की किल्लत थी और घरेलु जिम्मेदारियाँ भी सामने खड़ी थी। जिसके चलते वह कक्षा 10वीं तक ही पढ़ सकी। वहीं दूसरी ओर लड़कियों को ज्यादा नहीं पढ़ाना, ऐसी कुरीति हमारे समाज में घर की हुई थी। इस दुनिया में बेटी अनमोल है। जहाँ बेटियों का अपमान होता है, वहाँ सब कुछ नष्ट हो जाता है।

अभिशाप नहीं वरदान है बेटी। जहाँ नारियों का सम्मान होता है वहाँ सात्विकता का विकास होता है जिधर नारी का अपमान होता है वहाँ विपन्नता, अराजकता और तुच्छता आती है बेटी को आत्मनिर्भर बनाना चाहिए। इन्ही विचारधारा और सोच के साथ गीता की माँ ने भी अपनी बेटी को आत्मनिर्भर बनाना चाहा और वह सभी चीजें गीता को मुहैया करायी जिससे उसका मनोबल

बढ़े और वह आत्मनिर्भर बन सके।

गीता का विवाह अपने ही जिले बांदा के राम चन्द्र षर्मा के साथ सम्पन्न हुआ। गीता के पति राम चन्द्र षर्मा, नोएडा की एक एक्सपोर्ट कम्पनी में कार्यरत थे। इस तरह गीता बांदा से ममूरा, नोएडा आ गई। जल्द ही घर बच्चों की किलकारियों से गूंजने लगा। सब कुछ ठीक चल रहा था। गीता घर की दहलीज लांघकर आत्मनिर्भर बनने का सपना संजो रही थी। परन्तु एक गृहणी होने के

नाते एवं घर की जिम्मेदारियाँ अधिक होने के नाते वह अपनी इस सोच को हकीकत में नहीं बदल पा रही थी। कहते हैं कि जहाँ चाह होती है वहाँ राह भी अपने आप ही मिल जाती है। ऐसी ही सोच को रखने वाली गीता को एक दिन राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लद्यु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड), नोएडा द्वारा नि:शुल्क सिलाई कौशल उन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए समाचार पत्रिका में विज्ञापन दिखाई दिया। समाचार पत्रिका में विज्ञापन पढ़ निसबड, संस्थान में आकर प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रवेश ले लिया।

उद्यमिता विकास कार्यक्रम में भाग लेकर उद्यमिता गुण, उद्यमी की भूमिका एवं कार्य का ज्ञान प्राप्त किया। संस्थान में अच्छा माहौल मिला व अभ्यास का मौका भी। पति के सहयोग से एक सिलाई मशीन खरीद कर वह अपने व बच्चों के कपड़े सिलने लगी। सिलाई कौशल का अच्छा अनुभव भी प्राप्त हुआ और आज गीता घर पर ही लोगों के कपड़े सिलाई करती है और परिवार की आय बढ़ाने में पति का सहयोग भी। इस प्रकार गीता ने अपने शौक को अपना व्यवसाय बना लिया।

आज गीता बहुत अच्छा कार्य करने के साथ-साथ अच्छा लाभांश अर्जित कर रही है और अपने साथ साथ कुछ अन्य लोगों को भी रोजगार दे रही है।

# आसमां अभी बाकी है

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | सुमित्रा | मासिक आय | 7-8 हजार रूपए |
| पता/मो0 | डोईवाला, देहरादून | टर्न-ओवर | 90 हजार रूपए |
| कार्य | सिलाई कार्य | | |

ये हकीकत है उस तबके की जिसके हाथों राश्ट्र निर्माण, आधारभूत विकास की अवधारणा को साकार रूप देने का एक महत्वपूर्ण कार्य है अपना जीवन काम को समर्पित कर मूलभूत आवश्यकताओं के लिए जीवन में संघर्श करते मजदूर और उनके परिवारों के उत्थान के लिये व्यापक कदम उठायजा रहे हैं। देहरादून के डोईवाला कस्बे की रहने वाली सुमित्रा भी उन प्रयासों से सृजित एक ऐसी उद्यमी है जिसने विशम परिस्थितियों में हारना नहीं उभरना सीखा है।

सुमित्रा के पति पुताई का काम करते हैं, जिससे होने वाली आय से परिवार की जरूरतें पूरी कर पाना एक चुनौती थी ऐसे हालातों में सुमित्रा ने पति का सहयोग कर परिवार की आर्थिक स्थिति में सहयोग करने का मन बनाया, पर न तो वह ज्यादा शिक्षित थी और न ही अधिक जागरूक मन की पीड़ा भीतर ही भीतर उसे परेशान कर रही थी ।

संस्थान द्वारा श्रमिक आश्रित महिलाओं के लिये राज्य सरकार के सहयोग से कौशल परख उद्यमिता विकास कार्यक्रम का आयोजन सुमित्रा के गांव में किया जा रहा था। उसे मानो अपना सपना साकार होता दिखाई दिया।

सिलाई के प्रशिक्षण के साथ सुमित्रा के व्यक्तित्व में निखार भी आया। संस्थान के मार्गदर्शन और सहयोग से उसने घर से सिलाई का कार्य बाजार मूल्य से कम दामों पर करना षुरू कर दिया। अपने कौशल की कुशलता से जल्द ही सुमित्रा को काफी काम मिलने लगा। 2018 में जब वह प्रशिक्षण प्राप्त करने गई थी तो उस समय वो अपने परिवार को एक भी रूपये का सहयोग नही कर पाती थी। आज सुमित्रा 8 हजार रूपये मासिक आय प्राप्त कर लेती है।

वो कहती है। कि कौशल सही मायनों में हमारे जीवन को परिभाषित करता है। उद्यमी विचारों के साथ अपने कौशल से आप सफलता के वो शिखर को पा सकते हैं जिसकी आप कामना करते हैं।

# पलायन पर प्रहार

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | बिपिन बड़ोनी | मासिक आय | 40 हजार रूपए |
| पता/मो0 | टिहरी गढवाल | टर्न-ओवर | 8 लाख रूपए |
| कार्य | स्पॉन मैन्यूफैक्चरिंग और प्रोसेसिंग | | |

मेरा नाम बिपिन बड़ोनी है। मेरा जन्म उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल जिले के एक छोटे से गाँव भटवारा में हुआ। मेरे पिता टिहरी गढ़वाल में एक ग्राम विकास अधिकारी हैं और माँ एक गृहणी हैं। 2012 में मेरे स्नातक होने के बाद, मैंने उत्तर भारत के साथ-साथ दक्षिण भारत में स्थित विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए काम किया।

कॉर्पोरेट जगत में काम करने से मुझे इस बात का बहुत अनुभव हुआ कि कैसे लोगों का एक समूह वास्तव में एक साम्राज्य का निर्माण कर सकता है। और कैसे हजारों लोगों को रोजगार दिया जा सकता है।

2014 में मैंने एचसीएल, नोएडा में काम कर रहा था, उसी वक्त मेरी माँ को कैंसर हो गया था। अचानक आपात स्थित के कारण मैंने अपनी नौकरी छोड़ दी और अपनी माँ के साथ तब तक रहने का फैसला किया जब तक कि उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं हो जाता। एक साल की देखभाल और आतिथ्य के बाद , वह एक बड़े ऑपरेशन के बाद ठीक होने लगी मैंने 2015 में देहरादून में एक कॉपी-एडिटर के रूप में अपरा निगम को ज्वाइन किया, जोकि हम जहां रहते थे, वह उसके करीब था। ।चतं में काम करने के दौरान मैंने अच्छी तरह से शिक्षित और समक्ष लोगों को एक 9AM-5PM की नौकरी में केवल 10-20 हजार रूपये कमाने के लिए काम करते देखा, और में यह देखकर हैरान रह गया कि उन्होंने यह परवाह भी नहीं की कि किस तरह से समय उनके द्वारा नष्ट किया जा रहा है। आखिरकार मैंने अपने खुद के व्यवसाय को स्थापित करने की योजना बनाने का फैसला किया, जो मुझे अपने परिवार के करीब रख सकता है और जहां मैं अपने ज्ञान और अनुभव से सफलता और आजीविका के साथ-साथ सामाजिक हितों के लिऐ भी कार्य कर सकता हूँ।

2017 में मैंने नौकरी छोड़ने का फैसला किया और एक व्यवसाय और सामाजिक कार्य शुरू करने योजना बनाई । मैं देहरादून चला गया और उत्तराखण्ड के ग्रामीण इलाकों में व्यवसाय की तलाश शुरू कर दी ,जो मेरे साथ-साथ ऐसे आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों को आजीविका प्रदान कर सके। बेशक, मैं प्रधान मंत्री स्टार्ट-अप योजनाओं से प्रेरित था, जो कई महत्वाकांक्षी भारतीयों को समर्थन देता है और अमीरों की सेवा करने के बजाय गरीबों की सेवा करना पसंद करते हैं। उस समय, उत्तराखण्ड में मशरूम की खेती शुरू हुई और कई लोगों ने पहले से ही मशरूम आधारित परियोजनाओं पर काम करना शुरू कर दिया था। मैंने इस क्षेत्र में प्रशिक्षित होने का फैसला किया और एक सेटअप बनाकर गाँव में मशरूम की खेती शुरू की और आसपास के गावों में भी लोगों को प्रशिक्षित करना शुरू किया। आखिरकार मैंने स्पॉन मैन्युफैक्चरिंग और प्रोसेसिंग के लिए अपनी प्रयोगशाला स्थापित करने का निर्णय लिया, ताकि मशरूम उत्पादक स्पॉन खरीद सकें और अपनी उपज को दूर की यात्रा किए बिना बेच सकें।

इस प्रकिया में मुझे पहली बार NIESBUD नाम की एक संस्थान से मिलवाया गया, जो हमारे जैसे लोंगो को अपना व्यवसाय स्थापित करने के लिए अनेकों शासन हमारी योजनाओं का उपयोग करने के तरीकों में हमें सहयोग करते हैं। शुरूआत में मुझे शासन संस्थानों से अपने में विश्वास की कमी के कारण समन्वयकों से मिलने में संकोच हुआ, लेकिन आश्चर्य की बात है, उन्होंने मेरा आत्मविश्वास बनाने में मेरी बहुत मदद की। उन्होंने पीएमईजीपी के तहत ऋण योजना की पूरी प्रकिया के लिए मेरा मार्गदर्शक किया और परियोजना रिपोर्ट तैयार की और जब तक मेरी प्रयोगशाला पूरी तरह से स्थापित नहीं हो गई, तब तक समर्थन बंद नहीं किया। अपने सपने को कभी नहीं छोड़ने के लिए प्रेरित किया।

वर्तमान में मैं प्रति माह 2 टन मशरूम की खेती करने में समक्ष हूँ और प्रति माह लगभग 10टन मशरूम की प्रक्रिया करता हूँ। हम बिना किसी शुल्क के अपने ही गाँव में मशरूम की खेती के लिए लोगों को भी प्रशिक्षित कर रहे हैं।

# फैशन ने दिलाई नई राह

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | हमीदा खातून | मासिक आय | 15-20 हजार रूपए |
| पता/मो0 | डोईवाला, देहरादून | टर्न-ओवर | 2 लाख रूपए |
| कार्य | फैशन डिजाइनिंग | | |

उत्तराखंड की राजधानी देहरादून से लगता हुआ कस्बा है डोईवाला। वहा के गांव तेलीवाला में रहने वाली हमीदा खातून ने अपने हुनर से न केवल स्वावलम्बी बनी है, हालांकि और महिलाओं के लिए भी उम्मीद बन कर उभरी है।

35 वर्षीय हमीदा ने 12वीं तक की शिक्षा ग्रहण की है, जिसके बाद उनका विवाह फुरकान अली के साथ हो गया। फुरकान पेशे से मजदूरी करता था। घर में पैसा कम था पर दोनों के होसलों ने उन हालातों को भी मुस्कुराने की वजह बनाया, समय एक सा नहीं रहता है। कुछ ऐसा ही हमीदा के साथ भी हुआ। पति की बीमारी ने उसका आधा शरीर जकड़ लिया और आमदनी पूरी हालात बत से बत्तर होते चली गई हमीदा ने ऐसे हालातों से समझौता करने से अच्छा उनसे लड़ कर उभरना बेहतर समझा।

गाँव में फैशन डिजाईनिंग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन हो रहा था। अन्य महिलाओं की तरह हमीदा ने भी आवेदन किया। घर की जिम्मेदारियों को निभाने के

साथ हमीदा हुनर के सहारे अपना भविष्य भी बुन रही थी।

प्रशिक्षण की अवधि को हमीदा अपने जीवन के सुनहरे कल की नीव मानकर काम करना शुरू किया। उसके हाथ के बने परिधानों की माँग बढ़ने लगी। जिसे देख उसने प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत 5 लाख के ऋण हेतु आवेदन किया। जिसे स्वीकृति मिलते ही उसने नजदीकी बाजार, डोईवाला में किराये पर एक दुकान लेकर बुटिक खोली।

आज हमीदा 3 अन्य महिलाओं के साथ अपने रोजगार को भी आगे बढा रही है, बच्चे पढ़ रहे हैं, पति बीमारी से उभर रहे हैं। महीने की आमदनी में इजाफा हो गया है। 15 से 20 हजार रूपए तक महीने कमाकर हमीदा खुश है पर सन्तुष्ट नहीं वो और भी आगे बढ़ना चाहती है।

हुनर से हलात बदलने की कल्पना को सच कर दिखाने वाली हमीदा आज की स्वालम्बी, सशक्त हुनरमंद हमीदा है।

# परिश्रम की राह पर बढ़ते कदम

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | हिमांशु | लागत | 2 लाख रूपए |
| पता/मो0 | फिरोजाबाद, उ0प्र0 | टर्न-ओवर | 2 लाख रूपए |
| कार्य | हिमांशु इलैक्ट्रल्स | | |

जिंदगी कितनी भी कठिन क्यों न लगे परन्तु आपके पास कुछ करने और कामयाब होने की गुंजाइश हमेशा रहती है। जिंदगी हमेशा चलती रहती है परन्तु जीवन में एक चीज जो स्थिर है , वह है बदलाव। फिर उन पलों में आप कहीं भी और कुछ भी प्राप्त कर सकते हैं।हमें बदलाव को बिना किसी शर्त के अपनाना आना चाहिए। सामान्यत: सभी लोगों को बदलाव से बहुत डर लगता है। हकीकत यह है कि वह बदलाव से नहीं डरता बल्कि बदलाव से विपरीत परिस्थिति में फंसने के डर से घबराता है।

इस बात को हम अगर दूसरे तरीके से समझें ता कहना होगा कि

एक जुनूं का पेड़ सींचने के खातिर,
कुछ ख्वाबों का खून बहाना पड़ता है।

ऐसा ही कुछ अंश हमें देखने को मिलता है हमारी इस कहानी में.

हिमांशु का जन्म फिरोजाबाद ( उ0प्र0 ) के एक मजदूर परिवार में हुआ था। इनके पिता हाकिम सिंह मजदूरी किया करते थे। चार भाईयों में तीसरे नम्बर के हिमांशु पढ़ाई में बहुत दिलचस्पी रखते थे। परिवार की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी नहीं थी। फिरोजाबाद शहर चूड़ियों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है। यह आगरा से 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। फिरोजाबाद में मुख्यत: चूड़ियों का करोबार होता है। यहाँ पर आप रंग बिरंगी चूडियों को अपने चारों ओर देख सकते हैं। बाल मज़दूरी यहाँ आम है। कारखानों से चूड़िया लाकर चूड़ियों में पॉलिस व हिल लगाकर धन अर्जित करते थे। मजदूरी के साथ-साथ हिमांशु ने पढ़ाई भी जारी रखी।

जीवन में गरीबी देख, उसका स्वप्न था कि वह भी बड़ा होकर खूब पढ़-लिखकर अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में मदद करेगा।

समय का पहिया घूमता रहा। हिमांशु ने पहले ठण्ैब और उसके पश्चात B.Ed की परीक्षा उत्तीर्ण की। वह भी और लोगों की तरह नौकरी करना चाहता था। उसका काफी वक्त आवेदन फार्म भरने, परीक्षाए देने एवं नियोजन कार्यालय के चक्कर काटने में व्यतीत हो गए। उसे लगता कि शायद उसकी मेहनत में कहीं न कहीं कमी रह गयी होगी। इतना पढ़ने के बावजूद भी उसकी नौकरी नहीं लगी। उस तनाव में रहने लगा।

भारतीय अर्थव्यवस्था व उद्योग इतना मजबूत होने के बावजूद भी भारत में उतनी रोजगार में वृद्धि नहीं हो पायी जितना होना चाहिए। इसी दौरान उसकी शादी हो गयी। कुछ समय पश्चात बच्चें हो गए। परिवार का खर्च और बढ़ती जिम्मेदारी से हिमांशु की परेशानियां बढ़ने लगी। लेकिन जब समय बदलता है तो बदलाव होना भी शुरू होने लगता है।

इसी दौरान हिमांशु के परिचित ने उसे राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लद्यु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) द्वारा नि:शुल्क अस्सिटंट इलैक्ट्रीशियन कौशल उन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में बताया। हिमांशु फिरोजाबाद स्थित निसबड प्रशिक्षण केन्द्र जाकर कार्यक्रम में प्रवेश ले लिया। कौशल उन्नयन प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात हिमांशु आत्मविश्वास से ओतप्रोत था।

हिमांशु ने रू0 10,000/- से कुछ जरूरी औजार खरीद कर शुरूआत में आस-पास के घरों में बिजली के छोटे-मोटे काम करने लगा। दीवारों व बैनरों के माध्यम से विज्ञापन किया। विज्ञापन देख हिमांशु को फोन पर ही काम मिलने लगा। कुछ-कुछ लोग तो उससे प्लम्बर के बारे में भी पूछ लेते थे। अपने काम से फुर्सत मिलने पर उसने प्लम्बिंग का काम भी सीख लिया। हिमांशु का काम बढ़ गया अब उसने अपने ही क्षेत्र में हिमांशु बिजली मिस्त्री के नाम से दुकान खोल ली है। इसके लिए वह निसबड संस्थान को धन्यवाद देता है जिसने उसकी जिंदगी को इतना खुशनुमा बना दिया।

सही बात है जिसने धैर्य रख कर्म करा, वह जीत गया। हारा वह जो केवल ख्वाबों में जिया। अपने सपनों को चरितार्थ करने के लिए कर्म करना पड़ता है।

# शून्य से शिखर तक

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | तब्बसुम | मासिक आय | 3 हजार रूपए |
| पता/मो0 | रामपुर, उ0प्र0 | टर्न-ओवर | |
| कार्य | हाथ की कढ़ाई | | |

आज के विकसित होते भारत का एक सच मलिन बस्ती, चौराहों पर भीख मांगने को मजबूर मूलभूत सुविधाओं के लिये संघर्ष करता भारतीय भी है।

चौराहों, बाजारों, मॉल और भीड़-भाड़ वाले इलाको में हाथ में बच्चा पकड़े आपसे कुछ पैसों की उम्मीद में आपका पीछा कर हाथ पसारे महिलाओं को आप ने अक्सर देखा होगा। इनके प्रति हमारी अलग-अलग धारणा हो सकती है। पर सच ये है कि हर व्यक्ति अपने स्वाभीमान के साथ जीना चाहता है।

एक बेहतर जिन्दगी का सपना लिए तब्बसुम भी शादी कर तिनका-तिनका जोड़कर आगे बढ़ रही थी। जल्द ही घर बच्चों की किलकारियों से रोशन भी हो गया मगर नियती को शायद कुछ और ही मन्जूर था। पति की मौत से तब्बसूम की जिन्दगी मानो पल भर में बिखर गई। छोटे बच्चे को कन्धों पर रख कर वह दर-दर की ठोकर खाने को मजबूर हो गई। कोई काम न मिलने पर भीख मागने को लाचार तब्बसूम मानों जिन्दगी

को ढो रही थी।

संस्थान द्वारा राष्ट्रीय पिछड़ावर्ग वित्त एवं विकास निगम, के साथ संयुक्त रूप से उत्तर प्रदेश के रामपुर में भिक्षावृत्ति के उन्मूलन की दिशा में कौशल परक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन हेतु भिक्षावृति कर रहे कुछ लोगों को चयनित किया। जिसमें एक नाम तब्बसुम का भी था।

हाथ की कढ़ाई कार्य के साथ स्वावलम्बन से जीने का हुनर भी तब्बसुम ने सीखा, आज वह 3000 रू0 मासिक की आय के साथ अपने जीवन की दिशा मोड़ रही है।

वह कहती है, मांगने और कमाने के बीच एक बड़ा अन्तर है और वो अन्तर आप में आगे बढ़ने की भावनाओं को जागृत करता है।

हालातों से लड़कर आगे बढ़ने वाली तब्बसुम जैसे उद्यमी विचारधारा के लोगों को संस्थान सदैव प्रोत्साहित कर सहयोग प्रदान करता है।

तब्बसुम कहती है आने वाला कल कैसा होगा। ये हम कह नहीं सकते पर अपने आज से उसके सुखद होने की सम्भावनाओं को सींच जरूर सकते हैं।

# निर्भरता से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | यशोदा यादव | मासिक आय | 35 हजार रूपए |
| पता/मो0 | गाजियाबाद, उ0प्र0 | टर्न-ओवर | 6 लाख रूपए |
| कार्य | सिलाई एवं ब्यूटीशियन | | |

हमें अक्सर बताया जाता है कि ज्ञान शक्ति है लेकिन यह पूर्ण रूप से असलियत नहीं है, ज्ञान तो महज जानकारी है, ज्ञान में शक्ति बनने की क्षमता है और यह तभी शक्ति बनती है जब इसका इस्तेमाल किया जाता है।

अगर कोई व्यक्ति यह ठान लेता है कि उसे यह कार्य करना है और वह उस कार्य को पूर्ण करने के लिए हर संभव प्रयास करता है तो वह निश्चित ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। जो लोग कामयाबी के शिखर पर पहुँचते हैं वे अपना कार्य सुनियोजित तरीके से करते हैं। उनके कार्य में लगन और कार्य के प्रति के उनके समर्पण भाव देखने को मिलते हैं।

अपने बच्चों को प्यार देना, उनकी ख्वाइशों को पूरा करना हर माँ-बाप चाहते हैं और हर माँ-बाप इस कर्तव्य को निभाते हैं पर अच्छे संस्कार देना भी माँ-बाप का परम कर्तव्य है।

इसी प्रकार हरियाणा राज्य के अम्बाला जिला में रहने वाले यशोदा के पिता श्री माता प्रसाद ने भी अपने बच्चों को पढ़ाया लिखाया और समाज में अपने पैरों पर खड़ा होने योग्य बनाया। यशोदा के पिता विद्युत एवं जल विभाग में सतर्कता अधिकारी के पद पर कार्यरत थे। घर की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ थी। तीन भाई-बहनों में सबसे बड़ी यशोदा ने स्नातक की पढ़ाई के पश्चात् आई.टी.आई. से तीन वर्षीय ब्यूटीशियन का कोर्स किया। यशोदा की उम्र शादी के लायक देख पिता को चिंता होने लगी और उसके लिए एक योग्य वर और अच्छा खानदान खोजने लगे। खोजबीन के बाद एक अच्छा खानदान और

योग्य वर मिला।

पिता ने अपनी बेटी की शादी कला एन्कलेव, गाजियाबाद निवासी श्री कमलेष कुमार से बहुत धूमधाम से सम्पन्न कराई। यशोदा मन में नई जिंदगी जीने की उमंग लिए दुल्हन बनकर अपने ससुराल चली गयी। पति दैनिक जागरण समाचार पत्रिका में अच्छे पद पर कार्यरत तथा घर के आर्थिक हालात अच्छे थे। यशोदा अपने प्रशिक्षण और ज्ञान ( ब्यूटीशियन ) के माध्यम से नौकरी करना चाहती थी। पति इसके सख्त खिलाफ थे। दो बेटियों के जन्म से घर का आंगन चहकने लगा।

जीवन साईकिल चलाने जैसा है यदि आपने पैडल मारना बंद किया तो गिरने की स्थिति बन जाती हैं। जिस प्रकार रूके हुए पानी में काई लगने लगती है उसी प्रकार ठहरे हुए जीवन में भी काई लगने लगती है। अभ्यास न करने के कारण यशोदा का आत्मविश्वास डगमगाने लगा एवं यशोदा ने जो कुछ प्रशिक्षण के दौरान सीखा था उसे वह भूलने लगी।

एक दिन राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान ( निसबड ), नोएडा ( उ0प्र0 ) द्वारा समचार पत्रिका में नि:शुल्क त्रिमासिक ब्यूटीशियन एवं फैशन डिजाईनिंग विज्ञापन दिया। जीवन में कठिन फैसले लेने से मत डरो क्योंकि जीवन में कुछ सख्त फैसले लेने पड़ते हैं और यही जीवन का रूख बदल देते हैं। इसी विचारधारा के साथ विज्ञापन देख यशोदा ने पति से अनुमति ली और निसबड, संस्थान आकर इन कार्यक्रमों के लिए अपना नाम अंकित करवाया। पाठ्यक्रम पूर्ण करने के उपरान्त उद्यमिता विकास कार्यक्रम में भाग लेकर उद्यमिता गुण, उद्यमी की भूमिका एवं कार्य का ज्ञान प्राप्त किया।

कभी भी जीवन पूर्व निर्धारित नहीं हो सकता। सब कुछ वैसा नहीं हो सकता जैसा आप चाहते हैं। फिर एक दिन अचानक यशोदा के पति की नौकरी छूट गयी। सब कुछ पीछे छूटता हुआ नजर आने लगा और उनकी आर्थिक स्थिति में गिरावट आने लगी। उस संकट की घड़ी में यशोदा ने पति को हिम्मत दी और खर्च चलाने के लिए घर पर ही बच्चों को ब्यूटीशियन एवं सिलाई सिखाने लगी। धीरे-धीरे बच्चों की संख्या बढ़ने लगी तथा आर्थिक स्थिति में मजबूती आई। यशोदा की मेहनत और लगन देख उसके पति भी उसका पूर्ण सहयोग करने लगे। यह देख यशोदा का मनोबल बढ़ने लगा और फिर से उसमें एक नई जीवन की शुरूआत करने की उम्मीद जगी।

धीरे धीरे यशोदा ने अपने कार्य को आगे बढ़ाया और आज वह वेब ट्रेनिंग के नाम से सेंटर चलाती है जिसे चलाने के लिए वह दिन रात मेहनत करने लगी। आज यशोदा उस शिखर तक पहुँच चुकी है जहाँ पहुँचकर उसे आत्मसन्तुष्टि प्राप्त होती है। इन सबका श्रेय वह निसबड संस्थान को देती है। आज यशोदा अन्य संस्थानों में मास्टर ट्रेनर बनकर अन्य संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रतिभागियों को प्रशिक्षण भी देती है। जिससे वह और उसका पति गौरवान्वित महसूस करते हैं।

# भिक्षावृत्ति पर प्रहार : हिना

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | तब्बसुम | मासिक आय | 3 हजार रूपए |
| पता/मो0 | रामपुर, उ0प्र0 | टर्न-ओवर | |
| कार्य | हाथ की कढ़ाई | | |

दो वक्त की रोटी के लिये किसी के आगे हाथ फैलाना अपने-आप में अपने जमीर को मारने जैसा लगता है। लेकिन ये किसी से छुपा नहीं है कि भिक्षावृत्ति के उदाहरण अक्सर सड़क किनारे, धार्मिक स्थलों के आस-पास या चौक-चौराहों पर दिख जाते हैं। एक संजीदा नागरिक के रूप में आपके मन में भी ये सवाल उठ सकता है कि क्या भीख मांग रहे ये लोग अपनी विवशता के कारण ऐसी हालत में हैं या फिर ये किसी साजिश के शिकार हैं। गरीबी, भुखमरी तथा आय की असमानताओं के चलते देश में एक वर्ग ऐसा भी है, जिसे भोजन, कपड़ा और आवास जैसी आधारभूत सुविधाएँ भी प्राप्त नहीं हो पाती। यह वर्ग कई बार मजबूर होकर भीख मांगने का विकल्प अपना लेता है।

कई बार मनुष्य अपनी स्थिति को बदलने की सोचता है परन्तु वह सही समय का इन्तजार करता है और इसी समय के इन्तजार में उसकी स्थिति बद से बदतर तक भी पहुँच जाती है। परन्तु सत्य तो यह है कि दुनिया में आपको कोई नहीं बदल सकता अपितु आपको खुद ही बदलना पड़ता है। इन्ही कुछ उच्च विचारधारा के साथ हिना ने अपनी असफलता को सफलता में बदला।

हिना का जन्म आर्थिक रूप से कमजोर या यूँ कहें की गरीब परिवार में हुआ। हिना का बचपन अपने माता-पिता के सानिध्य में बड़े ही लाड़-प्यार के साथ बीता। हिना के माता-पिता दूसरों के घरों में साफ-सफाई का कार्य करते थे जिससे उनके परिवार का गुजर-बसर होता था। स्थायी नौकरी न होने के कारण कई बार दूसरों के सामने हाथ फैलाने को भी मजबूर हो गए। अपनी आर्थिक स्थिति व समय के चक्र के साथ बड़ी होती बेटी की शादी की चिंता सताने लगी। गरीबी के बावजूद हिना ने अपनी प्रारम्भिक

शिक्षा प्राप्त की। हर माँ-बाप का सपना होता है कि अपने जीते जी बेटी को परी की तरह डोली में विदा करे। माँ-बाप मेहनत की गाढ़ी कमाई जोड़ बेटी का विवाह श्री ज़मील से सम्पन्न करा दिया। फिर दौर शुरू हुआ जिम्मेदारियों को निर्वहन करने का।

हिना ने भी विवाह पश्चात् और लड़कियों की तरह कुछ सपने संजोए थे। हिना के पति बीड़ी फैक्टरी में कार्य कर परिवार का गुजर बसर कर रहे थे। परिवार हंसी-खुशी से चल रहा था। परन्तु नियति ने तो शायद उसके लिए कुछ और ही सोच रखा था। पति एवं माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् उसका हंसता-खेलता परिवार वीरान हो गया। हिना के जीवन में मानो पहाड़ सा टूट गया। उसके जीवन में मानो अंधेरा ही अंधेरा छा गया हो।

रहने का एकमात्र सहारा भी छूट गया। उसको कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि आगे कैसे और क्या करे? ऐसे में उसे मात्र एक सहारा नजर आया जो कि उसके मामा जी थे।

मामा जी के साथ मजबूरन रामपुर (उ0प्र0) की एक मलीन बस्ती में रहने लगी। जो कि भिक्षावृत्ति का कार्य करते थे। संग्रहण करने वाली टीम के एक सदस्य से उसके बारे में पता चला फिर हिना से व्यक्तिगत रूप से जाकर मिले वह बहुत खराब और गंदी एवं मैली कुचैली स्थिति में थी। उसके मामा जी भी भिक्षावृत्ति के कार्य में जुड़े हुए थे।

हिना भी अपने मामा के साथ मिलकर भिक्षावृत्ति करने लगी। जब हिना के मामा को एनबीसीएफडीसी एवं निसबड के सहयोग द्वारा चलाये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में बताया गया परन्तु उन्होंने अपनी गरीबी और बदहाली की स्थिति को देखते हुए साफ-साफ मना कर दिया। शायद हिना के मामा अपने इस कार्य से सन्तुष्ट थे या उन्हें इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कोई उम्मीद की किरण नजर नहीं आई।

परन्तु शायद हिना के मन में इस योजना के बारे में सुनकर कोई उम्मीद की किरण जागी होगी। लोगों से मांगना और उनकी दुत्कार सुनने से भी छुटकारा मिलने का मार्ग दिखा। इस योजना में वजीफा/मानदेय राशि मिलने वाली बात शायद हिना को घर कर गई और उसने हिना को इतना प्रेरित किया जिससे वह इस योजना से जुड़ने और प्रशिक्षण कार्यक्रम करने को तैयार हो गई और हिना ने अपने मामा को भी इस हेतु मना लिया। जिससे उन्होंने भी हिना को प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए अनुमति दे दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम समाप्त करने के पश्चात् हिना विनायक इण्टरप्राइसेस से कार्य करती है और प्रतिमाह 3250/-रू0 तक कमा लेती है और इस सबके लिए वह एनबीसीएफडीसी एवं निसबड और वहाँ के स्थानीय संस्थान को धन्यवाद देती है जिस कारण उसकी जिन्दगी में बदलाव आया और वह अपने जीवन को एक नई ऊँचाइयों तक पहुँचा सकी। और आज हिना अपने लिए गौरवान्वित तो महसूस करती ही है अपितु वह दूसरे ऐसे लोगों के लिए भी प्रेरणादायक है जो लाचारी एवं मजबूरी की जिन्दगी जी रहे हैं।

# हुनर, हौसला और नाज़िया

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | नाजिया | मासिक आय | 3250 रूपए |
| पता/मो0 | रामपुर, उ0प्र0 | टर्न-ओवर | |
| कार्य | हाथ की कढ़ाई | | |

विवाह संस्कार में कन्यादान को पवित्र एवं मांगलिक कार्य माना जाता है। इस अवसर पर कन्या के माता पिता अपनी हैसियत के मुताबिक कुछ धन या उपहार देते हैं। यही दहेज प्रथा धीरे-धीरे विकृत स्थिति में पहुँच गई। इसी का परिणाम था कि लोग बेटी के जन्म को भार मानने लग गये और यह सोच कर उनका बालपन में ही विवाह कराने के पश्चात अपने को इस जिम्मेदारी से मुक्त कर लेते थे। मगर इस गलत परम्परा ने कालान्तर में अनेकों बुराइयां को जन्म दिया। इसी कुरीति के चलते खेलने कूदने के दिनों में बच्चों का जीवन जिम्मेदारियों में जकड़ जाता था।

यह सोचकर बड़ा अजीब लगता है कि भारत जो अपने आप में एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है उसमें आज भी एक ऐसी कुरीतियाँ जिन्दा है जो हमारे समाज को पनपने नहीं दे रही है। एक ऐसी कुरीति जिसमें दो अपरिपक्व लोगों को जो आपस में बिलकुल अनजान हैं उन्हें जबरन जिन्दगी भर साथ रहने के लिए एक बंधन में बांध दिया जाता है और वे दो अपरिपक्व बालक शायद पूरी जिन्दगी भर इस कुरीति से उनके उपर हुए अत्याचार से उभर नहीं पाते हैं और बाद में स्थितियाँ बिल्कुल खराब हो जाती है और नतीजे तलाक और मृत्यु तक पहुंच जाते हैं। बाल विवाह के केवल दुश्परिणाम ही होते हैं। कुछ ऐसी ही कहानी है नाजिया की-

नाजिया के माता-पिता फेरी लगाकर, कभी

मजदूरी कर और कभी लोगों से मदद माँगकर जीवनयापन करते थे। गरीब परिवार में जन्मी नाजिया की पढ़ाई के प्रति लगन देखकर जैसे-तैसे उसके माता-पिता ने प्रारंभिक शिक्षा दिलाई। लेकिन आर्थिक विवशता के कारणवश यह ज्यादा नहीं पढ़ सकी। बाल्यवस्था में ही इनका विवाह इमरान से हो गया। कुछ समय पश्चात इमरान भी नाजिया को इस दुनिया में अकेला कर दो बच्चों की जिम्मेदारी के साथ छोड़ गये। ऐसी परिस्थिति में इनकी मदद इनके पड़ोसियों और रिश्तेदारों ने की। वह अपने पड़ोसियों के साथ मिलकर मुश्किल से कुछ कमाती थी और अपना और अपने बच्चों का पेट भरने लगी।

नाजिया के पड़ोसियों ने जब इस कार्यक्रम के बारे में पढ़ा तो उनके पड़ोसियों ने संस्थान निसबड से सम्पर्क किया और संस्थान में आकर उन्होने नाजिया के बारे में बताया। तब उनकी बस्ती में संग्रहण करने वाली टीम गयी और उनसे सम्पर्क किया। संग्रहण टीम ने जब उन्हें इस योजना के विषय में बताया तो नाजिया बोलने लगी कि आप लोग झूठ तो नहीं बोल रहे हो। क्योंकि इस तरह का काम ( माँगने ) करने वाले ये लोग शायद प्रत्येक व्यक्ति के प्रति एक बुरा अनुभव रखते है। कुछ ऐसे कड़वे अनुभव के साथ नाजिया ने कुछ खास प्रतिक्रिया नहीं दी ।

नाजिया के मन में काफी हद तक नकारात्मक विचार आ रहे थे। वह लगातार यही सोच रही थी कि कोई हमें क्यों प्रशिक्षण और पैसे ( Stipend ) भी देगा। हमने नाजिया को उसके पड़ोसियों के साथ मिलकर अपने संस्थान में बुलवाया और विभिन्न योजनाओं के बारे में संस्थान में प्रशिक्षण ग्रहण करने वाले प्रतिभागियों से वार्ता करवायी कि आप लोगों को मानदेय/वजीफा राशि मिली या नहीं जानकारी प्राप्त करने के बाद वह संतुष्ट हुई और प्रशिक्षण कार्यक्रम करने के लिए संस्थान में दाखिला लिया। नाजिया को इस कार्यक्रम के दौरान अपने बच्चों को लाने की भी अनुमति दे दी। प्रशिक्षण समाप्त करने के पश्चात आज नाजिया प्रतिमाह रू0 3250/- प्रतिमाह धनार्जन करती है।

नाजिया आज अपने आप को पूर्ण रूप से तो नहीं परन्तु काफी हद तक सन्तुष्ट पाती है और कहती भी है कि बाल विवाह जैसी कुरीती को समाज से हटाना चाहिए जिससे किसी और का बचपन उनसे ना छिन सके एवं वह अपने आपको अपने पैरों पर खड़ा कर सके।

# धागों से बुने सपने

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाम | मोइना | मासिक आय | 3500 रूपए |
| पता/मो0 | रामपुर, उ0प्र0 | टर्न-ओवर | |
| कार्य | हाथ की कढ़ाई | | |

कोई भी व्यक्ति जब भी प्रार्थना करता है, तो यह कामना उसके भीतर जरूर रहती है कि वह दिन कभी न आए, जब किसी के सामने हाथ फैलाना पड़े। हाथ फैलाए खड़े व्यक्ति के भीतर न आत्म सम्मान रह पाता है और न ही जीवन को सही ढ़ंग से जी पाने की इच्छा।

हाथ फैलाए खड़े ऐसे बच्चे, महिलाएँ और पुरूष बड़ी संख्या में सड़कों, रास्तों, चौराहों, रेलवे स्टेशनों, बस-अड्डों, पर्यटन स्थलों और धार्मिक स्थानों पर, लोगों के सामने झुकते और गिडगिड़ाते हुए, भीख मांगते दिखाई देते हैं। किसी भी समाज के लिए यह अच्छी स्थिति नहीं है कि उसके कुछ लोग, अपनी भूख शांत करने तक के लिए, भिक्षा-वृत्ति करने को मजबूर हो जाएँ। भिक्षावृत्ति एक अभिशाप है जो अन्दर ही अन्दर समाज को दीमक की तरह खोखला कर रही है।

जिन्दगी की आपाधापी में हर कोई अपने कार्यकलापों में व्यस्त हैं व इसी के चलते वे अपने नाते रिश्तेदारों से भी दूर होते जा रहे है। ऐसे में अगर कोई परिचित साथ भी देना चाहे तो उसकी व्यस्तता उसे सामने नहीं आने देती। इस दुनिया में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो विपरीत परिस्थिति पड़ने पर साथ देना तो छोड़ो सामने तक नहीं आते। ऐसी ही कुछ परिस्थितियों का सामना करना पड़ा मोइना को।

मोइना ने बाल्यकाल में ही अपने माता-पिता को खो दिया था। उसके परिवार में 6 बहिनें और एक भाई है। शुरूआती जीवन में ही माता-पिता को खोने के पश्चात् उनके ऊपर आर्थिक तंगी आ

गयी। होश संभालने से पहले उसने हाथ फैलाना सीख लिया था। एकमात्र भाई षहाब ने बीड़ी की कम्पनी में काम कर अपनी बहनों को प्रारम्भिक शिक्षा दिलवाई।

हमारे समाज में भिक्षावृत्ति को बुरा समझा जाता है लेकिन फिर भी हमारे समाज के कुछ लोग मजबूरी वश इस कार्य से जुड़ रहे हैं तथा कुछ लोग दूसरों की मजबूरी का फायदा उठा कर उनको इस कार्य से जोड़ रहे हैं।

वहीं समाज के कुछ संस्थान ऐसे भी हैं जो भिक्षावृत्ति को खत्म करने का बीड़ा उठाए हुए हैं। ऐसी ही भिक्षावृत्ति में संलिप्त लोगों का भविष्य सुधारने के लिए संस्थान द्वारा राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम के संयुक्त सहयोग से रामपुर, उत्तर प्रदेश में कौशल उन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसके लिए मोइना को भी चयनित किया गया। चयनित होने के पश्चात् मोइना ने अपना प्रशिक्षण पूर्ण किया और आज मोइना की आमदनी रू0 3500/- प्रतिमाह है और अच्छा खासा जीवन बिता रही है।

आज मोइना अपने अतीत को याद करते हुए बताती हैं कि भिक्षावृत्ति एक अभिशाप है और हमारे समाज से इसको हटाना ही चाहिए जिससे दूसरे लोगों का जीवन नरक न बन सके।

सत्यमेव जयते
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF SKILL DEVELOPMENT
& ENTREPRENEURSHIP

उद्यमिता एवम कौशल विकास मंत्रालय, भारत सरकार


**राष्ट्रीय उद्यमिता एवम लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड)**

**मुख्य कार्यालय:** ए-23. सेक्टर-62, इंस्टिट्यूशनल एरिया, नौएडा- 201309 (उ0प्र0), भारत

**क्षेत्रीय कार्यालय: एन0एस0टी0आई परिसर, ग्रीन पार्क कालोनी, निरंजनपुर, देहरादून**
**फोन नं– 0135– 2629802, फैक्स नं– 0135–2629802**
**ईमेल–** roniesbud@gmail.com **वेबसाईट –** niesbudro.org

**मूल्य:** ₹ 500/-